मुनिश्री मयाविजयजीकृत

आत्मप्रबोधस्याद्वादग्रंथ

आ पुस्तकने

श्रीभरुअच बंदर मांहेला वेजलपुरना

रहेवासी श्रावकना श्रीसंघें मली.

ज्ञानवृद्धिने अर्थे

श्रीमोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं.

संवत् १९४५ सने १८८९

प्रस्तावना. .

आ ग्रंथ ठापी प्रसिद्धतामां मूकतां अमें सर्व जैनभाइ योने सविनय प्रार्थना करियें छैयें के जैनधर्मी केटलाएक बालजीवोने समजवामां आवे, तेवा विषयो आपुस्तकमां दाखल करेला छे, माटे जें वांचनार साहेबो, आमां समावेलां तत्त्वोनुं विचार पूर्वक पोताना चित्तमां रमण करशे, ते सज्जनो मोक्षनो कारण रूप जे स्याद्वाद मार्ग छे, ते सुखें करी समजी शकशे. एम समजी अमारा जैनीभाइयोना उपकारने अर्थें आ पुस्तक अमोयें छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.

॥ ग्रंथ कर्तुराशयविज्ञप्तिः ॥

॥ पूर्वें श्रीतीर्थंकर, गणधर, सुविहित आचार्यादिक महामुनियोना रचेला ग्रंथोनो आशय अत्यंत गंभीर होवाथी तेमना कथननो एक देश मात्र आशय पामीने में महारी अल्पबुद्धिने अनुसारें गुरु कृपाथी आ ग्रंथ लख्यो छे. तेमां विपर्यास पणे श्रीजिनवचनथी विरुद्ध जे कांइ महाराथी लखायुं होय, ते हें सुज्ञो ! तमें महारी उपर कृपा करी सुनजर पूर्वक सुधारी वांचशो. एवी महारी विज्ञप्ति छे ते स्वीकारशो.

अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ अथ ॥

॥ मुनि श्रीमयाविजयजी विरत आत्म प्रबोध स्याद्वाद ग्रंथस्य प्रथमोल्लासः ॥

तन्मध्ये प्रथम

॥ आत्मबोध बत्रीशी प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद आनंद नर, पूरण आतम राम ॥ राग द्वेष जाकूं नही, ताकूं करिय प्रणाम ॥ १ ॥ आत्मबोध मुक्तावली, रचना रचशुं तेह ॥ जे नर कंठें उर धरे, तजे राग ने रेह ॥ २ ॥ राग द्वेष नवमूल हे, जन्म मरन जंजाल ॥ जो परमातम पद चहे, राग द्वेषकूं टाल ॥ ३ ॥ राग द्वेष गये बिना, विरथा व्रत पचखाण ॥ शुभ अशुभ दो बंध हे, प्रवचन भाषित जान ॥ ॥ ४ ॥ ते कारण भवि प्राणि तुं, तजी राग ने द्वेष ॥ परमातम पद साधि ले, तजि दे कायकिलेश ॥ ५ ॥ को कहे काय किलेशथी, मुक्ति लहे मुनिराय ॥ मिथ्या भाषण ते लवे, भरत न मुक्तें जाय ॥ ६ ॥ केइ कहे माहाव्रतथकी, मुक्ति होय ततकाल ॥ अ

ोग्य किम पामे नही, पंच माहाव्रत पाल ॥ ७ ॥

॥ सवैया त्रेवीशा ॥

॥ केइ कहे व्रत नीम धरे अरु, थानक वीशको से
वन कीजें ॥ ता विन तीर्थपती नही होवत, सो एकं
त वचन्न पतीजें ॥ श्रीलुगडंग मिथ्यात कहे अरु, श्रे
णिक तीर्थपती किम कीजें ॥ जोग असंख्य कहे जि
न आगम, स्यादवाद रस ध्यानमें लीजें ॥८॥

॥ अथ शिष्यप्रश्न ॥

॥ शिष्य कहे प्रनु बात यथारथ, आप कही मन
संशय ऐसें॥जीव निगोद वसे इह लोगमें,राग न द्वेप न
देखत तैसें ॥ सो जीव कर्म रहीत कहो तव, सिद्ध
स्वरूप निगोद न ऐसें ॥ शिष्य संदेह निवारन कारन,
बात यथारथ कहे गुरुरैसें ॥ ए ॥

॥ अथ गुरु उत्तरकथन सवैया एकत्रीशा ॥

॥ गुरु कहे वानी जनि, प्रानी ए सिद्धांत कानी,
समजी न शैली तव, संसे मन मांही है ॥ अगारह
पाप थान, सर्व जीव राशिमांहि, रात दिन लागी रहै,
मिथ्यादृष्टि पाही है ॥ चैतन सगति सत्ता, ग्यानी गु
प चुप मांही, रागादि प्रगट रूप, त्रसपणुं जाही है ॥
जैसें निरबिख बीज, अमलकी उतपति, बीजमांहि

बीपनांही, नास नही मानी है ॥ १० ॥ जेसें बाल
स्त्रिया रूप, हाव भाव दीसे नाही, जोबन स्वरूप पा
इ, विषेबाण भूर है ॥ जेसें इक्षु बीज मांही, भासे न
मधुर रस, गुल खांम मधुरता, इक्षुरस पूर है ॥ तैसें
मिथ्या गुन स्थान, जिहां लों तिहां लों सूधी, लगे पाप
पुण्य जिहां, रागादि जरूर है ॥ शुभराग गौतमकुं, केव
ल स्वरूप वारे, तातें गये राग द्वेष, मुगति हजूर है॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइ कहे त्रण जोगशुं, कर्मबंध दृढ होइ ॥ क
हे कोइ अव्रत कषायशुं, बंध करे नर सोइ ॥ १२॥ स्या
दवाद समजे नही, जिनशासनको मर्म ॥ रागादी
मिथ्यात बिन, बंधे न कोऊ कर्म ॥ १३ ॥

॥ सवैया त्रेवीशा ॥

॥ शिष्य कहे प्रभु केवल ग्यानमें, अव्रत योग क
षाय न ईसे ॥ शिष्य संदेह निवारन कारन, कहे गुरु
केवलि योगमें दीसे ॥ इंडी आहार निहार करे तोइ,
राग रहित परपिंम्ड जे ग्रासे ॥ तातें अवश्य कह्यो
जिन आगम, राग द्वेष जीउ कर्म बंधासें ॥ १४ ॥

॥ सवैया एकत्रीशा ॥

॥ कोउ कहे मन ए, करम बंधको उपाय, एही

है एकंत बात, मन न पतिजीयें ॥ थावर असन्नी पण, इंदीकुं तो मन नांही, समे समे बंधे सो, सिद्धंत साख दीजियें ॥ मन जोग पुदगल, जड अनुयाइ योग, रागादि पयोग जीव, लखन बखानीयें ॥ करता न होय तब, बंधे न करम कोउ, एही साची शीख गुरु, बचन प्रमानीयें ॥ १५ ॥ केइ कहे बचनछुं, शुभाशुभ कर्म होय, जाने न बचन योग, केवली पर्यंत है ॥ प्रश्नचंद राजऋषि, काय योग थिर करी, पर्यो राग द्वेष नर्क, बंधकुं धरत है ॥ राग द्वेष गयो तब, केवल प्रगट भयो, तातें कर्मबंध एक, रागादि करत है ॥ त्रिकरण योग केइ, कहे कर्मबंध होत, एहही एकंत मत, मूरख धरत है ॥ १६ ॥ त्रिकरण योग बंध, कीजें तो शंकर दोष, थावर असन्नी कर्म, बंध नांहि चाहीयें ॥ केइ कहे शुभाशुभ, आचरण कर्मबंध, भरतादि तदभव, मुगति उपाइयें ॥ शुभाशुभ बंध फल, एकहु न दीसे कोउ, एसो समकित गुन, महातम बखानीयें ॥ तैसें समकित वंत, राग द्वेष मोह बिनु, भुंजे पूर्व कर्म नव, बंध नही जानीयें ॥ १७ ॥ तातें समकित बिन, शुभाशुभ कर्म फल, ऐसो द्वैत भाव ज्ञान, दृष्टिमें न लेखीयें ॥ ग्रंथ रचे व्रत धरे,

लोचादि कलेश करे, वहे मुनि जार तोहि, दुष्ट गति देखीयें ॥ जोगशुं न बंधे जीव, जोगशुं न बंधे जीव, बंधे एक रागादि, अशुद्ध उपयोगशुं ॥ कालिकाचार्य रज विष्णु, कुमारादि माहामुनि, हणिया नमूचि आदि, त्रिकरण जोगशुं ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तोही कर्म न बंधियो, त्रिकरण योगें एह ॥
शांति कुंथु अर जिनवरा, खट खंम साध्या जेह ॥
॥ १९ ॥ तेह शास्त्र दीसे नही, कर्म बंध अधिकार ॥
ते कारण नवि प्राणी तुं, स्यादवाद मन धार ॥ २० ॥

॥ सवैया त्रेवीशा ॥

॥ केइ कहे परिग्रहके त्यागसें, मुक्ति महामुनि पावत वैसें ॥ सोय एकंत मिथ्यात वदे अरु, स्याद वाद समजे नही तैसें ॥ पणदस नेद कहे जिन सि द्धके, नरतादि गृही लिंगने वेशें ॥ सिद्ध अनंत नये जिम केवल, स्वपर विवेचन करत विशेषें ॥ २१ ॥

॥ छंद भुजंगी ॥

॥ छके लोक कीरत्तके व्रत्त धारे, करे कष्ट किरि या आहार दोष वारे॥नणे सार सिद्धांत ममत्व नारे, रमे राग द्वेषें तेह केम तारे ॥ २२ ॥ नरे नार चंदन

खर पंथें चाले, नहि चंदना स्पर्श जव तेह साले ॥ तेही मूर्ख पंमितता मन्न माने, नही अक्षरा अर्थ न थणें निहाले ॥ २३ ॥ जिम अंग रूपंग दीसे ठे रू डां, एके नाक वीना कहियें सर्व कूडां ॥ लिखे अग्नि पत्रें नही कोश जाले, अणू साच अग्नी कोश सर्व बाले ॥ २४ ॥ पद पक्षीनो खोज आकाश चाले, तेह पक्षिपद अंबर ते न जाले ॥ आपें आप जूजी पररू प ध्यावे, करे बाह्य किरिया मूलरूप नावे ॥ २५ ॥ तातें ग्यान किरिया दोइ शुद्ध जानो, सापेक्ष किरिया सुव्यवहार मानो ॥ जेणें आत्मरूपें प्रजूने पिछा न्यो, तेणें लोक अलोकनो जाव जाण्यो ॥ २६ ॥ जे णें आत्मगुण रमण देशें न जान्यो, मुनीवेश वृथा ते सिद्धांत मान्यो ॥ होलि पर्व राजा तेवो वेश जा णो, बूडे सायरें नाव जे होय काणो ॥ २७ ॥ करे ध्यान इंडी वशीजूत राखे, पाले जीव दया मुखे स त्य जाखे ॥ तजे दान अदत्त मैथुन्न त्यागे, परिग्रह प्रसंग नवि चित्त राखे ॥ २८ ॥ जंधे मूख फूले पंच अ ग्नि सेवे, उदासी होइ रामनुं नाम लेवे ॥ जटाधारी केइ केइ दाढि राखे, दीये बांग त्रणकाल रहेमान जाखे ॥ २९ ॥ करता करम क्रीया शास्त्रें प्रमानो,

जाने न करता महामूर्ख मानो ॥ जडभाव करता जेह धर्म माने, शुद्धानंद चिद्रूपता केम जाने ॥३०॥ महाज्वर प्रवेश त्रीदोष व्यापे, भूंजे न भोजन्न जन तत्त लापे ॥ करे कर्म किरिया करता न जाणे, भणी शास्त्र सिद्धांत अभिमान आणे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोउ पुत्र परणाववा, जान सजी चतुरंग ॥ कन्यानो निरणय नही, संकर दोष प्रसंग ॥ ३२ ॥ प्रथम संबंध तिलक करे, पश्चात् वरवा जाय ॥ ते संबंध युक्ती कही, शिवनारी वर थाय ॥ ३३ ॥ समकित तिलक करो भवि, पश्चात् किरिया सार ॥ समकित तिलक विना नही, शिवनारी श्रीकार ॥ ३४ ॥ आत्मबत्रीशी ए कही, आतमबोध प्रकाश ॥ जे नर कंठें उर धरे, ते पामे शिववास ॥ ३५ ॥ सौभाग्य विजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविजय मन मोदशुं, राग द्वेष मिट जाय ॥ ३६ ॥ इति श्री आत्मप्रबोध बत्रीशी समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीज्ञान बत्रीशी प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सतचिद ने आनंदमय, चिदानंद भगवान ॥ चि

दज्ञान जे जाखियो, ताको कीजें ध्यान ॥ १ ॥ दो वि
ध ज्ञान प्रकाशियो, निश्चें अरु व्यवहार ॥ श्रीजिन
आगमथी लही, पामीजें जवपार ॥ २ ॥ द्रव्यह श्रुत
जणते थके, वीत्यो काल अजान ॥ चउ अनुयोग
प्रकाशिया, सो व्यवहारी ज्ञान ॥ ३ ॥ शुद्धाशुद्ध व्य
वहार दो, जाखे श्रीजिनराय ॥ स्वपर विवेचन ज्यां
नहि, सोही अशुद्ध कहाय ॥ ४ ॥ योग द्रव्याएु जा
नते, स्वपर विवेचन थाय ॥ स्वपर विवेचन बिन न
ही, सादिनंत सुख पाय ॥ ५ ॥ तातें सद्गुरु सेवियें,
करि थिर मन वच काय ॥ ध्येय ध्यान एकत्वता,
जनम मरण दुःख जाय ॥ ६ ॥ गुरु आणा विण जे
क्रिया, फोकट काय किलेश ॥ निर नायक जर सैन्य
ज्युं, जय नवि पावे लेश ॥ ७ ॥ पणदस जेदें सिद्ध
ता, द्रव्य लिंग अधिकार ॥ जावलिंग ए आतमा,
योग युगतिके पार ॥ ८ ॥ आतमज्ञानी श्रमण जे,
सद्गुरु कीजें तेह ॥ ध्यान अजेद एकत्वता, पामे धन
नर जेह ॥ ए ॥ द्रव्य गुण पर्यायमें, वस्तु तत्त्व आ
जास ॥ नय निक्षेप संयुक्त है, आतम गुण परकाश
॥ १० ॥ पर स्वजाव जेहमां नही, द्रव्यह गुण पर्या
य ॥ कंचन कल्प कालांतरें, धातू अन्य न थाय ॥

॥ ११ ॥ नय पर्याय अनंत ते, कल्पित नेद अनंत ॥ नेद रहित ए आतमा, पामे विरला संत ॥ १२ ॥ मिथ्यादृष्टी जे नरा, मुनिवर वेश धरंत ॥ ज्ञान विना आडंबरी, करे नवच्रमण अनंत ॥ १३ ॥ कष्टक्रिया जे ज्ञान बिन, कोलुं बैल ज्युं जान ॥ नमे सदा नव चक्रमां, तेह मूल गुनथान ॥ १४ ॥ कब निर्जरा अकामतें, तरसादिक पद पाय ॥ कबहिंक शुन किरिया थके, देवगतीमें आय ॥ १५ ॥ विषयादि इंद्रिय जनित, रक्त सदा लयलीन ॥ समकित सूर्य बिना नही, बित रजनी होय दीन ॥ १६ ॥ सामायिक सो आतमा, आतम सो समकीत ॥ नगवइ अंगें नाखियो, अन्यग्रंथ ए रीत ॥ १७ ॥ व्यवहारें जे इव्य श्रुत, लोक लोकोत्तर नेद ॥ बहुविध क्रिया कलापतें, मतमत नेद प्रनेद ॥ १८ ॥ आप आप मत मग्न जे, जीव स्वनाव अनेक ॥ नाव श्रुत एकत्वता, सो शिवरूपी नेक ॥ १९ ॥ इव्यलिंगधारी करे, इव्य श्रुत उपदेश ॥ बाल जीव मनरंजनो, सो मिथ्या श्रुत वेश ॥ २० ॥ जिम जमाली प्रमुख मुनि, किरिया शुद्ध करंत ॥ तदनव मुक्ति न पामिया, लिंग अनंत धरंत ॥ २१ ॥ ज्ञानी श्वासोच्वासमां, कठिण करम करे

नाश ॥ क्रोड पूरव अज्ञानमें, करे तप नही सुख वास ॥ २२ ॥ बहुश्रुत अनुजवि दाखीया, ज्ञानी ते निकलंक ॥ बहुश्रुत मत एकत्वता, जेद रहित न व अंक ॥२३॥ कपिलादिक अन्य लिंगमां, करे तप किरिया नेक ॥ किरिया फल पामे सही, नही किरिया सुविशेष ॥ २४ ॥ जे जे अंश स्वरमणमां, ते ते किरिया सत्य ॥ जे परजावें रमणता, ते किरिया छे असत्य ॥ २५ ॥ अनुजव विण जे जे क्रिया, ते सवि पुजल जाल ॥ देश आराधक ए कही, जगवइ अंगें जाल ॥ २६ ॥ ज्ञान गुणें अप्रतिपति, क्रिया प्रतिपाति जेह ॥ नंदीषेण जे महामुनि, महानिशीथें तेह ॥ २७ ॥ वरणादिक पुजल दशा, कर्म वर्गणा जेह ॥ सिद्ध खेत्रमां शाश्वती, सिद्ध न फरसे तेह ॥ ॥ २८ ॥ तातें ज्ञानी कर्मशुं, सदा रहे निरलेप ॥ ऊर्ध्व रहे जलशुं सदा, फरे कमल नही खेप ॥२९॥ श्रीपन्नवणासूत्रमां, कर्मबंध अधिकार ॥ राग द्वेषशुं करत है, अवर न कोउ प्रकार ॥ ३० ॥ राग द्वेष जामें नही, राव रंक समचित्त ॥ तृण मणि सम जाकूं सदा, सद्गुरु सेवो नित्त ॥ ३१ ॥ उपादान ते आतमा, पुजल बाह्य निमित्त ॥ घट मृतिका दृष्टांत ज्युं,

घटमें मृतिका नित्त ॥ ३२ ॥ कारण विण कारज न
ही, चीवर दंम ज्युं चक्र ॥ उपादान करता विना,
कारण सर्वे वक्र ॥ ३३ ॥ एक देखवो जानवो, द्रव्य
सत्तामें एक ॥ पर्यायें उतपात जे, व्यवहार नेद अ
नेक ॥ ३४ ॥ नेदछेद एकत्वता, द्रव्य रमण करे जे
ह ॥ दर्शन ज्ञान चरण विधि, सत्ता आतम तेह ॥
॥ ३५ ॥ सोनाग्यविजय परतापथी, हीरविजय सुप
साय ॥ मयाविजयने ए सदा, जैनागम सुख थाय
॥ ३६ ॥ इति श्रीज्ञान बत्रीशी संपूर्णा ॥ २ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धांतपच्चीशी प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम सिद्ध प्रणमी सदा, कहिशुं सार सिद्धां
त ॥ सिद्ध पार जे पामवो, ते कहियें सिद्धांत ॥ १
॥ द्वादशांगि रचना प्रथम, गणधर नाषित जेह ॥
सूत्र पीस्तालो वर्त्तता, चउ अनुयोगें तेह ॥ २ ॥
ज्ञाता प्रमुख ते जाणियें,धर्मकथा अनुयोग ॥ चंद सू
रपन्नत्तिमां, वे गणितानुयोग ॥ ३ ॥ आचारांगा
दिक कह्या, चरण करण अनुयोग ॥ ए त्रिहुं योग
व्यवहारमां, वरते शुन उपयोग ॥ ४ ॥ सूगडंग अ

नुयोग द्वारमें, योग द्रव्यानु जाण ॥ निश्चय योग ते जाणीयें, आतम द्रव्य पिछान ॥ ५ ॥ निश्चय योग जाण्या विना, ए त्रण योग छे व्यर्थ ॥ स्वपर विवेचन ज्यां नही, न सरे आतम अर्थ ॥ ६ ॥ शिष्य कहे स्वामी तुमें, कह्यो निश्चें एकंत ॥ व्यवहारें वर्त्ते मुनि, गुणठाण तेर प्रयंत ॥ ७ ॥

॥ भुजंगी छंद ॥

॥ कहे सद्गुरू शुद्ध व्यवहार साचो, गछे गछना भेदमां मत्त राचो ॥ गछे गछ ममत्त्व मन चित्त धारे, करे वाद वीवाद रु दोष वारे ॥ ८ ॥ गछे गछ सामाचारी जूजुई छे, कहे सत्य असत्य ते कोण कहे छे ॥ एह भेदना भेदने कोण जाणे, रमे आप रूपें स्यादवाद माने ॥ ए ॥ गयंदने अंधें ज्यां फरस कीधो, एक अंग उपंगने हस्ति लीधो ॥ एकंगी अंगें नही हस्ति जाणो, ऊपंगने अंग ते हस्ति मानो ॥ १० ॥ नदी सर्व न्यारी सायरें समावे, पछी नामनो नाश ते जेम पावे ॥ तेम कल्पित भेद जे धर्म जाणो, तातें सर्व गुण ज्ञान आतम प्रमाणो ॥ ११ ॥ वली भगवई अंगने प्रथम शतकें, सामायिक प्रश्न ते आतम विगतें ॥

ज्ञानादि तप जे करे एह चार, उत्तराध्ययन आत्म ज ए विचार ॥ १२॥ प्रथम ज्ञान ने पछी दया सार जाणो,बोले दशवैकालिक ए प्रमाणो ॥ आचारंग सुग डंग ते एम नाखे, सिद्धंत रस स्वाद ते ज्ञानि चाखे ॥ १३ ॥ आठे आतमा नगवई अंग मानो, उपयोग कषायने द्रव्य जानो ॥ जोग आतमा चउ ए अशुद्ध नाणो, वली शेष चारे शुद्ध नय प्रमाणो ॥ १४ ॥ आदि ज्ञान त्रिहुं वीर्य ए चार कहियें, नव भ्रमणनो जेहथी पार लहियें ॥ जेणें आतमा शुद्धनयें न जा ण्यों, तेणें बाह्य व्यवहारने ज्ञान मान्यो ॥ १५ ॥ जे द्रव्य क्रिरिया छे ते अशुद्ध मानो, जडरूप आत्मा पुण्य पाप जाणो ॥ करे कल्प किरियाने वस्तु न जाणे, नैगमादि नय कल्पित नेद माने ॥ १६ ॥ कहे नाष्य पंचकल्पमां ज्ञान जेने, आधाकर्मि जे आहार न दो ष तेने ॥ उपदेशमाला कहे आत्मरमणें, क्रिया बा ह्यथी हीन ते कहियें श्रमणें ॥ १७॥ द्रव्यें नाव प्र गट निमित्त कीजें, उपादान ते आत्मरमणें रमीजें ॥ निमित्त कारणें नव्यने कार्य सिद्धं, अंतें तांमवुं कार ण कार्य कीधे ॥ १८ ॥ यदा शुद्ध व्यवहारशुं श्रम की जें, तदा मुक्तिनुं सूख सुशीघ्र लीजें ॥ व्यवहार वलि

ए आवश्यक निर्युक्त, रमे स्यादवादें रस तेह मुक्तें ॥ ॥ १ए ॥ कह्यो शुद्ध व्यवहार सिद्धांत साचो, षट् द्रव्य गुण पर्यवें चित्त राचो ॥ तामें पंच जड एक चैतन्य कीजें, नेद नेदशुं चेतना चिन्हि लीजें ॥ २० ॥ उत्पाद व्यय रूप पर्याय जाणो, सत्ता ध्रुव जे द्रव्य अखंम मानो ॥ नंजे नाजन घट व्यय तेह होवे, पण मृत्तिका अखंम जे जगत जोवे ॥ २१ ॥ तातें चरण रू द र्शन ज्ञान रूप, नही सूर्यने किरणमां नेद कूप ॥ अ खंम रूपी माहानंदकारी, नजो सिद्धरूपी महा सु खकारी ॥ २२ ॥ प्रदेश असंख्य आतम कहीजें. प्रदे शें प्रदेशें नंत ज्ञान लीजें ॥ नही नेद आतम परमा त्म जानो, कहे ग्रंथ समतिमां सुबुद्धि मानो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चें अरु व्यवहार दो, कह्या सिद्धांतें सार ॥ स्यादवादमें जे रमे, ते पामे नवपार ॥ २४ ॥ सौना ग्य विजय प्रतापथी, हीरविजय सुखशांत ॥ मयावि जय मन मोदशुं, पावे सार सिद्धांत ॥ २५ ॥ इति श्री सिद्धांत पच्चीशी समाप्ता ॥ इत्यात्मप्रबोधस्याद्वादग्रंथ प्रथमभागे प्रथम आत्मविलासः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवन विलास प्रारंभः ॥

तत्र

॥ प्रथम श्रीसमेत शिखर गिरि स्तवनम् ॥

॥ बाबो रिखव बैठे अलबेले, म्हारो गुलाल मुठी भरकें ॥ ए देशी ॥ फागमां गावानी छे ॥

॥ आज आनंद भयो मोहे सजनी, समेत शिखर नयणें निरख्यो ॥ भाव अपूरव भयो मोहे पूरन, मन वचकाय हिये हरख्यो ॥ आज० ॥ समे० ॥ १ ॥ वीजे टूंके वीश जिनेसर, अगुरु लघु गुन ए फरस्यो ॥ पुरुषादानी पास सामलिया, निरखत नयन अमी बरस्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ २ ॥ लाल गुलाल अबीर उडावो, केसर रंग बन्यो सरखो ॥ ताल मृदंग वेण म्फ बाजत, मधुर ध्वनि गावो हरखो ॥ आ० ॥ स० ॥ ३ ॥ जाड पहाड नदी खलके निझरणां, कोयल शब्द करे वृक्षो ॥ विविध जातिके पुष्प विकसीयां, पूरव पुण्यसें ए पेख्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ ४ ॥ संवत उगणी सडत्तीश वर्षे, फागुण शुदि पंचमी परख्यो ॥ शिखर गिरिवर दरिसन पायो, मयाविजय मन अति हरख्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ इति प्रथम स्तवनम् ॥

॥ अथ द्वितीय वीरजिन स्तवनम् ॥

॥ निर्मल होइ नज ले प्रनु प्यारा, सब संसारमें ए प्रनु न्यारा॥ए देशी॥पावापुरी श्रीवीरजिनेसर,मुक्ति गये पंचमगतिगामी॥सादि अनंत तिहां स्थिति पाये, ज्योतिसें ज्योत महासुखधामी ॥पावा०॥मु०॥ १॥ त्री जे अंश रहित शुचि निर्मल, परम पिंम. अवगाहन स्वामी ॥ दरिसण नाण क्षायिक गुण नावें, लोकालो क ज्ञायक बहु नामी ॥ पा० ॥ मु० ॥ २ ॥ नलि नीगुल्म वैमान समानें, मंदिरमें प्रनु अंतरजामी ॥ कमल पुष्प सर शोना सुंदर, धाम बन्यो जात्री वि शरामी ॥ पा० ॥ मु० ॥ ३ ॥ मगधदेश पावापुर नयरी, शिवनगरीकी ए सेलानी ॥ देखत अतिही आ नंद नयो मोहे, पूरव पुण्यसें ए फरसानी ॥ पा० ॥ मु० ॥ ४ ॥ संवत उगणी सडत्रीश वर्षे, चैत्र शुक ल द्वितिया मन मानी ॥ मयाविजय दरिसन अनिला षा, पूरन नइ आतम सुखदानी ॥ पा० ॥ मु० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय श्रीअंतरिकपारसजिनस्तवनम् ॥

निर्मल होइ नज ले प्रनु प्यारा ॥ ए देशी ॥

॥ पारसजिन तेरो दरिसन पायो, अब में शुद्ध श्रद्धा घर आयो ॥पा०॥ पुरुपादानी तुंहि जिनेसर, अश्वसेन

वामादेको जायो ॥ पार० ॥ अब० ॥१॥ नगरी बनारसी जन्म सोहायो, समेतशिखर गिरि मोक्ष सिधायो ॥ कमठ हठीको मान गुमायो, नागराय धरणिंद बनायो ॥ पा० ॥ अ०॥ २ ॥ लोहधातु कंचन करे पारस, सो पारस मेरे दिलमें न भायो ॥ तुं तो आपस्वरूप बनावे, ए अचरिज मेरे दिलमें आयो ॥ पा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ अंतरीक जिन अंतरजामी, देखत नाथ परम सुख पायो ॥ दक्षिणदेशों अधिक अनोपम, श्री पुर नगरमें धाम सोहायो ॥ पा० ॥ अ० ॥ ४ ॥ संवत् ठंगणी सडत्रीश शालें, माघशुदी तेरश दिन आयो ॥ अंतरीक पारस जिन भेटे, मुनी भया हरखित गुन गायो ॥ पा० ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ चतुर्थ नेमजिनपदं ॥ राग कनडो ॥

॥ कमलसें कमल दियो क्युं गोरी, शिवसुत त्रिया ढांकि क्युं भोरी ॥ कमल० ॥ १ ॥ एक कमल धरनी पर दरसे, कंठमाल क्युं तोरी ॥ हास्य बिनोद शयन सुख नांही, कटिमेखल क्युं ढोरी ॥ कम० ॥ २ ॥ नयनकमल वसुधा पर धारे, शीस लता क्युं मरोरी ॥ मुख तंबोल लाल बिंदी नाहीं, बिसरी सखी किहां जोरी ॥ कम० ॥ ३ ॥ कहत राजिमती प्राण नथा

मो ए, शुद्धबुद्धि लीनी ठगोरी ॥ में भोरी कछु जानत नांहीं, पकस्यो कर नांहिं दोरी ॥ कम० ॥ ४ ॥ प्रान नाथ बिनु प्रान न रहे छिनुं, वृथा जनम गति मोरी ॥ कहत मया परसंग बांधि कें, नेम राजुल भये जोरी ॥ कम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम पदं ॥

॥ जिनंदा तोरि वाणीयें मन मोह्युं, वाणी सुणतां जे भवदुःख खोयुं रे ॥ जिन०॥ ए आंकणी ॥ वाणी मीठी अमृतसार, देई त्रिपदी लेइ गणधार ॥ रचना रचता जे मनोहार, द्वादशांगीने अरथ विचार रे ॥ जि० ॥ वाणि सुणतां० ॥१॥ जेहमां नय निक्षेप प्रमाण, सप्तभंगी रचनाना जाण ॥ द्रव्य गुण पर जायनुं नाण, जेहने ध्याता अक्षय पद भाण रे ॥ जि० ॥ वा० ॥ २ ॥ वाणी चउ अनुजोग प्रमाण, जे छे गुण अनंतनी खाण ॥ समजे भाषा सर्व सुजाण, गुण पांत्रीश वाणी वखाण रे ॥ जि० ॥ वा० ॥ ३ ॥ योजनगामिनी वाणी जेह, राजे चोत्रीश अतिशय तेह ॥ बारे परखदा सुणवा नेह, ए वाणी अमीरस गेह रे ॥ जि० ॥ वा० ॥ ४ ॥ एहिज वाणीने आधार, भविजन पामे भवनो पार ॥ दीये मोह चोरने

मार,मया मुनिने एह आधार रे ॥जि०॥वा०॥५॥इति॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥ पद ठहुं ॥ माहरे तो धूलेवावालो घणुं मोघुं नाम ठे ॥ए देशी॥ राग काफी ॥

॥ म्हारे तो सिद्धगिरिजीना शरणाचुं काम ठे, आदि जिनंद मोयें आतम राम ठे ॥ म्हा० ॥ ए आंकणी ॥ कोइ सेवे काशी कोइ मथुरा बन, कोइ अयोध्या पति समरन राम ठे ॥ म्हा० ॥ आदि० ॥ ॥ १ ॥ स्वयंमुख वीर जिनंद प्रकाश्यो, सिद्ध नंता नंतनुं ए धाम ठे ॥ म० ॥ मनमोहन प्रजु आदि जिनंदा, जगजंतु हितकारी विशराम ठे ॥ म०॥ २ ॥ ए तीरथ जवपार उतारन, सर्व तीरथनो ए मोहन श्याम ठे ॥ म० ॥ मयाविजय ए गिरि सेवता सुर, अनंता तिणें ए सुरगिरि नाम ठे ॥ म०॥ आ० ॥३॥

॥ पद सातमुं ॥ गजलजि,न नामकुं समर ले,या बखत पाया है ॥ ए देशी ॥

॥ इस जुगमेंही तेरा कौ,हे नही सगा ॥ दगा हे सबहीमें,नही साचमें पगा ॥इस०॥ लोजकी लहेर माया, मोहमें लगा ॥ जान्यो न जिनधर्म तिने, आपकूं ठगा ॥ इस० ॥ दगा० ॥ १ ॥ राव रंक जेद नांही, एक हे मगा ॥ जरा जन्म मरणादि शोक,लोकमें लगा ॥ आ

परूप छोड पर.नाम्व में फगा॥ जान्यो न निजरूप रा मा, रंगमें रगा ॥ इम० ॥ दगा० ॥ २ ॥ एह अवसर फेर,आवे न वगा ॥ अब चेत चेत मूरख मन,कौन है सगा ॥ एक ब्रह्मरूप नही,दूसरो नगा ॥ नियत रूप मयामुनि, वाकमें थगा ॥ इ०॥ दगा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥ राग जंगलो ॥ नेम.प्रभुने जोग लीयो, गिरनारकी बताउ मोहे मागरीयां ॥ ए देशी ॥

॥ सांइ सलूना कैसें में पावुं, अति डुरगम गति बातडियां ॥ सांइ० ॥ अति० ॥ ए आंकणी ॥ एकमें नेक अनेकमें एकज, जान परत नही जातडियां ॥ ॥ सांइ० ॥ अति० ॥ १ ॥ करता करता मरता मर ता, नट नागरसी नातडियां ॥ चिदानंद तुं रूपारू पी, अगम अलखगति नातडियां ॥ सां०॥ अ०॥ २ ॥ परब्रह्म प्रभु तुंहिज पारस,चिंतामणि तुं चातडियां ॥ मयामुनि तुज रूप निहाली, दिनकरसें गइ रातडियां ॥ सां० ॥ अति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग काफी ॥ श्याम तुने कुन शीखाइ, ऐसी चाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्याम मोहे छांडि चले गिरनार॥श्या०॥सब याद वमिल व्याहन आए,पशुअन सुनी पोकार पोकार॥

॥ श्याम० ॥ १ ॥ सहसावन जाइ संयम लीनो, मोह चोर दियो मार मार ॥ श्या० ॥ २ ॥ शिव रम नीको संगम कीनो, अष्ट करम कीये छार छार ॥ ॥ श्या० ॥ ३ ॥ मया कहत शिवमंदिर पहोते, तारी राजुल नार नार ॥ श्या० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥ होरी ॥ राग काफी ॥ पद कज लि नो चंग ॥ ए देशी ॥ वीर जिणंद दयाल, जवि जेटो प्रानी ॥ वी० ॥ देइ त्रिपदी गनधर परकाशी, तोडी मिथ्या जाल ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ ज्ञानगुलाल सत्ता जो लीमें, जरि लावो सुरसाल ॥ केसर करुना जरि पि चकारी, छिरको बाल गोपाल ॥ ज० ॥ वी० ॥ २ ॥ ॐकार धुनि मरदंग बजावो, चूको नहि ए ताल ॥ सुमता संगें रंग जर रमतां, मेटो मोह जंजाल ॥ ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ जन्म मरनकी होरी जलावो, खेलो अपने ख्याल ॥ मया मुनी ए विधिशुं रमतां, सादी अनंतो काल ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति ॥

पद अगियारमुं ॥ लावणी ॥ सुनियो बातां राव सदाशिव, मत चड जानां धूलेवा ॥ ए देशी ॥

॥ ए जुग हे सुपनेकी माया, मृगतृष्णाजल जल कानी ॥ रज्जु सर्पकी जांती आनी, फोगट मनमें

नय आनी ॥ ए जु० ॥ १ ॥ मर्कट कूकर रूप मुक रमें, सिंह कूपमें जुस्कानी ॥ ज्युं जल पवन संयोग सहाई, चंचलता गति उर आनी ॥ ए० ॥ २ ॥ पर परनीतसें हरख शोक ए, जन्म मरन दुःखकी खानी ॥ काल अनंतो इहविध नमतां, जिनवाणी नहिं स मजानी ॥ ए० ॥ ३ ॥ चेत चेत अब मूरख प्रानी, मनुश्र जनम दुर्लन जानी ॥ वार वार अवसर नहि पावे, छोड विषय तुं अजिमानी ॥ ए० ॥ ४ ॥ समजे ज्ञानमें विरला कोइ, शाश्वत सुखकी सैलानी ॥ मया मुनी ए अवसर पाइ, धर्म मर्म जुगती जानी ॥ ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धांत सारस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपनादिक जिनवर नमी, सार सिद्धांत प्रकाश ॥ तत्त्वज्ञान वर्णव करुं, आतम गुन सुविलास ॥१॥ आतम गुण विन जे क्रिया, इंड्जाल सम होय ॥ नवसमुद्रनो पार ते, पामीजें नवि कोय ॥२॥ आतम गुण साधन क्रिया, प्राणायाम अन्यास ॥ सोहं पदने समरतां, पामे शिवपुरवास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥राग कनडो ॥ कुंथु जिन मनडुं किमही न बाजे॥ए देशी॥ अब में प्रवचन मारग पाया,चिदानंद दरसाया ॥अब०॥ ए टेक॥ ऊर्ध्व स्थान साहेबका वासा, पश्चिम मार्ग धराया ॥ उलटी नाडी चडे कमाडी, उलटा पवन चराया ॥ अब० ॥ १ ॥ रेचक पूरक कुंनक शांतक, चारु नेद श्रुत गाया ॥ खेचरी नूचरी चाचरी गोचरी, औ न मुनी लय लाया ॥ अ० ॥ २ ॥ गंगा जमुना मध्य सरसती, तरवेणी तिर पाया ॥ कर्म मलिनता दूर करनकूं, ए तीरथ मुनि आया ॥ अ०॥ ॥ ३ ॥ मन बच काय इहां थिर होवे,एह जोग जिने पाया ॥ ए बिन योग क्रिया नहि होवे, योगशास्त्रमें गाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ द्रव्य योग साधन ए किरिया, नाव योग उपाया ॥ द्रव्य योगतें नावको कारन, कारन कार्य-निपाया ॥ अ० ॥ ५ ॥ परपरनीतसें न्यारा होवे,निज परनीत घर आया ॥ एह जोग साधन नवि जाने, कहे में जोग बहाया ॥ अ० ॥ ६ ॥ जोग वही जड नोग न ढंड्या, यूंही जन्म गमाया ॥ बाह्य क्रिया करि काय किलेशों, जूठा जग नरमाया ॥ अ० ॥ ७ ॥ जिन शासनको मरम न जान्यो, जै

नी नाम धराया. ॥ आतमगुणमें जे मुनि रमता, जन्म मरन मेटाया ॥ अ० ॥ ८ ॥ अंक बिना बिंदु नहिं गणना, वेश अनेक बनाया ॥ समकित अंक धरे जे पूरवें, शिवमारगमें आया ॥ अ० । ए ॥ गुरु कृपा जे अंक धराया, सो प्रानी शिव पाया ॥ भयामु नी नवदुःख मिटाया, सादिअनंत निपाया ॥ अ० ॥ १० ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग बिहाग ॥ क्या करुं मंदिर, क्या करुं दमरा. न जानुं कां उड बेठेगा नमरा ॥ अथवा गिरि [illegible] दरिसन विरला पावे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनशासन मोहे सुखकारी, नवनय नावठ दूर निवारी ॥ श्रीजिनशास० ॥ ए टेक ॥ चउ अनु योग सिद्धांतमें गाया, द्रव्यानुयोग आतमगुण पाया ॥ श्रीजि० ॥ न० ॥ १ ॥ पंच द्रव्य जड दूर निवारी, आतम द्रव्य मोक्ष सुखकारी ॥ पिंमपदस्थ रूपस्थ रूपातीत, चार ध्यान मुनिवरने ए चित ॥ श्रीजि० ॥ ॥ न० ॥ २ ॥ आतम सो सामायिक जानो, सामा यिक सो आतम प्रमानो ॥ नगवइ अंगें ए अधिका रा, एह सामायिक ग्यान विचारा ॥ श्री० ॥ न० ॥ ३ ॥ अनुनव विण नव पूर्व कहाया, सो ए ज्ञान गिनति

में नाया ॥ मिथ्यादृष्टी अंतर राजे, जिन मुद्राकें वेश न गाजे ॥ श्री० ॥ न० ॥ ४ ॥ जैसें नटवर वेश बनावे, रामकृष्ण पद तेह न पावे ॥ समकित विण समकित गुण गावे, सो मिथ्यात्वी मोक्ष न पावे ॥ ॥ श्री० ॥ न० ॥ ५ ॥ बोखा चंदर सलिया धाना, जेवा गुरु तेवा जजमाना ॥ बीज बोया विण नाज न होवे, फागट कष्टें निज गुण खोवे ॥ श्री० ॥ न० ॥ ॥ ६ ॥ नाम वेषशुं काम न सीझे, अंतरध्यानें साहेब रीझे ॥ नवविध नाव लोच जब होवे, दशमो केश ड्रव्य लोच जोवे ॥ श्री० ॥ न० ॥ ७ ॥ नव विण केश लोच जे कीजें, ते देखीने मूरख रीझे ॥ एम अजाणने फंदें पाडी, स्यादवाद जिनशैली बिगाडी ॥ ॥ श्री० ॥ न० ॥ ८ ॥ दृष्टिरागसें धर्म चलावे, जैन बचनकूं दूर गुमावे ॥ स्यादवाद जे वाणी वखाणी, सो जिनवाणी समजो प्राणी ॥ श्री० ॥ न० ॥ ए ॥ पहेलुं नाण पछें कही किरिया, ज्ञान बिना बहु मदमें नरिया ॥ नाम अग्नि लिख पत्र कोउ मारे, दारुको श कबहूं नवि जारे ॥ श्री० ॥ न० ॥ १० ॥ साच क्रिया जे आतम साखी, दोष रहित वीतरागें नाखी ॥ जे मुनि आतम ज्ञानविलासी, सो मुनि अं

तें शिवपुरवासी ॥ श्री० ॥ न० ॥ ११ ॥ इह बिध अपनी अपनी गावे, मारग साचा कोउ न पावे ॥ साचा मारग जो कोउ पावे, बाद बिबाद सहू मिट जावे ॥ श्री० ॥ न० ॥ १२ ॥ केइ अपना पद आप संभारत, केइ गुरुकी मुखकी सुनि बानी ॥ मयामुनी गुरुबानी ठेरानी, सिद्धांतसार जिनबानी जानी ॥ ॥ श्री० ॥ न० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मह्यारे दीवाली थई आज, जिनमुख जोवाने ॥ ए देशी

॥ श्रीजिनशासनमांहि, जिनलिंग धारी रे ॥ जिनवाणी करीने दूर, शिवगति वारी रे ॥ केई दया दयाने पोकार, अहनिश करता रे ॥ वेष मलिनता धार, मूरख फरता रे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ उच्च नीच घर जाइ, सूजतुं कहेता रे ॥ भक्ताभक्त आहार, इमही ज लेता रे ॥ जिन प्रतिमाने छांभ, जडदिशि जोवे रे ॥ कारण विण कह्यो कार्य, केणि परें होवे रे ॥ ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ मुख बांधी मुनि वेष, जडमति भाली रे ॥ मोक्षगती एम होय, बांधुं राली रे ॥ भाष्य टीका निर्युक्ति, चूर्णी न धरता रे ॥ सूत्र सूत्र पोकार, फोगट करता रे ॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥ आतम

गुण विण जे जे, करशे करणी रे ॥ भव समुद्रनो पार, नांहिं उतरणी रे ॥ कोउ जिन कल्पी वीहार, मनमां धरता रे ॥ निज कल्पित पूराण, रचना करता रे ॥ श्रीजि० ॥४॥ स्त्रीने मुक्ति न होय, एहवुं दाखे रे ॥ सिद्धना पणदस भेद, जिनवर नाखे रे ॥ केवल ज्ञानने काज, वस्त्रने वारे रे ॥ ए आदिकल्पित भेद, मनमें धारे रे ॥ श्रीजि० ॥ ५ ॥ केइ नास्तिक केई बोध, मोहें घेख्या रे ॥ कृष्ण लीलामें केइ, रास रमि रह्या रे ॥ राग द्वेष भवमूल, लीला लहियें रे ॥ ते परमातम नांहि, भवचक्रें कहियें रे ॥ श्रीजि० ॥६॥ एम अनेक मत भेद, दर्शन दाखे रे ॥ आप आपनो धर्म, सहुये भाखे रे ॥ स्यादवाद जिनमार्ग, धर्म कहावे रे ॥ नय एकांत निवारि, विरला पावे रे ॥ ॥ श्रीजि० ॥ ७ ॥ जिनवाणी रसकूप, बहु नय धारी रे ॥ नय एकांत निवारि, मुझ मन प्यारी रे ॥ ते कारण मनमांहि, जिनमत धारी रे ॥ समजी सार सिद्धांत, हठ परिहारी रे ॥ श्रीजि० ॥ ८ ॥ त्रिकरण योगें जेह, मनमां धरशे रे ॥ भवसमुद्रनो पार, भविजन करशे रे ॥ निश्चय नय व्यवहार, दोय नय ग्रहियें रे ॥ अंतर दृष्टिमांहे, निश्चे रहियें रे ॥ श्री

जि० ॥ ए ॥ आतमज्ञानने काज, सद्गुरु सेवो रे ॥ ग्यानादिक गुण जेह, चाखो मेवो रे ॥ करि थिर मन वच काय, चित्तमां धरियें रे ॥ मया मुनी जव सिंधु, पार उतरीयें रे ॥ श्रीजि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ खबर नहिं आ जुगमें पलकी, सुकृत० ॥ ए देशी ॥

॥ चतुर नर मनकुं समजानां, मनकी संगत हरि हर ब्रह्मा, नूल गये ध्यानां ॥ च० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कमला कृष्ण लीन हर गौरी, राम रहे रानां ॥ इंद्र अहिल्या संग करनकूं, गोतम घर जानां ॥ च० ॥ ॥ म० ॥ २ ॥ प्रश्नचंद्र मुनि मनकी संगत, नरक गती आनां ॥ मनकी संगत छांम के निज गुन, पाय केवल ग्यानां ॥ च० ॥ म० ॥ ३ ॥ साधवी लखमणा मनकी संगत, बहुत काल नमनां ॥ सिंह गुफा वासी साधुकूं, रत्नकंबल लानां ॥ च०॥ म० ॥ ४ ॥ मन साधन बिन सबही निष्फल, क्रिया कष्ट करनां ॥ संध्या रंग समान ए किरिया, वाऊ रंग धरनां ॥ ॥ च० ॥ म० ॥ ५ ॥ एम अनेक ग्यानी ध्यानीकुं, मन दुःकर ठानां ॥ मयामुनी सदगुरुकी संगत, मन बस शिव जानां ॥ च०॥ म०॥६॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हे जोशादाजी अवडो लाडकवांयो ॥

॥ लाल न कीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ हे मुनिवरजी,जिन घर रमण करंतां अखय सुख लीजियें ॥ पर संग तजी, निज सत्ता अनुनव अमृत रस पीजियें ॥ ए टेंक ॥ पररमण करंतां मोहवशें, व्यनिचारी कहीने लोक हसे, निजसत्ता परिकर दूर खसे ॥हे मु०॥१॥ एम आचारंग टीकायें कहे, दर्शन विण चारित्र जेह लहे, तेतो खर चंदननो नार वहे ॥ हे मु०॥२॥ अंबरमें खगपद खोज करे, पुजल परिणामें धर्म धरे, ते तो नव अनंता नंत करे ॥ हे मु० ॥ ३॥ किरिया लव ज्ञानीनी कही, जेथि नव नय नावठ दूर गइ,जिम नरत नरेसर सिद्धि लही ॥ हे मु० ॥४॥ जेम अंग उपंग दीसे रूडां,एक नाक विना कहियें कूडां,तिम अनुनव विण बोले सूडा ॥ हे मु० ॥ ५ ॥ ते माटे अनुनव साध्य करे, निश्चय नय ने व्यवहार धरे, तो सहेजें शिवरमणीने वरे ॥ हे मु० ॥ ६॥ एम स्यादवाद जिनमार्ग कह्यो, सिद्धांत सारमां जेह लह्यो,मयामुनिने अविचल तेहथयो॥हे मु०॥७॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ अब देख्या हमेरा स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥अब देख्या में अंतरजामी, महा सुखसागर विशरामी रे ॥ अब० ॥ भूल अनादि भ्रमणता भागी, चेतना भइ निःकामी रे ॥ अ०॥म०॥१॥ अतींद्रिय सुख सेज समाधी, भोग अनंतनो धामी रे ॥ अ० ॥ लगी लगन मोहे कबहू न छूटे, उरसें प्रीत में वामी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ २ ॥ चंद चकोरकी उपमा सुजनी, नाथ भयो बहु नामी रे ॥ अ० ॥ रसना सहस्र करे जो कोइ, होत न बरनन स्वामी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ ३ ॥ समजे ज्ञानमें विरला कोई, कहेन सुनन नहि कामी रे ॥ अ० ॥ मयामुनी गुरु ज्ञानमें समजे, विरला कोउ भवि प्रानी रे ॥ अ०॥ म०॥४॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ गागरियां मत ढोर काना, में तो दउंगी गारी॥ए देशी॥

॥ छिन छिन छिन सांइ सांइ, समरत सुखकारी ॥ जाकी ज्योति हे अपार, लागत मोय प्यारी ॥ छि०॥ ॥ ए टेक ॥ १ ॥ एकमें अनेक हे, अनेकमें अविकारी ॥ भोगता अभोगता हे, जाकी गति न्यारी ॥ ॥ छि० ॥ २ ॥ करता अकरता हे, सर्वरूप धारी ॥

रूप नहि रंग नहि, ताकी बलिहारी ॥ वि० ॥ ३ ॥ सत्तामें स्वरूप एक, अविचल अविकारी ॥ परजाय रूपमें तो, नाना रंगधारी ॥ वि० ॥ ४ ॥ एह विध स्यादवाद, आत्म हीतकारी ॥ मया मुनी गुरु पसाय, जवकी जीति टारी ॥ वि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सखरेमें सखरी कोन, जगतकी मोहनी ॥ ए देशी ॥

॥ निज घर आये नाथ, शोभा बनी जेहनी ॥ बरनी मुखथी न जाय, अनंती तेहनी ॥ लोकालोक स्वरूप, केवल ज्योती धरी ॥ परजय रूप अनंत, सत्तामें संवरी ॥ हां हां रे सत्तामें संवरी ॥ प्यारे लाल, सत्तामें संवरी ॥ १ ॥ आप स्वरूप प्रकाशी, अनंत शोभा बनी ॥ जवजय जावठ जागी, अनंत रूधी वरी ॥ जगजीवन जगनाथ, अखंम रूपें थया ॥ कर जोडीने आगें, देव देवी रह्या ॥ हांहांरे देव० ॥ प्यारे० ॥ ॥ निज० ॥ २॥ अणहुंते एक क्रोड, देव सेवा करे ॥ धर्मचक्र प्रभु आगें, चिहुं दिशि संचरे ॥ इति न सात प्रकारें, प्रभु जिहां पग धरें ॥ जव्य जीव प्रति बोधी, अक्षय सुखने वरे ॥ हां० ॥ अ० ॥ प्यारे० ॥ ॥ नि० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य आठ, पांत्रीश वाणी जेह

नी ॥ वरणी मुखथी न जाय, शोजा बनी तेहनी ॥ चोत्रीश अतिशय ब्राजे, राजे पद्मासनें ॥ आलंबन ग्रही एह, ध्यावो एके मनें ॥ हां० ॥ ध्या० ॥ प्या० ॥ नि० ॥ ४ ॥ शुद्ध निमित्त ए आतम, समरण दाव छे ॥ निज परसत्ता जाणंग, शुद्ध स्वन्नाव छे ॥ ते कारण तुमें गावो, ध्यावो आतमा ॥ जवतारण निन वाणी, वदे परमातमा ॥ हां० ॥ व० ॥ प्या० ॥ निज० ॥ ५ ॥ ते माटे परमाद, तजी परसंगने ॥ एह अपूरव जाव, ध्यावो एके मनें ॥ अविनाशी अक्षय सुख, साधन एह छे ॥ मया विजयने साचो, धर्म सनेह छे ॥ हां० ॥ ध० ॥ प्या० ॥ नि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ में जो रहुं घरके मांहि, जोबन सब लूटे, में चलुं नेमके संग, तार किम त्रूटें ॥ ए देशी ॥ अब केतिक उपम कहुं, चिदानंद केरी ॥ जे दरस फरससें होत, नही जव फेरी ॥ जे जवसमुद्रमें पोत, ज्ञानगुन लहेरी ॥ समजावें मुक्ति संसार, मित्र अरु वेरी ॥ अब केतिक० ॥ जे० ॥ १ ॥ अब राव रंकमें जेद, नही प्रजु धारी ॥ तुं लोकालोक निहाली, रहे अविकारी ॥ तुक कारन जंगम जोग, वेष बहु जारी ॥ अधोमुख

ऊंची बांह्, जटा शिर धारी ॥ अब केतिक० ॥ जे०॥ ॥२॥ तुं सहज स्वभावें, प्रगट होय न हेरी ॥ तुझ समकित समरन जोग, लहे को लहेरी ॥ ए अनुभव रसको स्वाद, लग्यो मोहे ढेरी ॥ मया मुनी परव रति, दूरसें घेरी ॥ अब केतिक० ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जशोदा तेरे कानें ए कपट किया ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी मेरी लगी लगन तुमशुं ॥ अवर देव मुझ मन नहिं भावे, तुम चरणे रमशुं ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ तुम बिन क्षण एक दूर न रहेशुं, मन वंछित लेशुं ॥ प्र० ॥ जो रीजी देशो तो लेशुं, नहि तर हठ ग्रहेशुं ॥ प्र० ॥ २ ॥ कबजे आव्या हवे किम करी छूटो, जंजीर जडी देशुं ॥ प्र० ॥ एम करतां तदरूप न करशो, अंतें पण लेशुं ॥ प्र० ॥ ३ ॥ मया करी अविचल सुख आपो, पछें नही कहेशुं ॥ प्र० ॥ सौभाग्यविजय गुरु चरण पसायें, भवभय दुःख हरशुं ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गाया रे आज हमारे भाग्य जागे, परमातम गुन गाया रे ॥ आ० ॥ पूरव पुण्य उदय भयो मेरो,

रसनाना रस पाया रे ॥ आ० ॥ १ ॥ संवत उगणी
गुण चालीशें, काति पुनम दिन आया रे ॥ आ० ॥
रही बंदिर वडसाल चोमासुं, संघ सकल हरखाया
रे ॥ आ० ॥ २ ॥ एह स्तवन जे जणशे गुणशे, तसु
सुर नर नमें पाया रे ॥ आ० ॥ सौजाग्यविजय पर
ताप पसायें, हीरविजय सुपसाया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
बालचेष्ठा मन हरख जराया, अल्पमति ए गाया रे
॥ आ० ॥ मयाविजय गुरु चरन पसायें, आतम
अनुजव पाया रे ॥आ०॥४॥ इति सिद्धां० समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

॥ पासजी जग धणी रे, माहरी तुम आगल जाखुं
॥ ए देशी ॥ आदिजिन साहेबा रे, जगनी आदि क
रण अरिहंत ॥ ब्रह्मा ब्रह्मनो रे, जाणग पासग तुं
जगवंत ॥ तुज सम को नही रे, जगमां देव न कोउ
दयाल ॥ करुणानिधि प्रजु रे, करि करुणा कर ग्रहि
यें कृपाल ॥ आदि० ॥ जगनी० ॥ १ ॥ मनडुं माह
रुं रे, मदमातुं मयगल मछराल ॥ तुज चरणे नवी
रे, विलगे वामगती विकराल ॥ योगनी चपलता रे,
चंचल चित्त ते चमक पाषाण ॥ लोह कर्म आकर्ष
तो रे, समजे नही तुज वचन सुजाण ॥ आदि० ॥

॥ ज० ॥ २ ॥ इंडिय वश पड्यो रे, पडीयो प्रेम पा
सनी जाल ॥ पर परिणामझुं रे, नमिषो नव अट
वी नूतकाल ॥ व्रत नीम नवि धर्यां रे, धरियां तो
पण नवि करीयां ॥ मनुंष्य जनम लही रे, पापें पिं
म अति नरिया ॥ आ० ॥ ज० ॥ ३ ॥ लोकालोकना
रे, ज्ञायक अगम अगोचर नाथ ॥ शी कहुं माहरी
रे, वीतक विविध प्रकारें वात ॥ आज मुफने मल्या
रे, मलिया मूकुं नहीं महाराज ॥ नेह नजर करी रे,
निरखी सारो अमारुं काज ॥ आ० ॥ ज० ॥ ४ ॥
कृष्णवद्धननी पुरें रे, परगट पेख्या देव में आज ॥
तारीयें तेहने रे, शरण आव्यानी रखियें लाज ॥
सौनाग्य प्रतापथी रे, हीरविजय गुरुने सुपसाय ॥
मयाविजय तणां रे, पातक सघलां दूर पलाय ॥
॥ आ० ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति श्रीआदिजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ महारा सम बोलोने मावा ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिन वंदो नर नारी, प्रजु मुख मुझ अवि
कारी ॥ वी० ॥ ए आंकणी ॥ सिद्धारथ कुलमां अव
तारी, मात त्रिशलादे उर धारी ॥ सकल जीवना हि
तकारी ॥ वीर० ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ कुंमलपुर नगरी ब

लिहारी, जिहां प्रभु जन्म्या जयकारी ॥ पावापुरी वरिया शिवनारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ २ ॥ वीर शासनने उपगारी, देइ त्रिपदी गणधर धारी ॥ मिथ्यात्व भ्रम ण दूरें वारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ हरि लंछन प्रभुपद धारी, राग द्वेष दूरें वारी ॥ आप तस्या प्रभु पर तारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥४॥ बंदर वलसाड शोभा सारी, वीरजिन वेग सुखकारी ॥ मयाविजय दिलमें धारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ समवसरणस्थ जिनवाणी स्तवनम् ॥

॥ ऐसी सुणी महाराज, अनुभव प्रीति जगाइ ॥ए देशी॥

॥ सखी आवोने आज आनंद, वीरजिन वाणी सुणावे ॥ पुष्करावर्त्त जिम मेघ, भवभय ताप समावे ॥ समवसरण जिनराज, शोभा कहीय न जावे ॥ चार निकायना देव, मली सुरवधु गुण गावे ॥ स०॥ ॥ १ ॥ साखी ॥ गुण गावे सुर नरवरा, उभा बे कर जोड ॥ प्रभुजी दीये देशना, सारे वंछित कोड ॥ ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चार० ॥ सखी आ० ॥ २ ॥ चोत्रीश अतिशय राजता, पांत्रीश वाणी सार ॥ प्रातिहारज शोभा घणी ए, कहेतां नावे पार ॥ वी० ॥ ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥३॥ जेम सूरज उगे थके, टा

ळे सवि अंधकार ॥ प्रनुवाणी तिम पसरति, मिथ्यात्व अंधेर निवार ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ४ ॥ जे मिथ्यात्वी जीवडा, पामे नही नवपार ॥ सरधाविण वाणी सुणे, एने जन्म मरणनो मार ॥ वी० ॥ पु० ॥ ॥ स० ॥ चा० ॥ ५ ॥ रोहिणीए चोरें सुणी, वाणी एकज वार ॥ तिम वृद्धा मोसी सुणी, ए तो पाम्यां नवनो पार ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ६ ॥ ए वाणी अमृत समी, जाणो रसायण रूप ॥ जेहने अंतर ऊतरे, ते होये त्रिनुवननूप ॥ वी० ॥ पु० ॥ ॥ स० ॥ चा० ॥ ७ ॥ संवत उगणी गुणचालीशमां, रही वलसाड चउमास ॥ वीर जिणंदने वांदतां,पोहो ती मननी आश ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ८ ॥ ए वाणी हमणां ठती, आगममां निरधार ॥ मया विजयने मन वसी, सौनाग्य विजय उपकार ॥वी०॥ ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ए॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ सात वार गर्नितस्तवनम् ॥

॥ सखि कार्तिक मासें मेली,कंथ सधावीया ॥ एदेशी ॥

॥ सखी आदित्य वारें आज,आनंदमां आवीयें ॥ प्रनु नेटी वीर जिणंद,आतम गुण नावीयें ॥ सखी सोमें सुमती घेर, जइ वासो रहीजीयें ॥ व्रत नीयम

पच्चरकाण, गुरु मुख लहीजीयें ॥ सखी आदि०॥प्रभु०
॥१॥ सखी मंगल वारें मननी,शुद्धि कीजीयें ॥ मात
पिता गुरु देवनी, आशीष लीजीयें ॥ सखी बुधें बुद्धि
निर्मल, राखो रंगमां ॥ ग्यान ध्यान निश दीस,करो
गुरु संगमां ॥ स० ॥ आ० ॥ २ ॥ सखी गुरुयें
गुण अनंत, वर्णव केम कीजीयें ॥ लोकाकार स्वरू
प, निहाली लीजीयें ॥ सखी शुकरें शांति जिणंदनी,
सेवा कीजीयें ॥ संतपणुं जेम होय, समभाव रही
जीयें ॥ स० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सखी शनियें सनमुख
निरखो, सिद्धगिरि शाश्वतो ॥ एह अपूरव भाव, आ
तममां भावतो ॥ सखी थावर ज्योती सिद्ध, अनंती
जिहां वस्या ॥ मयाविजयें एहना, गुण दिलमां ध
स्या ॥ स०॥ प्र०॥४॥ इति सात वार गर्भित स्तवनम् ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवनम् ॥

॥ श्रीसुपार्श्वजिन वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लि जिणंद मया करो, मनमां आणी महेर
ललना ॥ तुम शासन सोहामणुं, जेहवी सायर ल
हेर ललना ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ मिथिला नयरी जनमि
या, प्रभावती जसु मात ललना ॥ कुंभराजा सुत सा
हेबो, नील वरण विख्यात ललना ॥ म० ॥ २ ॥ प

चवीश धनुष्यनी देहडी, कलश लंछन प्रनु पाय ल
लना ॥ सहस पचावन आउखुं, नमतां शिवसुख
थाय ललना ॥ म० ॥ ३ ॥ समेत शिखरगिरि ऊपरें,
ज्योतिशुं ज्योति मिलाय ललना ॥ सादि अनंत सुख
पामीया, शोना कहिय न जाय ललना ॥ म० ॥४॥
पांचमे आरे प्राणीने, परगट परतो तुऊ ललना ॥
तुम दरिसन मुख देखतां,आनंद उपन्यो मुऊ ललना
॥ म० ॥ ५ ॥ नोयणी नयर विराजता, प्रगव्या नूमि
सुनाथ ललना ॥ संवत् उगणीश त्रीशमां, संघ मल्यो
बहु साथ ललना ॥ म० ॥ ६ ॥ देश चुंआल पावन
कीयो, जात्री अनेक ते जाय ललना ॥ प्रनु पूजा
परनावना, साहामी वत्सल नित्य थाय ललना ॥
॥ म० ॥ ७ ॥ सोलंकी राणाना राज्यमां, नोयणी
नगर ठे जेह ललना ॥ केवल पटेलना खेत्रमां, प्रग
ट्या प्रनुजी एह ललना ॥ म० ॥ ७ ॥ देशमां सुंदर
सोहतो, धाम बन्यो मनोहार ललना ॥ मयाविजयने
ताहेरा, शासननो आधार ललना ॥ म० ॥ए॥ इति ॥
॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं ॥ उपरनी देशीमां ॥
॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा, जगतजंतु विशराम लल
ना ॥ मात पद्मावति जनमीया, देहडी सुंदर श्याम

लजना ॥ श्री मुनि० ॥ १ ॥ सुमित्र कुलमां दिनमणी, राजगृही राजान लजना ॥ कूर्म लंछन पद सोहतुं, आयु त्रीश सहस मान लजना ॥ श्री मु० ॥ २ ॥ वीश धनुष्य देह दीपतो, शोभा कहीय न जाय लज ना ॥ सादि अनंत सुख पामीया, जस समर्यां सुख थाय लजना ॥ श्री मु० ॥ ३ ॥ अश्व प्रतिबोधन का रणें, भरुअच नयर मझार लजना ॥ पाउ धार्या पोतें तिहां, करवा भवि उपगार लजना ॥ श्री मु० ॥ ॥ ४ ॥ भरुअच नयरें भेटीया, श्रीमुनिसुव्रत नाथ लजना ॥ मयाविजय मन हर्खशुं, पाम्यो शिवपुर साथ लजना ॥ श्री मु० ॥ ५ ॥ इति वीरस्तवनं ॥

॥ अथ पंचतीर्थि स्तवनम् ॥

॥ कोयलो पर्वत धूंधलो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ आबु जिनवर जुहारियें रे लाल, उतरवा भव पार मन मोह्युं रे ॥ रिखभ जिनंदने वंदीयें रे लाल, देलवाडे सुखकार मन० ॥ आबु० ॥ १ ॥ धातूमय सोवन समी रे लाल, चउमुख आदि चउद मन० ॥ अविचल गढनी उपरें रे लाल, देखत उपजे प्रमोद मन० ॥ आबु० ॥ २ ॥ विजोवे जिन वंदीयें रे लाल, वरकाणे श्रीपास मन० ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी

रे लाल, नविजननी पूरे आस मन० ॥ आबु० ॥
॥ ३ ॥ नांदोलें नमीजीयें रे लाल, पद्म ने शांति जि
णंद मन० ॥ त्रीजा नेम जिनेसरू रे लाल,सेवा सारे
इंद मन० ॥ आबु० ॥ ४ ॥ नारुलाई नित नमो रे
लाल, नेम ने आदि जिणंद मन० ॥ एकादश जिन
देहरां रे लाल, देखत उपजे आनंद मन० ॥ आबु०
॥ ५ ॥ घांणोरें महावीरजी रे लाल, चोवीशमो जि
नराज मन० ॥ वंदी सादरी आवीयें रे लाल, सारो
आतम काज मन० ॥ आबु० ॥ ६ ॥ राणपुरें जि
नदेहरुं रे लाल, शोना कहिय न जाय मन० ॥ न
लिनी गुल्म विमाननें रे लाल, आकारें कहेवाय
मन० ॥ आबु० ॥ ७ ॥ बंनणवाडे वीरने रे लाल,
गोपें उपसर्ग कीध मन०॥ ए आदी तीरथ नलां रे ला
ल, वंदी आतम सुख लीध मन० ॥ आबु० ॥ ८ ॥
संवत उगणी चालीशमां रे लाल, नेटवा श्रीजिनरा
ज मन० ॥ मयाविजय ए वंदतां रे लाल, सार्युं आ
तम काज मन० ॥ आबु० ॥ ए ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवनम् ॥

॥ हे सुखकारी, आ संसार थकी जो मुजने उद्ध
रो ॥ ए देशी ॥ नवि नेटो आज, श्री तारंगे अजित

मुख निरखो चंदने ॥ तुमें ध्यावो राज, जितशत्रु विज या राणीना नंदने ॥ ए अजित अजित वीतराग कह्यो, जेणें कर्म शत्रुनो अंत लह्यो, ए तो परमानंद अविचल थयो ॥ नवि नेटो० ॥ १ ॥ साडा चारशें धनुष्य प्रमाण कह्युं, जस कंचन वरण शरीर लह्युं, गज लंबन चरणे चित्त रह्युं ॥ नवि०. ॥ २ ॥ ए जगजीवन जगनाथ कह्यो, जे नव्यजीव ते शरण ल ह्यो, मयाविजयने ते अविचल थयो ॥ नवि० ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ नेक नजर करो नाथजी, जिम जाये दारीदर आजथी जी हो ॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥

॥ नावें नजो महावीरने, ए हरवा अनादिनी पी रने जीरे ॥ नावें नजो महावीरने ॥ ए रत्न चिंताम णि धारीयें, ए अवसर पाम्यो न हारीयें जीरे ॥ ना वें०॥ ए वार वार योग नही बनें, किम थइ रह्या ढो शून्ने मनें जीरे ॥ नावें० ॥१॥ ए तो पढी घणुं पस्ता वशो, ए अवसर किहांथी लावशो जीरे ॥ नावें० ॥ ए जन्म मरण नय वारीने, जिन वचन हृदयमां धा रीने जीरे ॥ नावें० ॥ २ ॥ ए तो पूरण परमानंद ढे, परिग्रह रागादि ए फंद ढे जीरे ॥ नावें० ॥ मयावि

जय करी महावीरने, नजो मेरु अचल ज्युं धीरने
जीरे ॥ नावें० ॥ ३ ॥ इति वीरजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ समवसरण स्तवन प्रारंजः ॥

॥ अजित जिनेसर चरणनी सेवा ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरणनी शोजा सारी, बेग जिन हित
कारी ॥ चउमुख चउगति वारक स्वामी, वंदे सुर न
र नारी ॥ प्रजुजी तुऊ सम अवर न कोइ, नविजनने उ
पगारी ॥ तुऊ मुद्रा अविकारी, मुऊ मन लागे
प्यारी ॥ प्र०॥१॥ ए आंकणी ॥ योजन रचना सम
वसरणनी, परषदा बार बिराजे ॥ त्रण प्राकार मणि
रत्ननी शोजा, अशोकवृक्ष जिहां गाजे ॥ प्रजु० ॥
॥ २ ॥ द्वारपाल सुर चिहुं दिशि सोहे, पुष्करिणी म
न मोहे ॥ सहस्र योजननी ध्वजा पताका, देव डुंडुनि
घन घोहे ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ चोत्रीश अतिशय पांत्रीश
वाणी, सुर वांसली स्वर पूरे ॥ मणिमय पीठ मुक्ता
फल बत्रें, बेगं नवि डुःख चूरे ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ जा
मंमल प्रजु पूंठें बिराजे, तेजें दिनकर जीपे ॥ चामर
पुष्पवृष्टिनी रचना, देवबंदें प्रजु दीपे ॥ प्रजु० ॥ ५॥
आप आपनी जाषा समजे, संदेह मनना टाले ॥ नि
ज स्वरूप रमणता करतां, आतम शक्ति निहाले ॥

प्रभु० ॥ ६ ॥ जिहां जिन विचरे सवासो योजन, इति नही सात प्रकारें ॥ एह अतिशय जिनने छाजे, नमतां दुर्गति वारे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ वैर विरोध इहां नही दीसे,सर्व प्राणी मन हीसे ॥ समवसरणनी एह वी रचना, देखी दुर्मति पीसे ॥प्रभु०॥८॥ संवत उंग णी सडत्रीश शालें, सूरत बंदर सार ॥ समवसरण नी रचना कीधी, मयामुनी सुखकार ॥ प्रभु० ॥ ए ॥

॥ अथ पजुसण पर्व चैत्यवंदन ॥

॥ पर्व पजुसण पामीने, जिनवर जाषित जेह ॥ मन वच कायें सेवीयें, आराधो गुण गेह ॥ १ ॥ वि धि पूर्वक मज्जन करी, जिनवर पूजा कीजें ॥ स्नात्र मोछव मन रंगशुं, गुरु मुख व्रत एम लीजें ॥ २ ॥ क ल्पसूत्र श्रवणें सुणी,जीव अमारि करीजें ॥ साहामी वछल प्रजावना, करतां जवजय छीजे ॥ ३ ॥ पांच प्रकारें दान इम, खामीजें सवि जाइ ॥ पारणां दिन पक्कान्नशुं, कीजें अधिक वडाइ ॥ ४ ॥ इणविध पर्व पजुसणे, श्रावक गुणव्रत धारी ॥ मयामुनि ए पामी ने, जिनशासन जयकारी ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ पद ॥ राग कानडो ॥

॥ परघर रमण न कीजें लालन, परघर० ॥ निज

मंदिर अमृत रस पीजें, बाहिर चरन न दीजें लाल
न ॥ प० ॥ १ ॥ निज स्वभाव तजी रावण कामी,
सीता हरन करीजें ॥ रामें रावण सीविध कीनी, जग
अपजसने लीजें लालन ॥ प० ॥ २ ॥ चक्री सनत
कुमर शुभ पुगल, परस्वभावें भीजें ॥ ततक्षण अशुभ
रूप पुगलकों, देव वचन बूझीजें लालन ॥ प० ॥ ३ ॥
स्वस्वभाव तजी प्रश्नचंद मुनि, सप्तम दल मेलीजें ॥
पर परनीत तजी निजघर आये, ज्ञान केवल प्रगटी
जें लालन ॥ प० ॥ ४ ॥ एम अनेक पर रमण करं
तां, ज्ञान ध्यान हरीजें ॥ अवधिज्ञान मुनि हास्यथी
वमीयो, भव अनंत भमीजें लालन ॥ प० ॥ ५ ॥
भरत मरुदे आप स्वभावें, अजरामर पद लीजें ॥
परघर रमण तजी निज घरमें, रमण मया करी दीजें
लालन ॥ प० ॥ ६ ॥ इति प्रथमपदं ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ मुक्त गए महावीर पावापुर रे ॥ मुक्त० ॥ सिद्धा
रथ त्रिसलादे राणी, कुलमें मेरु ज्युं धीर ॥ पा० ॥ १ ॥
च्यवन कल्याणिक देव दशोदिश, दीपकको भजीर ॥
मोह टालि गौतम लीयो केवल, गांभी भवभय पीर
॥ पा० ॥ २ ॥ दीवाली दिन एह अनोपम, ध्यावो

श्रीमहावीर ॥ पंचम कालें शासन जेहनुं, गंगाजल ज्युं नीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ एकवीश वर्ष हजार अनोपम, शासन जगदाधीर ॥ मया करी नव पार उतारे, नव्य जपो वीर वीर ॥ पा०॥ ४ ॥ इति पदं ॥ इति प्रथमनागे द्वितीय स्तवनविलासः संपूर्णः ॥२॥

॥ अथ तृतीय सझाय विलास प्रारंनः ॥

॥ तत्र प्रथम हितोपदेश सझाय लिख्यते ॥

॥ एसा जिन एसा जिन एसा जिन है,जाकुं चउद राजकी गम है ॥ ए देशी ॥

॥ नवि चेतन चेतो प्रानी, लेइ गुरुगम ज्ञान नी शानी ॥ मनमोह महामद ढांमी, सजी निजगुण राजनी धानी ॥ नवि० ॥ १ ॥ ए तुं जाने धन मेरा, अंतें होये जंगल फेरा ॥ मात तात पुत्र पितरानी, काचे कुंन नयो जिम पानी ॥ न०॥ २ ॥ ए जुग है रेनका सुपना, यामें पलक नही अब उपना ॥ ए जन्म मरन डुःख खानी, समजे कोउ विरला प्रानी ॥ न० ॥ ३ ॥ ए अवसर फेर न पावे, गइ बाजी हाथ न आवे ॥ कोउ जान लेइ अनिमानी, निंडामें रेनी बिहानी ॥ न० ॥ ४ ॥ आतम परमातम जानो, जिम चंद बादलमें ढानो ॥ सद्गुरुकी ए सुनी

बानी, मया मुनिने चित्त ठहेरानी ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ मूर्ख प्रतिबोध सझाय प्रारभ्यते ॥

॥ जे कोइ प्रेमिअंश अवतरे,प्रेमरस तेहना उरमां ठरे ॥ ए देशी ॥ ज्ञान कदी नव थाय, मूरखने ज्ञा०॥ केहेतां पोतानुं पण जाय ॥ मू० ॥ श्वान होय ते गंगाजलमां,.सो वेला जो न्हाय ॥ अडसठ तीरथ फरी आवे पण, श्वान पणुं नव जाय ॥ मू०॥ के०॥ ॥ १ ॥ क्रूर सरप पय पान करंतां, संतपणुं नव थाय ॥ कस्तूरीनुं खातर जो कीजें, वास लसण नव जाय ॥ मू० ॥ के० ॥ २ ॥ वृषासमे सुग्रीव ते पक्षी, कपि उपदेश कराय ॥ ते कपिने उपदेश न लाग्यो, सुग्रिव गृह वींखाय ॥ मू० ॥ के०॥ ३ ॥ नदीमांहे निशिदिन रहे पण, पाषाण पणुं नवि जाय ॥ लोह धातु टंकण जो लागे, अग्नि तुरत झराय ॥ मू० ॥ ॥ के० ॥ ४ ॥ काग कंठमां मुगता फलनी, माला ते न धराय ॥ चंदन चर्चित अंग करीजें, गंधव गाय न थाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ५ ॥ सिंह चरम केइ शियाल सुतने, धारे बेश बनाय ॥ शियालसुत पण सिंह न होवे, शियाल पणुं नवि जाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ६ ॥ ते माटे मूरखथी अलगा, रहे ते सुखीया थाय ॥

ऊखरनूमी बीज न होवे, ऊलटुं बीज ते जाय ॥मू०॥ ॥ के० ॥ ७ ॥ समकित धारी संग करीजें, नवनय नीति मिटाय ॥ मयाविजय सद्गुरु सेवाथी, बोध बीज सुख पाय ॥ मू० ॥ कें० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सम्यक्त्व स्वरूपवर्णन सद्याय ॥

॥ राग प्रनाती ॥ ज्यां लगें आतमा तत्त्व चीन्यो नहि, त्यां लगी साधना सर्व जूठी ॥ ए देशी ॥ ज्यां लगें समकित रूप फरस्युं नहिं, त्यां लगे कष्ट किरिया न लेखे ॥ सर्व ने देशविरति धरे शुं थयुं, शुं थयुं सर्व सिद्धांत देखे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ १ ॥ शुं थयुं अरण्यमां वास वसवाथकी, शुं थयुं केशनो लोच कीधे ॥ जिन कल्प नग्न रहेवा थकी शुं थयुं, शुं थयुं उष्ण अति अंन पीधे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ २ ॥ नौतन ग्रंथ रचवाथकी शुं थयुं, शुं थयुं वरणना नेद जाणे ॥ जोग उपधान वहेवाथकी शुं थयुं, शुं थयुं खट आवश्यक गाणे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ३ ॥ तप अने जप करवाथकी शुं थयुं, शुं थयुं तीर्थ फरसन कीधे ॥ शुद्ध व्यवहार ए धर्म कारण अछे, कार्य समकेतथी आतम सीधे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ४ ॥ ज्ञानवादी क्रियावादी केई इम, त्रण शत त्रेशठ एम लीजें ॥ नंदीसूत्रें जुवो तेहने वरणव्या, अ

नुजव वीण पारखंमी कीजें ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानविण जे किरिया कही, अंक विना जेम बिंड जाणो ॥ मयामुनि जिनधर्म ए सार ठे, ज्ञान क्रिया दोये शुद्ध मानो ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ मिथ्यात्विसंग दूरकरण सद्याय ॥

॥ हे सुखकारी आ संसारथकी जो मुजने उद्धरो ॥ ए देशी ॥ हे तजियें रे जिनसमरन करतां वारे तेह ने (तजियें रे) ॥ ते माटे देश नगर तजियें, जइ एकांतें वनमां वसीयें, मिथ्यात्वीथकी दूरें खसियें ॥ हे तजि यें रे जिन० ॥ १ ॥ जेम कूसंगासंगो करतो, एक हंस काग पासें जमतो, हण्यो हंस काग जमी रमतो ॥ हे तजियें रे ॥ जिन०॥ २॥ जे जिनमतथी विपरीत जवे, किरिया उतकृष्टि अंग धरे, ते तो जव अनंतानंत करे ॥ हे तजीयें रे॥ जि०॥ ३॥ तमें सज्जन संग करो जाई, आ मनुश्र जनम डुरलज पाइ, ए वाणी श्री जिनवर गाइ ॥ हे तजियें रे ॥ जि०॥ ४ ॥ सज्जन सुख इह परलोक करे, जे संतपणुं मनमांहि धरे, मया मुनि ने ते अविचल करे ॥ हे तजियें रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रावकजनस्तुति ॥

॥ वैष्णवजन तो एने कहियें ॥ ए देशी ॥

॥श्रावक जन तो एने कहियें, सरधा समकित मूल रे॥ देव गुरुने धर्मविवेकें, आराधे अनुकूल रे ॥ श्रा० ॥ स० ॥ १ ॥ निश्चय नयव्यवहारने जाणे, स्यादवाद सुखमूल रे ॥ द्रव्य गुण परजायने ध्यानें, आश्रवने प्रतिकूल रे ॥ श्रा० ॥ स० ॥ २ ॥ नयनिक्षेप प्रमाणनी रचना, बांधे मिथ्या मूल रे ॥ निजपररमण रूपने जाणे, मित्र शत्रु सम तुल्न रे ॥श्रा०॥स०॥३॥ परनिंदा मुखथी नवि नांखे, जाणे कर्मनी चूल रे ॥ लेशमात्र गुण परनो देखी, ग्रहण करे अतुल्न रे ॥श्र०॥स०॥४॥ पर उपगार धर्मजन पक्षी, एवा पुरुष अमूल रे॥मयाविजय ते संग करंतां, जाय अनादि चूल रे ॥ श्रा०॥ स०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सम्यक्त्वस्वरूप सञ्ज्ञाय ॥

॥ सकल रूपसें न्यारा, उसमें क्या जाने संसारा॥ ॥ ए देशी ॥ देख्या होय सो कहि समजावो, समकित केसा रंगा ॥ रूप रंग ताका बतलावो, नय तरंग ने चंगा ॥ गंगा गुण परजय सुचंगा ॥ देख्या० ॥ सम० ॥१॥द्व्याखंध अखंधित अंगा, किणविध ए फरसंगा ॥

मुज बालककूं कहि समजावे,सगुरु समज सुरंगा॥जाके घटहे ग्यान अनंगा॥देख्या०॥सम०॥२॥समकित विण किरिया नवि लेखे, मुनिवर वेश धरंगा॥अंक विना बिंदु नहिं गणना,काय किलेस ए लिंगा॥ संगा विणसे रंग प गा ॥ दे० ॥ सम० ॥ ३ ॥ उपशम क्षयउपशम ने क्षायिक, सडशठ नेद उपंगा ॥ मूल बिना शाखा न वि होवे, समकित मूल सुरंगा ॥ जाणे विरला जन को उ अंगा ॥ दे०॥ सम०॥ ४ ॥ समकित मूल कहो कुण थानक, जाको फरस अनंगा ॥ मयामुनी नव नोति मिटावे, जन्म मरन बहिरंगा॥ पावे शिवरमणी सुख संगा ॥ देख्या०॥ सम०॥५॥ इति ॥

॥ अथ नेमराजुलसझाय प्रारंनः ॥

॥ सखी आज सांजने टाणे रे, वाहालो आवे मा चता रे ॥ ए देशी॥ सखी आज राज सवारें रे, आ वे वालो तोरणें रे ॥ मोतीडे थाल नरीने रे, वधा वो चित्तचोरने रे ॥ सखी हुं जोउं निहाली रे, मो हननी मूरती रे ॥ नेम प्रनु श्याम शरीरें रे, लागी मोरी सूरती रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ १ ॥ सखी अंग दक्षिण मारां रे, नेत्र उरोज फूरे रे ॥ रंगमां नंग जे जाणुं रे, सखी आश किम पूरे रे ॥ राजिमती एह

वुं कही रे, सखीने शानमां रे ॥ प्रभुयें रथ फेर्यो रे, पडी वात कानमां रे ॥ सखी अचेत धरा ढली रे, सखी श्वास देखती रे ॥ स० ॥ आ० ॥ २ ॥ वायु चंदनादि योगें रे, राजिमती पेखती रे ॥ वाहालाने मनावी लावो रे, हा हा ए शुं कर्युं रे ॥ पशुनो साद जे सुणी रे, वाहाले मनमां धर्युं रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ३ ॥ सखी कहे सामलो एतो रे, वैरागी रंगनो रे ॥ पराणे प्रीति न कीजें रे, निभे न संगनो रे ॥ सखीनां वयण जे सुणी रे, राजिमती रोवती रे ॥ हे सखी बोल म बोले रे, आंसु मुख धोवती रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ४ ॥ म्हारे तो नेमशुं नेडो रे, बीजो सुपनें नवी रे ॥ नेमनो संग न छंडुं रे, आतमें अनुभवी रे ॥ नेमनें संयम लीनो रे, सहसावन जाइने रे ॥ राजिमती प्रभुपासें रे, चडी गिरि धाइने रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ५ ॥ गुफायें चीर निचोतां रे, कामें घणुं व्यापियो रे ॥ रहनेमी प्रतिबोधी रे, ग्यानगुण थापियो रे ॥ प्रभु पायें संयम लीनो रे, नाठी कर्म तोडीने रे ॥ अखंडानंदन में रे, मया कर जोडीने रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली ॥

॥ आगम वयण सुधारस पीजें, नरभव लाहो ली

जें जी ॥ ए देशी ॥ गुरु गुण गावो निज घरे आवो, मोतीडे वधावो जी ॥ काल अनादी भूल मिटावो, जो होय शिवपुर जावो ॥ गु० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ समता रस सागर गुण आगर, स्यादवाद मतवासी जी ॥ नयनिक्षेप प्रमाणनी रचना, जे जिन मतना जाषी ॥ गु०.॥ २ ॥ गुरु परमेश्वर गुरु बे पारस, सकल जीव हितकारी जी ॥ अढार सहस्र सीलांगना धोरी, पंच महाव्रत धारी ॥ गु ०॥ ३ ॥ समकित पीठ श्रद्धा कुंकुम रस, अनुजव मुक्ता दीजें जी ॥ चउगति चूरक स्वस्तिक कीजें, पंचमी गति फल लीजें ॥ गु० ॥ ४ ॥ जंगम तीरथ ए मुनि गावो, नहि कुमतीको दावो जी ॥ मया करी सौजाग्य विजयजी, श्रुत अनुजव रस पावो ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति श्रीमत्पंमित प्रवर पंन्यास गणी श्रीसौजाग्य विजय तच्छिष्य पंन्यास श्री प्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनि श्रीमयाविजयजी विरचित तृतीय सवाय विलासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्रीगिरिविलासः प्रारज्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥ राग काफी ॥ देख्या श्री नाजिका नंदा, बदन जेसा शारदका चंदा ॥ देख्या०॥ ए देशी ॥

गिरिवर देखकें दर्शन,मेरा दिल होत हे परसन ॥ गिरिवर० ॥ नवनय नीति अब नागी,लगन मोये गिरिवरशुं लागी ॥गिरि०॥१॥ अनंतनव सायर तट आयो, नानिसुत दर्श अब पायो ॥ सूर्यकुंम स्नान अब कीजें, मलिनता कर्म सब ढीजें ॥गिरि०॥२॥ कुर्कुटरूप चंद नरराया, इणें गिरि आइ सुख पाया ॥ अनंत मुनि आये फरसनकूं, तरन नव नाव ए जनकूं ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ मारुदेवा नंद सुखकारी, पुरुषमें आद्य अवतारी ॥ केवल पद जेह सुख लीना, प्रथम निज मात कूं दीना ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ बिरुद सुनी आज हुं आयो, मया करी दर्श अब पायो ॥ बिरह मत दीजें दर्शनकूं, नाइचंद मागत ए गुनकूं ॥ गिरि० ॥ ५ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ जिन जन्म जाणी दिसि कुमरी आवे रे॥ ए देशी ॥ गिरी नेटी आनंद अति पावो रे, नवकूपका निवासकूं गमावो रे ॥ मणि मुक्ताफल गिरिकुं वधावो रे, सूर्यकुंम जाइ शुचि दिल थावो रे ॥ अष्टद्रव्यशुं जुगादिपासें आवो रे, पूजीनाथ, शिव साथ,जग ख्यात, नृत्यगीत गवरावो रे ॥ गिरि० ॥ न० ॥ १ ॥ नवाणुं पूर्व श्री रुषन जिन आया रे,

अनंत मुनि मोक्षपद पाया रे ॥ अजितशांति समो सरण विरचाया रे, ए गिरि गुन गाइ, दुःख जाइ, सुख पाइ, अनुभव दिल लावो रे ॥ गिरि० ॥ भ० ॥ ॥ २ ॥ माता मरुदेवानंद चिरंजीवो रे, नाभिरायसुत कुलमें दीवो रे, प्रभु भेटी अमृत रस पीवो रे, चित्त धरि, मया करी, जस वरी, भाइचंद दिलध्यावो रे ॥ गिरि० ॥ भ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ दाग दिलुंदा धो दे रे, हरखें धो बीडा ॥ ए देशी ॥ जिन चरणों चित्त लावो रे, परमा नंद पावो ॥ भविजिन ॥ जि० ॥ ए टेक ॥ जूठी माया जूठी काया, कायेकुं कृपण कहावे रे ॥ परमानंद पा वो ॥ भवि० ॥ १ ॥ पारस छांडी काच ग्रहो क्युं, प्रव चन दिलमें भावो रे ॥ पर० ॥ भ० ॥ पिस्तावा पीछें बहो त करोगे, जेहथी अधोगति जावो रे ॥ पर० ॥ भ० ॥ २ ॥ नाभिराया सुत नयणें निरखो, नहिं कुमतिको दावो रे ॥ पर० ॥ भ० ॥ मया कहे गिरिवर भेटीजें, भाइचंद गुन गावो रे ॥ पर० ॥ भ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग खमायची ॥ लडक बुध मोसें कीनी रे, सि

रकी गागरियां कैसें भिनी ॥ ल०॥ ए देशी ॥ गिरीगुन गावो नवि प्रानी, परम पुरुष सुख दानी ॥ गिरि० ॥ पर० ॥ ए टेक ॥ ध्याता ध्येय एकता होवे, मन वच काय बश आनी ॥ गिरि० ॥ प० ॥ १ ॥ ए गिरि मोक्ष गये केइ कोटी, शाश्वत ए गिरि मानी ॥ गि० पर०॥ परपरिणति तजि निज घर आवो,ए पद अंतर जानी ॥ गिरि० ॥ प० ॥ २ ॥ रत्नचिंतामणि सम ए महिमा, गंमो क्युं अनिमानी ॥गिरि०॥पर०॥ मया करी गिरि फरसन पायो, नाइचंद दिल जानी ॥गिरि० ॥पर०॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ गिरिवर मनमें ध्यावो रे, सादि नंत सुख पावो ॥ गिरि० ॥ ए टेक ॥ थाल नरी मुक्ताफल लावो, गिरिवरजीकुं वधावो ॥गिरि०॥सा०॥१॥ सूर्यकुंम नाव धरी न्हावो,अनुनव दिलमें नावो ॥ गिरि०॥ सा० ॥ अष्ट सुद्रव्य जिनपूजा रचावो, ज्ञानानंद गुन गावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥ २ ॥ सूरिआनपरें नक्ति करावो, शिवरमणी घर लावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥ मया कहत गिरिवर गुन गावो, नाइचंद सुख पावो ॥गिरि०॥ सा० ॥३॥

॥ पद छठ्ठुं ॥

॥ राग भैरव ॥ ताल चोताल ॥ आदि जिनंद वृंद, कटत करम फंद, होत महा सुख कंद, गुनधर भाषो हे ॥ आदि० ॥ १ ॥ नाभिरायाके नंद, मारुदेवा उरचंद, पूजत चोसठ इंद, शिवपूर बासो हे ॥ आदि० ॥ २ ॥ ताल तंति भेद छेद, ब्रह्मादिक गावे वेद, कोउ नांहिं पावे भेद, ज्ञानको उजासो हे ॥ आ० ॥३॥ सेवक इछा उमेद, पूरन सकल भेद, मया कहे मिटयो खेद, भाइ चंद वासो हे ॥ आदि० ॥४॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ ताल सुरफाग ॥ सिद्ध गिरि शिखरें सुरवधू आवे, जिननजीके आगें बैन बजावे ॥ सि० ॥ ए टेक ॥ सप्त स्वर तिन ग्राम एकवीश मूर्छन, रागरागिणी मधुर स्वर गावे ॥सि०॥ जि० ॥१॥ संगीत गति नाटक एम करती, नमि नमि जिनजी कुं शीश नमावे ॥ कर्म निकाचित दूरें जावे ॥ जे भवि भाव धरी गुन गावे ॥ सिद्ध० ॥ जि० ॥ २ ॥ सिद्ध गिरि शिखरें ऋषभ सोहावे, देखत दर्श कुमतिमद जावे ॥ मया करी प्रभु दर्श दिखावे, भाइचंद गिरिके गुन गावे ॥ सिद्ध० ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग अंगलो ॥ वालमजी कोण तुम संगें बोले ॥ ए देशी ॥ आदि जिन दिल नर दरिसन दीजें, नेक नजर मोयें कीजें ॥ आ० ॥ तुम बिन सुख दुख अंतरगत की, किस आगें जइ कीजें ॥ आदि० ॥ नेक० ॥१॥ तुम हो सुगुण निगुण हम स्वामी, अपनो बिरुद वहीजें ॥ आदि० ॥ रामा संग रमे सुर अहोनिश, ते दिल मोहें न पतीजें ॥ आदि० ॥ ने० ॥ २ ॥ तुं नीरागी सिद्ध स्वरूपी, तुझ देखी दिल रीझे ॥आदि०॥ मया करी मोहे दर्शन दीजें, नाइचंद प्रणमीजें ॥ आदि० ॥ नेक०॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग भैरव ॥ बहार बहार गले हार भार, हेजी सइयां, लरकैयां, करत पिया जिन बैयां, मोरी बैयां ॥ ॥ बहार०॥ ए देशी ॥ समज समज मत भूले मेरे भै यां, ऐसो अवसर पैयां, हेजी कैयां, सुख पैयां, देव गुरु ऐसो अवसर लैयां ॥ समज समज मत० ॥ ॥ ऐसो० ॥१॥ अचल अबाधित जो सुख चाहे, तो गिरिवर गुन गैयां ॥ ए तीरथ भवपार उतारन, त्रीजे भव शिव लैयां ॥ स० ॥ म० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ सूर्यकुंम

नाव धरि न्हावो, कर्म मेल सब धोइयां ॥ अष्ट द्रव्य नावें जिन पूजो, रायण भेटो पैयां ॥ स० ॥ म० ॥ ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ पूरव पुण्यें ए गिरि आये, कर्म कठिण मेटैयां ॥ मया करि गिरिवर दरिसन पाये, भाइचंद सुख लैयां ॥ स० ॥ म० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग विलास ॥ जागो नवियां मोह निंद वारी, ग्यान भान उदयो सुखकारी ॥ जागो० ॥ श्रीजिन भाषित वचन विचारी, निज परसत्ता विनावकूं टारी ॥ जा० ॥ ग्या० ॥ १ ॥ ऐसो कारण कार्य निहाली, कीजें अब आतम हितकारी ॥ मया करी नव पार उतारी, भाइचंद अपनो दिल धारी ॥ जा० ॥ २ ॥

॥ पद इग्यारमुं ॥

॥ राग कालिंगडो ॥ तथा सोयणी ॥ नवियां श्री गिरिके गुन गाउ रे, गिरि गुन गाउ बहु सुख पाउ, शिवरमणी घर लाउ रे ॥ न० ॥ गि० ॥ शि० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ घर आंगन जो सुरतरु फलियो, कायकुं बन नटकाउ रे ॥ न० ॥ सरस सुरनि घृत जो होय घरमें, तो क्युं लूखो खाउ रे ॥ न० ॥ २ ॥ चिंतामणि तजि काच ग्रहो क्युं, प्रवचन दिलमें ध्याउ रे ॥

न० ॥ मया कहत ए गिरि सुखदायी, नाइचंद दिल नाउ रे ॥ न० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ राजरा नयणां मोही रे, बांको था रो कमर कटारो ॥ ए देशी ॥ राजुल रंगसें नरि परणो जिन नेम डुलारो, कुमती मत दूर करी ॥ रंग० ॥ राजु० ॥ प० ॥ कु०॥१॥ ए टेक ॥ क्षपक श्रेणी वर घोडे चडीया, शोना त्रिजग हरी ॥ अनुनव मंमप आप रूपमें, गावे सुमति सुंदरी ॥ रंग० ॥ रा० ॥ प र० ॥ कु० ॥ २ ॥ समकित मुक्ता शरधा सासू सा खी त्रिक योग करी ॥ उपशम माहारो लागे प्यारो, देखी जन नयन ठरी ॥ रं० ॥ रा० ॥ प०॥कुम०॥३॥ दानादी चउ चोरी बांधी, परणे शिवसुंदरी ॥ परमानंद कंसार आरोगे, परस्पर मुखमें धरी ॥ रं० ॥ राजु० ॥ पर० ॥ कु० ॥ ४ ॥ चिरंजीवो ए जोरी जुगमें, देखी ए प्रीति खरी ॥ मया कहत शिवमंदिर पोहोते, नाइचंद प्रीत धरी ॥ रं० ॥ रा०॥ कु०॥ प०॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥राग काफी ॥होरी॥सामपें कहियो बिनति मोरी ॥ सा० ॥ ए देशी॥ श्रीविमल गिरि रंग मचो री ॥ श्री

ऋषनजिनंदसें खेलियें होरी ॥ श्री० ॥ चिदानंदकी मोज मची हे, शिवरमनी संग जोरी ॥ आपही आपमें मग्न रहत हे, और सबनसें तोरी, जलाइ मोहकी होरी ॥ श्रीविमल० ॥ श्री ऋ० ॥ १ ॥ अनुनव अंजन केसर करुना, ज्ञान गुलालकी झोरी ॥ दया रूप पिचकारी ञिरकत, नींजे शीलरंग चोरी ॥ खेलत हे सुमता गोरी ॥ श्री० ॥ श्री ऋषन० ॥ २ ॥ रंगरंगीलो नयो हे चेतन, बजे अनहद शब्द टको री ॥ केवल पाई कर्म खपाइ, बंक कर्म गढ तोरी ॥ खेलो नवि ऐसी होरी ॥ श्री० ॥ श्री ऋ० ॥ ३ ॥ इहबिध खेलत जो कोइ प्रानी, आदिजिनंदजीसें होरी ॥ मया करी प्रनु पदवी दीजें, नाइचंद प्रीति जोरी ॥ नवनय पातक तोरी ॥ श्रीवि०॥ श्री ऋ०॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग होरी ॥ बांके मिरजाने धूम मचाइ, आज सम्मेरसें खेलुं होरी ॥ ए देशी ॥ सिद्धाचल रंग मच्योरी, ग्यानरंग खेले नविजन होरी ॥ सत्ता स्थलमें आइ बिराजे, केशर करुणा घोरी ॥ ग्या० ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ अनुनव बाग पुष्प परिमलता, मोह रायबन तोरी ॥ ग्या० ॥ तत्त्व रमण चतुराइ चित्तमें, खे

ले चेतना गोरी ॥ ग्या०॥ सि०॥२॥ प्रीति पिचकारी परम हितधारी, गुरुशब्दकी ताल टकोरी ॥ ग्या० ॥ सरधा मुकुट शील सुवस्तर, गुण गुलालकी जोरी ॥ ग्या०॥सि०॥३॥ इह विध खेलत आदी जिनंदसूं,ओर सबनमें तोरी ॥ ग्या० ॥ मया करी प्रभु मोहे खेला वो, लाइचंद प्रीति जोरी ॥ ग्या०॥ सि०॥ ४ ॥ इति

॥ पद पन्नरमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ पुरुषादानी पाया रे ॥ ए देशी ॥ आज हमारे लायग जागे, गिरिवरके गुन गाया रे ॥ आज० ॥ गु रव पुण्य उदय नयो मेरो, रसनाना रस पाया रे ॥ आज० ॥ गिरि० ॥ १ ॥ नाभिराया सुत नयणें नि रख्या, मारुदेवाके जाया रे ॥ आ० ॥ मया करी गि रिदरिसन पाया, लाइचंद गुन गाया रे ॥ आ० ॥ गिरि० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ जो लज्जा राखशो तो रहेशे रे, केशरिया वाहाला ॥ जो० ॥ ए देशी ॥ जेवो तेवो हुं तहारो रे, आदी सर दादा ॥ जेवो० ॥ कामी क्रोधी मायी लोभी, ज गमां हुं हुं नगारो ॥ एक नामनो आशरो तिंहारो, तेणें कहेवायो सारो रे ॥ आदी० ॥ १ ॥ पररमणी

परसंग रमीने, साचुं दिलमां राचुं ॥ परगुण वाख्यो दो
ष निहाल्यो, क्षण एक मन नवि मास्यो रे ॥ आदी०
॥ २ ॥ राग विषे बहु जनशुं कीधो, माया कपट विष
पीधो ॥ द्वेषें जास्यो जीव संहाख्यो, आतम गुण न सं
नाख्यो रे ॥ आदी० ॥ ३ ॥ एम अनेक अवगुण मोहें
वारो, सेवक दिलमें धारो ॥ मया करी नव पार उता
रो, नाइचंद दिल प्यारो रे ॥ आदी०॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ निर्मल होय नज ले प्रनु प्यारा ॥
सब संसारसें ए प्रनु न्यारा ॥प्र०॥ ए देशी ॥ श्रीविमल
गिरि दरिसन पाये, धन धन पूरन पुण्य सवाये ॥ श्री
वि० ॥ गिरिके गुन अनंत कहाये, रसना एक मोये बर
न्यान जाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ १ ॥ पूर्व नवाणुं वार
इहां आये, समोसख्या ऋषन्न जिन राये ॥ गिरिवर
देखतहीं उलसाये, मुक्ताफलशुं गिरिकुं बधाये, श्री
वि० ॥ धन० ॥ २ ॥ श्रीगिरि अजित शांति जिन
राये, चउमासो प्रनु इहां रहि जाये ॥ वीरजिनंद स
मोसख्या ए, सोहम इंइसुर बंदन आये ॥श्री०॥ध०॥
॥ ३ ॥ मुनि लाख एकाणुं नारदजी सीधाये, सा
दि अनंत इहां सुख पाये ॥ पुंमरिक पंच कोडि सोहा

ये, राम जरत तिन कोडि कहाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥
॥ ४ ॥ शिव सोम जसा तेर कोडि मुनि राये, थावच्चा
पुत्र सहस्र सिद्धि पाये ॥ सांब प्रद्युम श्रीसिद्ध गि
रिराये, कोडी साडी आठशुं मोक्ष सिधाये ॥ श्री० ॥
ध० ॥ ५ ॥ पांत्रीश सहस्र वसुदेव प्रियायें, कर्मक्षयें
केवल पद पाये ॥ प्रद्युमन प्रिया चुमालि सहसाये,
शुक्लध्यान श्रेणी चढ जाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ६ ॥
जाली मयाली उवियाली राये, देवकी खट नंदन सि
द्धि पाये ॥ पांमव वीश कोडी मोक्ष सिधाये, नमि
विनमि दो कोडि मुनि राये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ७ ॥
एम अनंत मुनि सिद्धगिरिरायें, अजर अमर पद
पदवी पाये ॥ शाश्वतो गिरि एही कहाये, पूरण पुण्य
सें ए गिरि आये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ८ ॥ रत्नविजय
उपदेश कहाये, मकशुदाबादसें जेटन आये ॥ धर्मचं
द सुत संघ तिलक धराये, पूरनचंद पुण्यवंत कहाये
॥ श्री० ॥ ध० ॥ ९ ॥ सिद्ध गिरि जेटी आनंद पाये,
ऋषभ जिनंदजीकी पूजा रचाये ॥ अठाइ तप गिरि
उपर रहाये, आतम अनुभवशुं लय लाये ॥ श्री० ॥
ध० ॥ १० ॥ संवत उगणी वीशामांहे, मागशिर
वदि ८८ दिवस सोहाये ॥ रथ जात्रा महोत्सव कराये,

संघ सकल दिल सहु हरखाये ॥ श्री० ॥ ध०॥११॥ मोछव करि गिरि उतरी आये, गाजते वाजते हर्ष स वाये॥ जाचक जन बहु दान देवाये, पूरनचंद पा रणुं रे कराये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ए गिरि जव्य जीव जे आये, मनवंछित फल शिवसुख पाये ॥ मया करी गिरि फरसन आये, जाइचंद गिरिके गुन गाये ॥ श्री० ॥ धनं० ॥ १३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अष्टादशम् सिद्धगिरि स्तवनं ॥

॥ मनमोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजी रे ॥ ए देशी ॥ प्रणमी पद आदि जिणंद, सिद्धगिरी गुण गावशुं रे ॥ सिद्धाचल केरी जात्र, विधिशुं कीजें जवि जावशुं रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ १ ॥ जेथी जाये ज वनां पाप, शुद्ध श्रद्धा मन संवरी रे ॥ गिरिवर नवा णुं जात्र, छठ सत्त दोय अठम करी रे ॥ प्र०॥ सि०॥ ॥ २ ॥ नवकार गणी लख सार, आत्मरूप रूद्धि वरी रे ॥ एकासणुं तप मन साख, सचित्त आशा तन परहरी रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ३ ॥ नारी नागिणी रूप निवारी, शयन संथारो धरणी करी रे ॥ रथजा त्रा प्रदक्षिणा प्रीत, ते त्रीजे जवमुक्ति वरी रे ॥ प्र० ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ साहामीवछल करी श्रीकार, दान

सुपात्रें वली दीजीयें रे ॥ पूजा प्रजावना सार, मनु अजनम लाहो लीजियें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ५ ॥ लीलाधर लखमशी घेर, जारजा धनवती धनबाइ छे रे ॥ जयकारी करतां काम, साथें जयवंत जाइ छे रे ॥ ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ६ ॥ शा जीमशी जगतिवान, संघस कलनी शोजा बने रे ॥ प्रेमाबाइ परम आनंद, जेटवा गिरिवरने मह्रोटे मनें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ७ ॥ संघ साथें सज्जन परिवार, मुंबइ बंदरथी आवता रे ॥ गिरिवर नवाणुं जात्र, शुद्ध दशा मन जावता रे ॥ प्र० ॥ ॥ सि० ॥ ८ ॥ संवत उगणीशा मांहि, छवीश कार्त्तिक शुदि पूनमी रे ॥ नवाणुं आदर कीध, जैनवाणी जेनें चित्त रमी रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ए ॥ जेटी रुषज्ज जिणंद दयाल, मनना मनोरथ सवि फल्या रे ॥ जेणें आतम साखें कीध, ते प्राणी शिवनगरी जल्या रे ॥ ॥ प्र० ॥ सि० ॥ १० ॥ मया कीजें दीनदयाल, तुम सेवा मोहे दीजीयें रे ॥ जाइचंद गिरिगुण गाय, जिनवाणी रस पीजीयें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ एकोनविंशति सिद्धगिरिस्तवनं ॥

॥ मकसी पास महाराज, आज मोहे दरिसन दीजें री ॥ ए देशी ॥ विमलगिरि दरिसन पाये री, पूरव

पुण्य पसायें ॥ विम० ॥ गिरिवर नयणें निरखतां रे, मुक्ताफलशुं वधाये ॥ विम० ॥ पूर० ॥ १॥ नाव अ नंत नयो मोये पूरन, देखत श्रीगिरिराये ॥ रसना सहस्र करुं जो तोही, उपमा कहिय न जाये ॥ वि०॥ ॥ पू० ॥२॥ पूर्व नवाणुं वार ए ।गरियें, ऋषन्न जिने श्वर राये ॥ रायण रूंख समोसस्या ए, सुर नर मुनि गुन गाये ॥ वि० ॥ पू० ॥ ३ ॥ अजित शांतिजिन साहेबा रे, चउमासुं रहि जाय ॥ वीरजिणंद समो सस्या ए, आये त्रेविश जिनराय ॥ वि० ॥ पू० ॥४॥ पुंमरीक पंच कोडिशुं रे, सिद्धा ध्यान लगाय ॥ राम नरत तिन कोडिशुं रे, पांमव मोक्ष सिधाय ॥ वि० ॥ ॥ पू० ॥ ५ ॥ नंदिपेण नारद मुनी रे, शिव पाये गि रिराय ॥ साधु अनंत मुगतें गया रे, तेहना प्रणमुं पाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ६ ॥ पंचम कालें पामवुं रे, द र्शन डुर्लन्न थाय ॥ ते मुऊ नाग्य उदय करी रे, नेटे रिखन्न जिनराय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ७ ॥ जिनवर बिंब जुहारियां रे, पूजा विविध बनाय ॥ नावसहित प्रन्नु पूजतां रे, नवनय पातक जाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ८ ॥ संवत उगणी वीशमें रे, काती पूनम कहाय ॥ रथ यात्रा करि नावशुं रे, मासंघजी मेघराय ॥ वि० ॥

॥ पू० ॥ ए ॥ वासी पूरव देशके रे, मकसुदाबाद कहाय ॥ रत्नविजय उपदेशथी रे, जेटे श्रीगिरिराय ॥ ॥ वि० ॥ पू० ॥ १० ॥ आज आनंद जयो मोये पूरन, जव्य पणुं थिर थाय ॥ दर्श मया करी दीजीयें रे, जाइचंद गुन गाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलनी पन्नर तिथियो ॥

॥ कारतकें केशरीयो मलशे ॥ ए बार मासानी देशी ॥ प्रथम जिनेश्वर पद जजियें, मोह मान मनशुं तजियें, धर्मध्यान पंथें सजियें ॥ सिद्धाचल समरन नित कीजें, अनुजव अमृत रस पीजें ॥ सिद्धा० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पडवायें परगुण लीजें, दान सुपात्रें नित दीजें, तो जगमें बहु जस लीजें ॥ सि० ॥ ॥ अ० ॥ २ ॥ बीजे बीजुं सहु जाणो, अंतर ध्यान प्रजु आणो, तो सहेजें शिवसुख माणो ॥ सि० ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ त्रीजे त्रिजुवन जिनराया, नाजिराया कुल दीपाया ॥ माता मारुदेवी जाया ॥ सि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ चोथें चार गति वारी, सकल जीवना हितकारी ॥ आप तस्या प्रजु पर तारी ॥ सि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पांचमे पंच प्रमाद तजीयें, पंच परमेष्ठी प्रजु जजीयें ॥ शिवमाला वरवा सजीयें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ छठें

छकायने पालो, छए द्रव्यगुण अजुवालो, चेतनता गुण संजालो ॥ सि० ॥ अ० ॥ ७ ॥ सातमे सात ज यें वारी, अखंम रूप प्रजुपद धारी, जविजन जजतां सुखकारी ॥ सि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ आठमे आठ करम तजीयें, मद आठे तजी प्रजु जजीयें, तो शिवमंदिर जइ गजीयें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ए ॥ नोमें नवविध ब्र ह्मचरीयें, नवपद ध्यानें नित रहियें, सत्य वचन मु खथी कहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १० ॥ दशमें दशविध यति धर्मे, देशावगासी रहो घरमे, निज गुणधारी न रहो परमें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ११ ॥ एकादश पडिमा वहीयें, मौन धरी पोसह लहियें, एकादशी महिमा बहु कहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १२ ॥ बारशें बारे व्रत धारी, देशविरति गुण अधिकारी, अरिहंत गुण पर जा उं वारी ॥ सि० ॥ अ०॥ १३ ॥ मेर तेरस मनमां ध रियें, काठिया तेर दूरें करियें, तो अष्टसिद्धि नव निधि वरियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १४ ॥ चउदश स हु तिथिमां वडी ए, मोहराय सन्मुख जइ लडियें, चउदमे गुणगाणे चडियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १५ ॥ पूनमें पूरण तिथि कहियें, सिद्ध गिरि महिमा बहु लहियें, रुषजजिणंद सनमुख रहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १६ ॥

संवत उंगणीश वीशामांये, माहाशुदि पंचमी गुण गाये, पालीताणा पुर गाये ॥ सि० ॥ अ० ॥ १७ ॥ दीपचंद सुत सवाइ, वीरचंद नरसिंह बेहु नाइ, त स आग्रहथी तिथि गाइ ॥ सि० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अहोनिश समरुं गिरिराया, मया करी दरिसन अम पाया, भाईचंद गिरिगुन गाया ॥ सि०॥ अ० ॥ १९ ॥

॥ अथ श्री नेमराजीमतीना बारमासा प्रारंभः ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे, अजितजिणंदशुं ॥ ए देशी ॥ शारदने समरी रे सदगुरुने नमी, नेम राजुल गुण गातां हरख न माय जो ॥ बार मास जेहनी सुरती स्वामी उपरें, प्रभुविरह राजुलने क्षण न खमाय जो ॥ नेम जिणंदने नमियें गांमी मद मोहने, भजतां पातक सघलां दूर पलाय जो ॥ नेम जिणंदने नमियें गांमी० ॥ ए टेक ॥१॥ ब्रह्मचारीना गुण रे केता कही जीयें, जीभ एक ने गुण अनंत न कहाय जो ॥ सिद्धि ऋद्धि घट दीसे अंतर एहने, सादी अनंतमे भांगे अनंत सुख पाय जो ॥ नेम जि०॥ भ० ॥२॥ सतियामांहे शिरोमणि राजुल जाणियें, रहनेमीने ज्ञान बोध शिवशर्म जो ॥ शीलव्रत नववाडें त्रिकरण साचवे, पतिव्रता नारी ए उत्तम धर्म जो ॥ नेम जि० ॥ भ०

॥ ३ ॥ कार्त्तिकमासें कामिनी काम कंदर्पमां, अतूल बल वीरजनो जाणो ए उतपात जो ॥ विकल अकल विण पंखी रमतां बापडां, देखी लक्ष्मणा चली सिद्धांतें वात जो ॥ नेम० ॥ न० ॥ ४ ॥ मागशिर मासें मुझ मन मलवानुं करे, प्रीतम साथें लागी पूरण प्रीत जो ॥ ध्यान एकाग्र करती निशिदिन एहनुं, जेहने लागी प्रीत ते जाणे रीत जो ॥ ने० ॥ न० ॥ ५ ॥ पोषमासें प्रभुजी पर नवि कीजीयें, पोतानी जाणी मुझ प्राण आधार जो ॥ नेह नजर कीजें रे कर ग्रहि लीजीयें, वालम विरह तणो मुझ अंतर मार जो ॥ ने० ॥ न० ॥ ६ ॥ माघमासें मन दृढ करी जादव जाणीयें, समुद्रविजय शिवादेवी मात मलार जो ॥ निरमोही न थइयें रे करुणा कीजीयें, मंदिर पधारी अंतर दाह निवार जो ॥ ने० ॥ न० ॥ ७ ॥ फागुण मासें फरती लेवे फूदडी, गावे गोरी नाचे नव नव छंद जो ॥ एहवेने आचरणें अबला एकली, फीकी लागे जिम सूरजमां चंद जो ॥ ने० ॥ न० ॥ ८ ॥ चइतर मासें चितमां चिंता ऊपजे, घणुं शुं कहियें जादव कुलना नाथ जो ॥ नाथ विना नरभव रे निःफल जाणीयें, छंमी सरवने जेहनो कीधो साथ जो ॥ ने०

॥ न० ॥ ए ॥ वइशाखें वन मोर्युं कोमल फूलडे, अंब माजें कोयल बोले अनुकूल जो ॥ नीरागीशुं रागी बंधन जे करे,पेट उलांसी पेदा कीधुं शूल जो ॥ ने० ॥ न० ॥ १० ॥ जेठ मासें जुगती जोवा एहनी, मोहन मलवा ज्युं घन चातुक मोर जो ॥ निठुर निहेजा नरने नही कीधे बने, अंतर गुह्यनो केहने कीजें सोर जो ॥ ने० ॥ न०॥ ११ ॥ आषाढें अंबरमां वादल गाहियुं, घन गरजे ने वायुतणो विस्तार जो ॥ चित्त चमके ने चिहुंदिशि चमके दामिनी,श्याम विना जे रहेवुं खांमाधार जो॥ ने० ॥ न० ॥ १२ ॥ श्रावण मासें श्रद्धा स्वामी किम रहे, बले सलिता न रहे बिहुं त्रट मांहि जो ॥ जोबननी लहेरें रे थिर किम रहीजीयें, शूल इहां ने चित्त रहे प्रनु तांहि जो ॥ने० ॥ न०॥ १३ ॥ नादरवो नर गाजे राजे रूजनी, श्याम विना सुख जाणो स्वपनामात जो ॥ नाथ विना नारीने नित उलंनडा, माननीने मन विशमी बे ए वात जो ॥ ने० ॥ न०॥ १४ ॥ आशो मासें अमने आशा एहनी,वेली वृक्ष ने क्षेत्र फल्यां सुविशाल जो ॥ वाला विना वनमांहें वसवुं ते वारु बे, नेह नजर करी प्रीतम साहामुं नाल जो ॥ ने० ॥ न०॥ १५ ॥

एम अनेक उपायें प्रभु नवी पालटे, एम करंतां आ व्यों अधिकज मास जो ॥ एम विचारी राजुल घरशुं नीकली, प्रभु वंदीने पूगी मननी आश जो ॥ ने० ॥ भ० ॥ १६ ॥ कर जोडीने राजुल विनयथी वीनवे, कृपा करी हवे दीजें शिरपर हाथ जो ॥ प्रभु हाथें ग्रही संजम शुद्ध मन भावशुं, करम खपावी पहोतां शि वपुर साथ जो ॥ ने० ॥ भ० ॥ १७ ॥ संवत उगणीश अढार आषाढी मासमां, नेम राजुलना गुण गाया बारे मास जो ॥ शुकल पक्ष पंचमी तिथी पूरण प्रेम शुं, जे जन गाशे तेहनी फलशे आश जो ॥ ने० ॥ भ० ॥ १८ ॥ ब्रह्मचारी जे ब्रह्म स्वरूपने पामशे, जे नर गावे ध्यावे ब्रह्म स्वरूप जो ॥ मया करी मोयें ब्रह्म स्वरूपने दीजीयें, भाइचंद नमे ए चौद भुवननो भू प जो ॥ ने० ॥ भ०॥१९॥ इति बारमास समाप्त ॥

॥ अथ श्रीऋषभदेव आरति प्रारंभः ॥

॥ जय जय आदि जिनंद, जय जय आदि जिनंद ॥ आदिकरण अरिहंता, सिद्धगिरि विलसंता ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नाभिराया कुलचंद जिन जी ॥ ॥ नाभि० ॥ मारुदेवाके जाया, पाया परमानंद ॥

॥ जय० ॥ आदि० ॥ २ ॥ पूरव नवाणुं वार जिन जी ॥ पू० ॥ गिरिवर फरसन आया ॥ मुनिजन शिवपाया ॥ ज० ॥ आ० ॥ ३ ॥ लोकालोकनुं लास जिनजी ॥ लो० ॥ एक समयमें अनंता, ज्ञाता द्रव्य प्रकाश ॥ ज० ॥ आ० ॥ ४ ॥ चिंतामणी सम तुंहि जिनजी ॥ चिं० ॥ कल्पवृक्ष तुं केवा, अक्षयपद देवा ॥ ज० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र जिनजी ॥ ॥ इं० ॥ करे आरति शिरनामी, पंचमी गति गामी ॥ ज० ॥ आ० ॥ ६ ॥ मया करी महाराज जिनजी ॥ ॥ म० ॥ लाइचंद गुन गाया, अविचल सुख पाया ॥ ॥ ज० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति आदिजिन आरति ॥

॥ अथ श्रीचक्केसरीनी गरबी प्रारंभ ॥

॥ मा चक्केसरी तुझ गुण गावे, सो नर नवनिधि पावे ॥ सिद्धगिरि संगें महोटा मुनिजन, तुझ गुण ध्यान लगावे ॥ मा स्वर्ग मृत्यु पाताल विषे, वास सकल ताहारो दीसे ॥ मा मुख जोइ सुर नर मन हीसे ॥ मा० ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ मा वाघ वाहन शोभा सारी, खड्ग चक्र करमां धारी ॥ मा जिनशासननें उपगारी ॥ मा० ॥ सि० ॥ २ ॥ मा जे नर नारी तुझ

ध्यावे,अविचल सुख लीला ते पावे ॥ मा दुःख दारि द्र दूरें जावे ॥ मा० ॥ सि० ॥ ३ ॥ मा शक्तिमां तुं शिरदारी, मया करी दिलमां धारी, मा नाइचंद चि त्तमां प्यारी ॥ मा० ॥ सि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ संवत् १९३५ ना ज्येष्ठ शुदि एकमनें दिवसें श्रीसिद्धाचल क्षेत्रें मुनिवेश धारण कर्यो, ते समयें कुंमलीयो बनाव्यो, ते लखीयें छैयें ॥

॥ कुंमलीया छंद ॥ श्रीआणंदजी कल्याणजी, प्र थम नमुं गुरु पाय ॥ जास प्रेरणा ब्रह्म नयो, प्रगट नान अघ जाय ॥ प्रगट नान अघ जाय, सौनाग्य विजय हुइ संपत ॥ बीज रुची दाता नये, मोह राय मद चंपत ॥ मया करी मति पूर, कृपाके कं दजी ॥ अहनिश प्रणमुं पाय, गुरु श्री आणंदजी ॥

॥ इति श्रीमत्प्रवर पंमित पन्यास गणि श्रीसौनाग्य विजयजी महाराज तच्छिष्य पन्यास श्रीप्रताप विज यजी तच्छिष्य पन्यास श्रीहीरविजयजी महाराज त च्छिष्य मुनि श्रीमयाविजयविरचितः श्रीचतुर्थ गिरिवि लासः समाप्तः ॥ तत्समाप्तौ श्रीआत्मप्रबोध नामक स्याद्वादग्रंथस्य प्रथमनागः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयभागप्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्रीतीर्थमालागर्भितश्रीसिद्धाचलरास लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदि पुरुष अकलंक जे, अगम अगोचर रूप ॥ अलख अमूरति आदि जिन, प्रणमे सुर नर भूप ॥ ॥ १ ॥ इक्ष्वागवंशें ऊपनो, नाभिनरिंद सुजात ॥ नयरि अयोध्यानो धणी, मरुदेवा जसु मात ॥ २ ॥ प्रणमी पदकज तेहनां, शारद मात पसाय ॥ सिद्ध गिरीगुण वर्णवुं, जसु समरे सुख थाय ॥ ३ ॥ गुरु विण ज्ञान न संपजे, मूरख अंध समान ॥ हृदय कमलने हितकरण, प्रगट्यो अभिनव भाण ॥ ४ ॥ सकल तीरथ शिर मुकुट ज्युं, ज्युं तारामां चंद ॥ सिद्धगिरी शिर सेहरो, सेवे सुर नर इंद ॥ ५ ॥ तेह गिरी गुण गायवा, हियडे हर्ष न माय ॥ वाणी वाक्य कृपा करो, जिव्हायें जस थाय ॥ ६ ॥ कविजन पर करुणा करी, कर मुझ मुख आवास ॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थनो, रचुं अनोपम रास ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ जंबूद्वीप लख जोयण जाण, तेहमां क्षेत्रज

अंक प्रमाण ॥ अकर्म भूमि कर्म भूमि लहुं, भरत क्षेत्रनो महिमा कहुं ॥ १ ॥ पांचशे योजन भरत प्रमाण, उपर छवीश छ कला जाण ॥ षट खंड श्री सिद्धांतें कह्या, तेह चक्रवति साधी लह्या ॥ २ ॥ ते हमां बत्रिश सहस्र छे देश, आरज साडी पचविश विशेष ॥ जिहां जिनशासन धर्म कहाय, थावर जंग म तीर्थ सुहाय ॥ ३ ॥ मगध देश नयरी राजगृही, शोभा ते अलकापुरी कही ॥ मगध देश ग्राम संख्या लहुं, क्रोडी एक लख छाशठ कहुं ॥ ४ ॥ अंग देश चंपापुरी जाण, श्रीजिनवासुपूज्य निरवाण॥ अंगदेश ग्राम गणित कहाय, लाख पंचावन तेहिज थाय ॥ ॥ ५ ॥ तामिल नगरी वंगज देश, लाख अढार जि हां ग्रामविशेष ॥ काशीदेश वणारसी धाम, पार्श्व नाथ जन्म्या जे ठाम ॥ ६ ॥ जिहां छे नयर ग्राम अति घणा, संख्या उंगणी लाखज गण्यां ॥ कोशल देश साकेतन नयर,जिहां बहु ग्राम अनोपम सयर ॥ ॥ ७ ॥ सहस नवाणुं संख्या कही, प्रवचन सारोद्धा रथी लही ॥ कलिंग देश कंचनपुर शहेर, भविजन करता धर्मनी लहेर ॥ ८ ॥ कलिंग देश बे लाखज गाम, श्रीजिनवरनां बहु छे धाम ॥ कुरु देश नयरी

गजपुरी, शांतिजिनंद ज्यां चक्रेश्वरी ॥ ए ॥ ग्रामत
णी ते संख्या लहुं, ब्याशी लाख उपर वली कहुं ॥
सहस्र वीश शत पंच प्रमाण, कुरुदेशनी संख्या जाण
॥ १० ॥ सोरीपुर नयर कुशावर्त्त देश, जिहां ठे ग्राम
नयर सुविशेष ॥ लाख एक तेंतालीश सेहेस, एहवा
आरज कहीयें देश ॥ ११ ॥ देश पंचाल कंपिलपुर
सार, सुधर्मि श्रावक व्रत धार ॥ त्रण लाख त्रेशठ
हजार, ग्राम पंचाल देश निरधार ॥ १२ ॥ जंगलदेश
अहिछत्ता नयर, तेह देशमां बहु ठे शहर ॥ ग्राम त
णी संख्या ते थाय, पीस्तालीं सहस एक लाख कहा
य ॥ १३ ॥ मिथिला नगरी देश विदेह, ग्राम तणी
संख्या कहुं तेह ॥ गज सहस संख्यायें जाण, जेह
सिद्धांत कहे परिमाण ॥ १४ ॥ कोसंबी नगरी वछ
देश, ठठा जिन कल्याण विशेष ॥ सहस अठावीश
ग्राम कहाय, ज्यां जिनवर आणा वरताय ॥ १५ ॥
नहिल पुर ने देश मयछ, श्रीजिन आणा पाले सय
ल ॥ सहस सितेर ग्राम ते देश, आगें कहुं वली देश
विशेष ॥ १६ ॥ मछ नगर ने देश वैराट, पांमव गुप्त
रह्या जे घाट ॥ सहस अठावीश ग्राम ते देश, शो
ना तेहनी अति अ विशेष ॥ १७ ॥ शुक्तिमती नय

री दशारणदेश,नर नारी धरे शीयल सुवेष ॥ एहवा देश ते उत्तम जाण, सहस अढार ते ग्राम प्रमाण॥ ॥ १८ ॥ देश शांमिल्य ने पुर नंदन, हरखें जन प्रभु निरखे वदन ॥ सहस एकवीश ते ग्राम कहाय, शां मिल्य देशनुं मान सुहाय ॥ १९ ॥ वरुण नयर वछ देश ते सार, श्रावकजन द्वादश व्रत धार ॥ ग्राम देशमां सहस चोवीश, जन सुखीया वसे सयल जगीश ॥ २० ॥ वीतभय पाटणपुर सिंधुदेश, जिहां जिन बिंब प्रासाद विशेष ॥ षटलख ऊपर ग्राम सुहाय, एंशी सहस शत पंच कहाय ॥ २१ ॥ शुक्तिमती नयर ने देश विदर्भ,जिहां मद आठ तणो नहिं गर्व ॥ सहस बेंताली तेहिज तणा, विदर्भ देशनां ग्रामज घणां ॥ २२ ॥ मथुरा नगरी देश शूरसेन, जिहां कुव्यसन तणुं नहिं चेन ॥ देश ग्राम अड सहसज धार, शूरसेन देश ते सार ॥ २३ ॥ पापा नगरी भृंगी देश, जिहां नही पाप तणो परवेश ॥ छत्रीश सहस ग्राम ते जाण, एहवां आरज देश प्रमाण ॥ ॥ २४॥ भंगदेश ने मारु पूर, दानादिक गुणे वर्त्ते शूर ॥ सहस नयन शत वेद सुहाय, ग्राम उपर पच वीश कहाय ॥ २५ ॥ सावछीपुर देश कुणाल, त्रीजा

जिन कल्याण रसाल ॥ ग्राम कहुं त्रेशठ हजार, श्रावक जन समकित व्रतधार ॥ २६॥ नयर कोटी वृद्ध देशज लाट, तेह देशनो उत्तम घाट ॥ ग्राम तणी संख्या ले घणी, सप्त लाख सहस तेरज जणी ॥ २७ ॥ पूरी सेतंवि केकय देश, राय प्रदेशी केशी उपदेश ॥ पंचवीश सहस आठशें ग्राम, अर्द्धो आरज देश तेठाम ॥ २८ ॥ सोरठ देश ने द्वारामती, जिहां राय श्रीलछीपति ॥ षटलख आठ सहस पर कहुं, पंचशत त्रेवीश वली लहुं ॥ २९ ॥ ग्राम देशनी संख्या कही, ते सिद्धांत मांहेथी लही ॥ उत्तम देशमां सोरठ देश, जिहां सिद्धाचल तीर्थ विशेष ॥ ३० ॥ प्रथम ढाल ए पूरण थइ, लाइचंद आग्रहथी कही ॥ सोरठ देशनो महिमा कहुं, जेहथी आनंद अधिको लहुं ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रमांहि नवकार जिम, सुरगण मांहे इंद ॥ देशमां सोरठ देश ते, जिम तारामां चंद ॥ १ ॥ गंधहस्ति गजमां वडो,पंखीमां जिम हंस ॥ मृगमांहे कस्तूरीयो, कुलमां रिखभनो वंश ॥ २ ॥ रत्नमांहे जिम सुरमणी, सरिता मांहे गंग ॥ तिम ए देश अधिक कह्यो, सिद्धगिरि तणे प्रसंग ॥ ३ ॥ व्रतमांहि

ब्रह्मव्रत कह्युं, देवमांहे अरिहंत ॥ लब्धिवंतमांहे व डो, श्रीगौतम गुणवंत ॥ ४ ॥ सोरठदेश शोजा घणी, कहिशुं आगें तेह ॥ श्रोताजन एकाग्रतें, सांजलजो धरि नेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ देश मनोहर मालवो ॥ ए देशी ॥

सोरठ देश सोहामणो, देखी रीझे मन्न रे ॥ तेह देशमां दीपतां, कह्यां वली पंच रतन्न रे ॥ सोरठ० ॥ १ ॥ प्रथम रयण सिद्धगिरि कह्युं, तारण जवजल तीर रे ॥ जव्य अनंत मुगतें गया, समोसर्या जिहां वीर रे ॥ सोर० ॥ २ ॥ त्रण कल्याणक नेमनां, राजिमती जरतार रे ॥ रहनेमि राजिमती तिहां, पाम्या जवनो पार रे ॥ सोर० ॥ ३ ॥ परवत शोजा अति घणी, उंचपणे उत्तंग रे ॥ देव घणा वासो वसे, तेह गिरीने श्रृंग रे ॥ सोर० ॥ ४ ॥ सहसा वन सोहामणुं, विधविध वृक्ष अपार रे ॥ नेमजिणंद समोसर्या, बीजुं रत्न गिरनार रे ॥ सोर० ॥ ५ ॥ सलिता सोहे अतिघणी, सोरठ देश मझार रे ॥ अहनिश नीर वहे सदा, पंथीजन हर्ष अपार रे ॥ सोर० ॥ ६ ॥ तेहमां त्रटिनी निर्मली, नामें शेत्रुंजी जेह रे ॥ कर्म मलिन दूरें करे, न्हातां निर्मल देह रे ॥ सोर० ॥ ७ ॥

त्रण रत्न ए अति नलां, ध्यातां शिवसुख लेह रे ॥ लल्लना वाजी सोहामणा, दोय रतन हवे केह रे ॥ सोर० ॥ ८ ॥ स्त्रीरूपें अति घणी, जे उरवशी नारी रे ॥ रूप कलागुण देखीनें, गइ सुरलोकें हारी रे ॥ सोर० ॥ ए ॥ आनन शोना देखीने, शशी वेगो जइ व्योम रे ॥ लांबी वेणी विलोकीनें, नोरिंग पेगो नोम रे ॥ सोर० ॥ १० ॥ नयण कमल दल पांखडी, अर्धचंद सम नाल रे ॥ दीप शिखासी नासिका, अधुर प्रवाली लाल रे ॥ सोर० ॥ ११ ॥ दंत कले दामिनी, कंठकपोत समान रे ॥ स्तन जंबीर फल जाणीयें, मल्लोदरी मृडु प्रमान रे ॥ सोर० ॥ १२ ॥ लंक कटी सम केसरी, जंघा कदली स्तंन रे ॥ गज गति चालें गुण नरी, स्त्री रत्न कह्युं रंन रे ॥ सोर० ॥ १३ ॥ वाजी रतन कहुं पांचमुं, जाति अनेक कहाय रे ॥ ऐराकी आरबी हंसला, लहुकन्ना कंबोजी थाय रे ॥ सोर० ॥ १४ ॥ अश्वजाति अनेक कही, सोरठ देशें लहीयें रे ॥ हय जिनदास तणो कह्यो, पंचमुं रत्न ते कहियें रे ॥ सोर० ॥ १५ ॥ यतः ॥ सौराष्ट्रे पंच रत्नानि, नारीनदीतुरंगमाः ॥ चतुर्थः श्री आदिनाथो, नेमिनाथश्च पंचमः ॥१॥ ढाल पूर्वली ॥

सोरठ देश शोना घणी, वरणी मुखथी न जाय रे ॥
लेश मात्र वर्णन करुं, पुण्ये फरसज थायं रे ॥ सोर०
॥ १६ ॥ तेह देशमां दीपतुं, देखी उपजे आनंद रे ॥
पालीताणा पुर जाणीयें, जिम तारामां चंद रे ॥
सोर० ॥ १७ ॥ ते पुर शोना वरणवुं, सुणजो श्रोता
तेह रे ॥ मयाविजय मुनि ए कही, बीजी ढाल ससनेह
रे ॥ सोर० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पालीताणा पुरतणी, रूपम अतिहि कहाय ॥
गिरिवर तणा प्रसंगथी, शोना कहिय न जाय ॥१॥
वापी कूप ने वाटिका, त्रटिनी सर सोहाय ॥ गिरि
वर शोना देखतां, हैडुं हर्षित थाय ॥ २ ॥ वरण
अढार तिहां वसे, सद्जन सुखिया सोय ॥ नगर ठेश्रं
तां जे वसे, डुःख नवि जाणे कोय ॥ ३ ॥ शत्रूकार
जिहां घणा, वली घणी धर्मशाल ॥गोहिल तखत बिराज
ता, शूरसिंह नूपाल ॥ ४ ॥ सप्त व्यसन जेणें वारियां,
अरियण शिर जे काल ॥ दयाधर्म दानें अधिक, प्रजा
तणा प्रतिपाल ॥ ५ ॥ तेह नयरने परिसरें, श्रीसि
द्धाचल तीर्थ ॥ जिणे ए गिरि नेट्यो नहीं, मणुअ ज
नम गयो व्यर्थ ॥ ६ ॥ नादीनंत ए तीर्थ ठे, जे

सम अवर न कोय ॥ मन वच कायें सेवियें, समकित निर्मल होय ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ए तीरथ तारुं ॥ ए देशी ॥

॥ हवे श्रीपालीताणा ग्राम, संघ जात्रानुं मुकाम रे ॥ ए तीरथ नमीयें ॥ प्रथम जिणंदनी आज्ञा लइ ने, संघ जात्रा करे गिरि जइने रे ॥ ए. तीरथ नमीयें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम देरासर प्रेम प्रकाशी, दीवबंदरना रहेवासी रे ॥ ए ती० ॥ वीशाश्रीमालि तपगछ मांहे, रूपचंद नीम उछाहें रे ॥ ए० ॥ २ ॥ संवत अढार सतरनी शाल, थापी आदिजिन सुविशाल रे ॥ ए० ॥ उपाशरो तपगछनो कीधो, पुण्य बांधी जस लीधो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ बीजुं घर देरासर जाणुं, पास प्रभुनुं वखाणुं रे ॥ ए०॥ सूरती हेम कोर बाइयें कीधुं, आतम कारज सीधुं रे ॥ ए० ॥४॥ दोय देरासरे प्रतिमा कहियें, एक शो एकविश लहीयें रे ॥ए०॥ पंचवीश धातु बिंब बिराजे, ॐकार ह्रींकार गाजे रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ एक कंचन एक फटिक रतननुं, पंच सिद्धचक्र धातुनां रे ॥ ए० ॥ पंच तीर्थी इहां दश धातुनां, सात सिद्धचक्र रूपानां रे ॥ ए०॥ ॥ ६ ॥ गौतम स्वामी नमुं एक वेगा, पगलां जोडी ने

त्रण दीठा रे ॥ ए० ॥ श्रुतधर दाता सुर गुण गाता, प्रणमुं सरस्वति माता रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ ए आदें देवी वर चार, शासन चक्र उद्धार रे ॥ ए०॥ एक शो अठो तर अंकनी राहें, गाम पालीताणा मांहे रे ॥ ए० ॥ ॥ ८ ॥ गाम बाहिर एक चौमुख लहियें, केशवजी ना यकनां कहियें रे ॥ ए० ॥ संवत उगणी एक वीशनी शालें, चार शाश्वत नमवा चाले रे ॥ ए० ॥ ए ॥ प्रति मा एक शो नेर बिराजे, पंच तीरथ चार छाजे रे ॥ ए० सिद्धचक्र वर चार सोहावे, पाडुका पट एक राजे रे ॥ ए० ॥ १० ॥ एक धातुनी प्रतिमा लहियें, अंक समु च्चय कहियें रे ॥ ए० ॥ एकशो त्रेवीश सर्व मलीनें, हरखें वंदवा जइयें रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ तपगछ खरतर अंचल केरा, तीन उपाश्रय हेरा रे ॥ ए०॥ आणंदजी कल्याणजी केरुं, श्रीसंघनुं नाम चलेरुं रे ॥ ए० ॥ ॥ १२ ॥ धर्मशाला सत्तावीश जाणुं, हवे गामथी बा हिर वखाणुं रे ॥ ए० ॥ ढाल त्रीजी पुर वर्णन लहियें, मयाविजय कहे कहियें रे ॥ ए० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गाम तलाटी दो विचें, धनुष पांचशें थाय ॥ जाड दोय शो उपरें, पंचोतेर सोहाय ॥ १ ॥ पांच

देहरी इम अनुक्रमें, वावडी त्रण्य कहाय ॥ ललिता सर इम जाणीयें, आदि अंत ते थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे, अजित जिणंदशुं ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम तलाटी शोभा सुंदर देखीने, केतकी जाय गुलाब आदि छे बाग जो ॥ यात्राना परिश्रम थी इहां विश्रामता, पयपान ने संबल तणो छे भाग जो ॥ आदिजिनने नमवा अति कलट नरें, नमतां पातक सघलां दूर पलाय जो ॥ आदिजिनने नमवा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आदि तलाटी वंदन कीजें भावशुं, बावीश देहरी जिन नमीयें प्रभु पाय जो ॥ वाम दिशायें शेठ हेमाभाइ थापीया, संवत अढार नेव्याशी शालज मांय जो ॥ आदि० ॥ २ ॥ दक्षिण दिशियें पाडुका लींबडी नयरना, थापी वीर चंद भाइचंदें सार जो ॥ अनुक्रमें वंदी इम चढवुं शिवश्रेणियें, भव्यजीवने एह गिरि आधार जो ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ प्रथम भरत ने नेमजिणंदनी पाडुका, कलि कुंम पारस आदि छे तिहां चौद जो ॥ देहरी तेर गला कंम सुधी जाणीयें, चार शाश्वतां वांदो मनने मोद जो ॥ आ० ॥ ४ ॥ इंगलाजथी मान मोडीयें त्यां

लगें, चडवाने पगथीयां त्रीश एकशत जो ॥ ढाला कुंमथी चडवुं छे दक्षिण दिशें, जिनेंद्र टूकमां वंदी कीजें नृत्त जो ॥ आ० ॥ ५ ॥ म्होटी देह्री एक न्हानी एकवीश छे, पास प्रभु पद्मावती थापी सार जो ॥ संवत उंगणीश आठनी शालें राजता, विजय देवेंद्र सूरीश्वर ज्ञान दातार जो ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक गौतम मूरति प्रमुख मुनिनी पाडुका, कुंम एक ने बा ग एक श्रीकार जो ॥ हवे आगल हनुमान धारायें जावतां, षट देह्रीने मुनि नव काउस्सग्ग धार जो ॥ आ० ॥ ७ ॥ पगलां जोडी सातज प्रणमुं प्रेमशुं, सर्व मली षट कुंमज निर्मल नीर जो ॥ चढवाने वे श्रेणी त्यां थइ संचरो, मन वच काय करी वश थइयें वीर जो ॥ आ० ॥ ८ ॥ जाली मयाली ने उ वयाली वांदीने, देवकी षटनंदनने निरखो नयण जो ॥ दृष्टी गोचर जे जे मुजने आवीया, ते ते उज्जट आणी गाया वयण जो ॥ आ० ॥ ए ॥ ए तीरथ गुण वर्णन केतां कीजीयें, गुण अनंत तणुं ए उत्त म धाम जो ॥ ढाल चोथी ए पूरण गाई प्रेमशुं, म याविजयनुं सीधुं आतम काम जो ॥ आदि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध क्षेत्र ए शाश्वतुं, मानुं एहज न्याय ॥
राम पोलमां पेसतां, हैडुं हर्षित थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ विमलवसी हवे वंदीयें ॥ मनमोहन मेरे ॥ नाभिनरिंदज जात ॥ म० ॥ युगलाधर्म निवारीया ॥ ॥ म० ॥ मरुदेवा जसु मात ॥ म० ॥ १ ॥ लाख चोराशी पूर्वनुं ॥ म० ॥ आयु जास विख्यात ॥ म० ॥ पांचशें धनुष्यनी देहडी ॥ म० ॥ सुरवधु मली गुण गात ॥ म० ॥ २ ॥ वीश लाख पूरव लगें ॥ म० ॥ कुंअर पणे प्रभु सार ॥ म० ॥ राज भार प्रभु भोगव्यो ॥ म०॥ लाख त्रेशठ सुखकार ॥ म० ॥ ३ ॥ एक लाख पूरव कह्युं ॥ म०॥ चारित्र खांमाधार ॥ म०॥ लोकांतिक सुर वयणथी ॥ म० ॥ ग्रही ठंमी राज भार ॥ म० ॥ ४ ॥ द्वादश मासें पारणुं ॥ म० ॥ इक्षुरसनुं कीध ॥ म०॥ केवल द्रव्य उपार्जिने ॥ म० ॥ मरुदेवि मातने दीध ॥ म० ॥ ५ ॥ पूर्व नवाणुं आवीया ॥ म० ॥ दादा दीन दयाल ॥ म० ॥ फागुण शुदी आठम दिनें ॥ म० ॥ एहज तिथि गुणमाल ॥

॥ म० ॥ ६ ॥ गणधर चोराशी थया ॥ म० ॥ ज्ञान तणा नंडार ॥ म०॥ संघ चतुर्विध थापियो ॥ म०॥ नविजन प्राण आधार ॥ म० ॥ ७ ॥ विमल वसीमां विराजीया ॥ म० ॥ मंडप देव विमान ॥ मन० ॥ मानुं ए मेरु हसे ॥ म० ॥ बेग त्रिनुवन नाण ॥ ॥ म० ॥ ८ ॥ प्रथमोद्धार नरतें कस्यो ॥ म० ॥ अनुक्रमें थया तिहां बार ॥ म० ॥ संवत एक अवलंतरें ॥ म० ॥ थयो तेरशमो उद्धार ॥ म० ॥ ९ ॥ जावड शायें करावीयो ॥ म० ॥ एह प्रासाद उत्तंग ॥ म०॥ आज लगें एहवो रह्यो ॥ म० ॥ देखत अधिक उमंग ॥ म० ॥ १० ॥ संवत पनर सत्ताशीयें ॥ म० ॥ करमाशायें कीध ॥ म०॥ शोलशमा उद्धारनी ॥ म०॥ प्रतिमा वंदी सुख लीध ॥ म० ॥ ११ ॥ पंचम काले प्राणीने ॥ म० ॥ तरवा नवजल नाव ॥ म० ॥ कारणें कारज नीपजे ॥ म० ॥ आतम साधन दाव ॥ ॥ म० ॥ १२ ॥ पंचावन जिन बिंबने ॥ म० ॥ नमीयें गंनारामांहे ॥ म० ॥ रंग मंडप नेवुं जिना ॥ ॥ म० ॥ ॐकार ह्रींकार ते जांहे ॥ मन० ॥ १३ ॥ प्रतिमा एक पंच तीर्थिनी ॥ म० ॥ नमि विनमि का उसग्गिया दोय ॥ म० ॥ नाजि मरुदेवी तणी ॥म०॥

गयवर खंधे जोय ॥ म० ॥ १४ ॥ हवे उपरली नूमि का ॥ म० ॥ पंचाशी नमुं पाय ॥ म० ॥ गौतम महालक्ष्मी तणी ॥ म० ॥ देखंतां दुःख जाय ॥ म० ॥ ॥ १५ ॥ तपस्वी मुनि दोय शोनतां ॥ म० ॥ दो जोडी पगलां सार ॥ म० ॥ तपसी दो मंम्प विषे ॥ ॥ म० ॥ सवि त्राणुं अंक निरधार ॥ म० ॥ १६ ॥ अधो ऊर्ध्व बेहु मली ॥ म० ॥ बशें तहोंतेर ते गाय ॥ ॥ म० ॥ तीर्थेश्वरने वंदीया ॥ म० ॥ हवे परिकर वंदाय ॥ म० ॥ १७ ॥ वर पकडी बेसी रहियें ॥ म० ॥ तो जाने आरीसाय ॥ म० ॥ ते माटे हवे वरणवुं ॥ ॥ म० ॥ प्रणमी आदिजिन पाय ॥ म० ॥ १८ ॥ देरासर उगणीश छे ॥ म० ॥ देहरी बशें ने सात ॥ म० ॥ दोय हजार नवशें नलां ॥ म० ॥ पंचाणुं नमुं प्रनात ॥ म० ॥ १ए ॥ काउसग्गीया तेत्रीश छे ॥ म० ॥ सत्तावीश साधु सुजात ॥ म० ॥ आदि गणधर मुनि तणा ॥ म० ॥ एक सहस सय सात ॥ म० ॥ २० ॥ सिद्धचक्र वर चार छे ॥ म० ॥ धातुनी प्रतिमा चार ॥ म० ॥ ढाल पांचमी ए कही ॥ म० ॥ मयाविजय सुखकार ॥ म० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ अठावन पगलां नलां, नाभि मरुदेवी मात ॥ युगलिक हस्ति एक नलो, आगें कहुं विख्यात ॥१॥ गणपति अन्न पूर्णेश्वरी, देवी बीजी चार ॥ दिगपाल मूरति सोहामणी, शेवशेगणी सार ॥ २ ॥ पुंमरीक गणधर प्रमुख, देव देवी मनुहार ॥ अंक समुच्चय हवे कहुं, हस्तिपोल प्राकार ॥ ३ ॥ चार हजार ने आवशें, बावन हाथी पोल ॥ सुरडुम रायण देखिनें, मन उपजे कल्लोल ॥ ४ ॥ ए तीरथ ठे शाश्वतुं, पूर्वे नवाणुं वार ॥ आदि जिणंद पधारिया, आगें कहुं विस्तार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

॥ मोरा आतमराम, कुण दिन शेत्रुंजे जाशुं ॥ ए देशी ॥ मोरा आतमराम, ए तीरथ ठे वारू ॥ आगें अनंता ए गिरि आया, अजरामर पद सारु ॥मोरा० ॥ १ ॥ चंद नरिंद आनापुर स्वामी, मायें कुर्कुट कीधो ॥ ए तीरथने प्रनावें इछित, सूरजकुंम जस लीधो ॥ मो० ॥ २ ॥ शुकराजा शुन ध्यानें ध्यायो, पूरव प्रेम प्रयोगें ॥ नमिविनमी विद्याधर राजा, दो कोडी मुनि जोगें ॥ मो० ॥ ३ ॥ लाख एकाणुं ना

रदजी सार्थे, अविचल पदवी पाया ॥ षट नंदन इहां कर्म खपाया, देवकी मातना जाया ॥ मो० ॥ ४ ॥ वीश कोडीशुं पंमव पांचे,अजरामर पद पावे ॥ राम नरत त्रण कोडी मुनिशुं, कर्मक्षयें शिव जावे ॥ मो० ॥ ५ ॥ अजित शांति चोमासूं कीधुं, देव घणा उबरंगें ॥ मणिमय तोरण मंमप रचना, एह गिरिने शृंगें ॥ मो० ॥ ६ ॥ वीर जिणंद समोसर्या ए, वांदवा प्रथम ते इंद ॥ प्रनु मुख वर्णन सांजली मनमां, नही को एहवो गिरिंद ॥ मो० ॥ ७ ॥ सांब प्रद्युम्न ए पण सिद्धगिरिरायें, कोडी साडी आठशुं आये ॥ जालि मयालि उवयाली राय, अगुरु लघुपद पाये ॥ मो० ॥ ८ ॥ एम अनंता मुनि ए तीर्थें, शाश्वतपद सुख लीधुं ॥ अल्पबुद्धि वर्णन किम कीजें, लेश मात्र इहां कीधुं ॥ मो० ॥ ए ॥ एकवीश नामें ए गिरि ध्यावो, शत्रुंजय गिरि पहेलो ॥ बाहुबलि टुक नाम ए बीजुं, नही समरे ते घेलो ॥ मो० ॥ १० ॥ मारु देवीने पुंमरीक गिरि, रैवत गिरि विशराम ॥ विमलाचल सिद्धराज नगीरथ, सिद्धक्षेत्र शुन गाम ॥ मो० ॥ ११ ॥ सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल सुप्रसिद्ध ॥ शतकूट टंक ने कोडि निवासो, जसु समरे सु

ख लीध ॥ मो०॥ १२ ॥ कदंबगिरि ने लोहित नामें, तालध्वज पुण्यराश ॥ महाबल दृढशक्ति ए एकवीश, आतम कीजें निवास ॥ मो० ॥ १३ ॥ आ कालें प ण ए तीरथनो, जाणी लाज अपार ॥ जिनप्रासाद नवीन निपाया, आगल कहुं ते विचार ॥मो०॥१४॥ हाथी पोलथी बाहिर जातां, दोय जिन घरनी उल॥ संप्रति प्रमुखें कस्यां जिनमंदिर, पूर्वदिश वाघेण पोल ॥ मो० ॥ १५ ॥ देरासर एकतीस समुच्चय, देहरी पंचाणुं जाण ॥ आलीयें जालीयें वली मयालीयें, संख्या कहुं ते प्रमाण ॥ मो० ॥ १६ ॥ तेरशें एकोते र नाथ बिराजे, धातुना बावन्न ॥ सिद्धचक्र वर शोल सोहावे, पंच मेरु मान्युं मन्न ॥ मो० ॥ १७ ॥ काउ सग्गिया एकवीश ते जाणो, पगलां उगण पचाश ॥ तपसी मुनिवर दोयने वंदी, चोरी नेम निवास ॥ मो० ॥ १८ ॥ अढीद्वीप लोकनाल अलंकृत, स्त्री ए क काउसग्ग देखी ॥ पुण्य पाप प्रवेश सांढियो, देवी चार गवेषी ॥ मो० १९ ॥ यक्षनी मूरति त्रण प्रमा णी, शेठ शेठाणी षट जाणी ॥ टांकां त्रण प्रभुजी पखालन, निर्मल जरियां पाणी ॥ मो० ॥ २० ॥ शा सननी रखवाली दोये, चक्रेश्वरी सुखकारी ॥ वाघ

वाहन शोना अतिसारी, खड्गचक्रकरधारी ॥ मो०
॥ २१ ॥ सूरज ईश्वर नीम कुंमने, नोघण कुंमते चा
र ॥ शिवलिंग ए सूरज कुंमें, हनुमान वाघण बे बार
॥ मो० ॥ २२ ॥ अंक समुच्चय कहुं एहनो, पन्नरशें
पीस्ताली ॥ चार वृक्ष बे आदि अंतें, इण तीरथ ला
गी ताली ॥ मो० ॥ २३ ॥ वाघण हार्थी पोल म
लीने, विमलवसी कहेवाय ॥ ढाल बही ए पूरण
प्रेमें, भयाविजय सुखदाय ॥ मो० ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदि खंम एक वरणव्यो, बाहेर खंम बे आ
ठ ॥ तेहमां चउ मुख आद्य बे, देखो शीला पाठ ॥
॥ १ ॥ अमदावाद खरतर गछें, ज्ञाति लघु पोरवा
ल ॥ शिवासोमजी जाणियें, मोह चोर दियो ताड
॥ २ ॥ न्यायें इव्य उपार्जिने, कीध प्रासाद उत्तंग ॥
नलिनीगुल्म विमान ज्युं, दीसंतो अति चंग ॥ ३ ॥
संवत शोल पंचोतरें, चउमुख स्थापन कीध ॥ तीर
थ महिमा अनुक्रमें, वृद्धि करी जस लीध ॥ ४ ॥
आदि ब्रह्मा एह बे, बेठे ध्यान लगाय ॥ देखत मु
द्रा नाथकी, पाप करम मिट जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सलूणानी देशी ॥ खरतर वसी हवे वरणवुं रे,जाणवा जिनघर श्रेण ॥सलूण॥ काल अनादि हुं नम्यो रें,दीठो नही ए नेण ॥ स० ॥ ए गिरिवर गुण गावतां रे,पाप कर्म होय क्षीण ॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ देहरा उगणीश जाणीयें रे, देहरी सत्तावन सार ॥ स० ॥ संवत उगणी एकवीशमां रे, माघ सप्तमी गुरुवार ॥ स० ॥ ए गिरि० ॥ पाप० ॥ २ ॥ अंजन शिलाकायें करी रे, केशवजी नायकेन ॥ स० ॥ अभिनंदन पधरावीया रे, देखत विकसित नयन ॥स०॥ ए गि० ॥ पा० ॥ ३ ॥ आलीयें मयालीयें जालीयें रे, नव शें चालीश बिंब ॥ स० ॥ धातुनी त्रेशठ कही रे, सिद्धचक्र पंच अंब ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ ४ ॥ पंच तीरथ एक रजतनी रे, सिद्धचक्र तेम जाण ॥ स० ॥ मरुदेवा एक हस्तियें रे, साधु पंच सुजाण ॥ स० ॥ ए गि०॥पा०॥५॥ बहेंतालीशशें उपरें रे,चुम्मालीश वली तेह ॥स०॥ पगलां जोडी शोभतां रे,प्रणमीजें ए नेह ॥ स० ॥ ए गि०॥ पा० ॥ ६ ॥ गोमुख कवड ए चार छे रे,चक्रेश्वरी दो जाण ॥ स० ॥ शेठ शेठाणी चारशुं रे, समुच्चय अंक प्रमाण ॥ स० ॥

ए गि० ॥ पा० ॥ ७ ॥ बावनजों उपर कहुं रे, एको तेर ते ठाय ॥ स० ॥ चोकीयें पीर अंगारशा रे, चादर संग चडाय ॥ स० ॥ ए गि० ॥ ० ॥ पंडव टूक ते पास छे रे, पांचे पांडव जोय ॥ स०॥ कुंता ने डौपदी नमो रे,सतीय शिरोमणी सोय ॥स०॥ एगि० ॥पा०॥ए॥ संवत सतर अठ्याशीएं रे, थाप्या पांडव पंच ॥ स० ॥ दलीचंद कीकायें कस्यो रे, पुण्य धरम नो संच ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १० ॥ तेह टूकमां शोजतुं रे, देहरुं एक रसाल ॥ स० ॥ अचल गछमां शोजता रे, ज्ञातें श्रीसीमाल ॥ स० ॥ एगि० ॥ पा० ॥ ११ ॥ संवत अढार ने आठमां रे, खुशालचंद माह्या जाइ ॥ स० ॥ सहस्र कूट तिहां शोजतो रे, कीधी सुकृत कमाइ ॥ स० ॥ ए गि० ॥पा०॥१२॥ नींते मेरुनुं पाटीयुं रे, समोसरण एक धार ॥ स०॥ लोकनाल एक तेहमां रे, सिद्धचक्र एक सार ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १३ ॥ अंक समुच्चय हवे कहुं रे, एक सहस दोय सत्त ॥ स० ॥ मनोहर आंबली वृक्ष छे रे, कीजें इहां गीत नृत्त ॥ स० ॥ ए गि० पा० ॥ १४ ॥ खरतरवसी परसंगमां रे, पांडव टूंक

ते गाइ ॥ स० ॥ ढाल सातमी ए कही रे, मया विजय सुखदाइ ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा०॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति जिनेसर शोलमा, अचिरा मात मलार॥ विश्वसेन कुल ऊपना, नयरी हथिणा सार ॥१॥ मृगलंछन प्रनु चरण छे, काया कंचन वान ॥ पूरव नव पारेवडो, ऊगार्यो नगवान ॥ २ ॥ छीपा वसी विराजीयां, देरासर त्रण सार ॥ परिकर वंदन कारणें, देहरी दश तस लार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ श्रीयुगमंधरने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ छीपावसी वंदन कीजें, मणुअ जनम लाहो लीजें, ए गिरिवर ध्यावो प्राणी, एम कहे केवलनाणी रे ॥ छीपा० ॥ १ ॥ काल अनंतो हुं नमीयो, मिछामतिमां बहु रमीयो, विषयादिकने नवि दमीयो रे ॥ छीपा० ॥ २ ॥ मणुअ जनम डुर्लन लाधो, सुकृत पुण्य अधिक वाध्यो, देवगुरु धर्म अब साध्यो रे॥ छीपा० ॥३॥ देरासर त्रण दश देहरी, प्रतिमा उगणीश सवि हेरी, पांच जोडी पगलां घेरी रे ॥ छीपा० ॥ ४ ॥ यक्षनी मूरति एक कही, शेठ शेठाणी दोय

लही, रायण वृक्ष छे एक सही रे ॥ दीपा० ॥ ५ ॥
ढाल आठमी एह कइ, दीपावसी वरणव लइ, म
याविजय अविचल थइ रे ॥ दीपा० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेमनेम ने जोडवा, छे प्रेमावसी नाम ॥ प्रेम
विना करणी करे, ते नवि आवे काम ॥ १ ॥ प्रेम
जनित सरधा जिहां, झलकें आतम ज्योत ॥ चोथी
टूक प्रेमावसी, अनुजव जाव उद्योत ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ चित्त चोखे चोरी नवि करीयें ॥ ए देशी ॥ चि
त्त चोखे प्रेमावसी नमीयें, आतम अनुजवमां रमी
यें ॥चि०॥ आदिजिनेसर पाय नमीने,रोग सोग दुःख
वीशमीयें ॥ चित्त० ॥ आत० ॥ १ ॥ समता साहे
ली संगें रमीयें, कुमता संगें नवि जमीयें ॥ चि० ॥
मोहरायने दूर करीने, कुगुरु कुदेवने नवि नमीयें ॥
चित्त० ॥ आ० ॥ २ ॥ अमदावाद रहेवासी मोदी,
प्रेमचंद लवजी कहियें ॥ चि० ॥ संवत अढार त्रेंता
लीश सालें, थापी प्रजुजी जस लहियें ॥चि०॥आ०
॥ ३ ॥ देरासर खट शोजा अतिही, देहरी पंचावनने
नमियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ पांचशें छत्रीश बिंब बिरा

जे, मंमप देखी चित्त रमियें ॥ चि० ॥ ४ ॥ पांच धा तुनी प्रतिमा वंदूं, नवसिद्ध चक्र हृदे रमियें ॥ चि०॥ रूप फटिक दोये प्रतिमा जाणुं, देखंतां दुःख सवि गमियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ गणधर मुनि पद पंकज उत्तम, चौदशेंने त्रेशठ धरियें ॥ च० ॥ गोमु ख आदि त्रण जक्ष छे, सेवंतां सोहा वरियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पद्मावती चक्केसरी आदें, पांच देवी तिहां लहियें ॥ चि० ॥ दोय हजार ने त्रेवीश आंकें, सर्व मलीने ए कहियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ ढाल सुधारस नवमी रचना, मयाविजय कहे धन धरियें ॥ चि० ॥ ए गिरि गुण जे जावें जणशे, अजरामर पद ते वरीयें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आतम शुद्ध स्वजाव जे, हेम हुताशन संग ॥ जडता संग निवारियें, प्रगटे आतम रंग ॥ १ ॥ पांचमी टुंक हेमावसी, अजित जिणंद दयाल ॥ मूल नायक जिनराजनें, नमियें नित्य रसाल ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ एकवार वछ देश आवजो, जिनंद राय ॥ एक वार वछदेश आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ हेमावसी करो वंदना चेतनराय ॥ हेमा० ॥ चित्तपंकज परकाश करनकूं, अजित जिणंद मुनिंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम पुरुषातन साचुं, उर पुरुष सवि फंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ मोह राय मद मछर तोडी, कीधां छे कर्म निकंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ २ ॥ गुर्जर देश तिलक सम छाजे, अमदावाद सुरंगना ॥ चे० ॥ हे० ॥ शेठ हेमाभाइ जग सहु जाणे, उसवंश सुचंगना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ३ ॥ संवत अढार ने त्र्याशी मांहे, हेमावसी करु थापना ॥ चे० ॥ हे० ॥ पुण्यभंमार तिहां बहु भरियो, अजित जिणंद शुचि जापना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ४॥ देहराचार हेमावसी मांहे, देरी चुम्मालिश घेरियां ॥ चे० ॥हे०॥ त्रणशें अढारे जिनजी सोहावे, देखत दर्शन लेहेरीयां ॥ चे०॥ हे०॥ ५ ॥ चार धातुनी प्रतिमा कहियें, त्रण पंच तीर्थ सुभावना ॥चे०॥हे०॥ सिद्धचक्र धातुनां सातज, दो जोडी पगलां छावनां ॥चे०॥हे० ॥ ६ ॥ शेठ शेठाणी दोय कह्यां छे, दोय कर जोडी सामना ॥ चे०॥ हे० ॥ अंक समुच्चयें कहेशुं गणती, त्रणशें छत्रीश ए धामनां ॥ चे०॥ हे० ॥ ७ ॥ दशमी ढालें अधिक सोहावे, अजित अजित सुख छंदना ॥

चे० ॥ हे० ॥ मयाविजय मन हर्ष आनंदें, पावे प
रम आनंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोती माणक हीरला, पामे तेह सुजन्न ॥ स
मदृष्टि समभावमें, वरते तेह छुजन्न ॥ १ ॥ पूरव का
लें नवि कियो,एहवो अजब बनाव ॥ तिणें मोती व
सी वरणवुं, देखी उपन्यो भाव ॥ २ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ सोना रूपाकें सोगठे, सांइ खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥

॥ मोती वसीमां वंदीयें, जिहां आदि जिणंदा ॥
देखत प्रभुमुख चंद ज्युं, झीपे तेज दिणंदा ॥ मो०॥
॥ ए टेक ॥ १ ॥ आज शरण आव्यो हवे, प्रभु तुं
शिर साचो ॥ आण धरावुं ताहरी, उर देव न राचो
॥ मो० ॥ २ ॥ अमीचंद साकरशा, उसवंश दीपावा
॥ तस सुत मोती भाइ जे, वखा कमल प्रभावा
॥ मो० ॥ ३ ॥ मुंबइ बंदर वासता, शुभ मुहूरत ली
नो ॥ पुत्रने काम भलावीने, स्वर्गेंवास कीनो ॥ मो०
॥ जी० ॥ ४ ॥ शेठ खेमचंद सज करें, संघ साथमें
लावे ॥ बावन संघ मल्या तिहां, परिजन बहु आवे
॥ मो० ॥ जी० ॥ ५ ॥ अतिहि आडंबर आविया,

सिद्धक्षेत्र उछाहे ॥ पांच हजार बिंब आशरे, मली एकज गाहे ॥ मो० ॥ जी० ॥ ६ ॥ संवत अढार त्रे पणुमां शुभ मुहूरत आवे ॥ महाशुदि दशमी वासरें, अंजन करि नावें ॥ मो० ॥ जी० ॥ ७ ॥ पिता कृत प्रासादमां, आदिजिन थापी ॥ जयजयकार कहे सहु, जग कीरति व्यापी ॥ मो० ॥ जी० ॥ ८ ॥ देरां पन्नर टुंकमां, एकावन देहरी ॥ आलीए मालीए जालीए, दीजें फरती फेरी ॥ मो० ॥ जी० ॥ ए ॥ दोय हजार गुणत्रीश छे, जिनबिंबनी संख्या ॥ बत्रीश धातुना प्रभु, पंचतीर्थे बावीसा ॥ मो० ॥ जी० ॥ १० ॥ सिद्ध चक्र धातुतणां, बत्रीश कहीजें ॥ रूपानां अगियार छे, सिद्धचक्र लहीजें ॥ मो० ॥ जी० ॥ ११ ॥ चउदशें छप्पन जोड ते, पगलां शुभ गाइ ॥ नाभि मारुदेवा चार छे, गोमुख चक्केसरी माइ ॥ मो० ॥ ॥ जी० ॥ १२ ॥ एक भैरव मूरति तिहां, एक कुंता माता ॥ अष्ट मंगल पट एक छे, सवि जन गुण गाता ॥ मो० ॥ जी० ॥ १३ ॥ शेठ शेठाणी नव कह्या, कहुं अंक समुच्चें ॥ बत्रीशशें सरवे मली, लघु दोय बगीचे ॥ मो० ॥ जी० ॥ १४ ॥ एक कुंभ जलशुं भस्यो, गढ बाहेर सोहे ॥ देरासर दोय जाणीयें, सवि

जन मन मोहे ॥ मो० ॥ जी० ॥ १५ ॥ एकशो एक शठ जाणीयें, बिंब सर्व कहीजें ॥ दोय सिद्धचक्र नाणीयें, राम पोल लहीजें ॥ मो० ॥ जी० ॥ १६ ॥ ढाल एकादशमी भणी, लाडचंद आदेशें ॥ मयाविजय सुख संपदा, कही मति लेशें ॥ मो० ॥ जी० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोल बाला चढती थइ, दीपे तेज सवाय ॥ बालावसी एक नाम छे, बीजुं दीपावसी गाय ॥ १ ॥ सप्तमी टुंक ए शोभती, सप्त भय नीवार ॥ आदि जिनंद तिहां भला, नमियें नित्य सवार ॥ २ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मनमोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिनजगत दयाल, तुम सेवा मोहे दीजीयें रे ॥ मुझ मनमां ए अभिलाख, आप समो मोहे कीजीयें रे ॥ आदि० ॥ तु० ॥ १ ॥ तुम दरिसण विण भवमांहि, रझल्यो काल अनादीमां रे ॥ हवे आज थयो हुं सनाथ, आरज क्षेत्र मनुष्यादीमां रे ॥ ॥ आ० ॥ तु० ॥ २ ॥ मुंबई बंदर सुवास, वीसा श्री माली ज्ञातमां रे ॥ कल्याणजी कानजी नाम, पुत्र

बालाभाइ सुखशातमां रे ॥ आ० ॥ तु० ॥३॥ अढार त्र्याणुंनी शाल, बिंब प्रतिष्ठा शुभ मुहूरतें रे ॥ तपग छपति सुखकार, विजय देवेंद्र सूरिव्रतें रे ॥ आ० ॥ ॥ तु० ॥ ४ ॥ बालावसी मांहे चार, देरासर अति सोहतां रे ॥ शोल देरी बनी सुखकार, भविजननां मन मोहतां रे ॥ आ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ बशें अडता लीश बिंब, प्रतिमा वंदूं दोय धातुनी रे ॥ त्रण पंच तीर्थ सिद्धचक्र, पंच धातु सुख शातनी रे ॥ आ०॥ ॥ तु० ॥ ६ ॥ एक रूपानां सिद्धचक्र, पगलां दोय नमो सहु रे ॥ नाभि मारुदेवी मात, गयवर खंध बेठां बेहु रे ॥ आ० ॥ तु० ॥ ७ ॥ चक्केसरी गोमुख यक्ष, शेठ शेठाणी त्रण त्यां लह्यां रे ॥ दोय सत गु णंतर सर्व, बालावसी मांहे तिम कह्यां रे ॥ आ० ॥ ॥ तु० ॥ ८ ॥ श्रीआदि जिणंद पसाय, बारमी ढाल पूरण थइ रे ॥ मयाविजय मनोरथ सिद्ध, मनवंछित फल सुख लइ रे ॥ आ० ॥ तु० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साकरथी मीठी कही, जिनवाणी सुरसाल ॥
सर्व जीव सुख कारिणी, छकायक प्रतिपाल ॥ १ ॥
तिण साकरवसी वर्णवुं, पार्श्वनाथ जे गाम ॥ धातू

मय सोवनसमी, जन्म वाराणसी धाम ॥ ९ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे ॥ ए० ॥ ए देशी ॥

॥ पारस प्रनु दरिसन देखीने, तनमन वयण सुख पाया ॥ अंतर आतम आनंद पाम्यो, जय जय जगगुरु राया ॥ मेरे प्यारे ॥ साकर वसी नमो नावें, साकरवसी नमो नावें मे० ॥सा०॥१॥ ए आंकणी ॥ त्रेवीशमा तीरथ पति साचा, त्रेवीश विषयनें टाले ॥ आतम सत्ता शुद्ध बनावी, लोका लोक निहाले मे०॥ सा० ॥ २ ॥ उर पारस पाषाण कहावे, कंचन लोह बनावे ॥ तुं तो आप सरूप बनावे, तुऊ सम उर न आवे मे० ॥ सा० ॥ ३ ॥ आनव परनव नाथ तुमारुं, शरण हवे में कीधुं ॥ दीन बंधुनी मेहेर नजरथी, कारज सघलुं सीधुं मे० ॥ सा० ॥ ४ ॥ लघु श्रीमाली उत्तम ज्ञातें, अमदावाद रहेवासी ॥ शा प्रेमचंद उत्तम कुलदीपक, साकरचंद सेबासी मे० ॥ सा० ॥ ५ ॥ संवत अढार त्र्याणुंनी शालें, पास प्रनु पधराया ॥ जय जयकार नयो सहु जगमें, संघपति तिलक धराया मे० ॥ सा० ॥ ६ ॥ चारदेरासर उगणीश देरी, मूलनायक प्रनु पास ॥ शुद्ध कं

चन धातुमय देखी, पूरे वंछित आश मे० ॥ सा०
॥ ७ ॥ एकशो एकवीश जिनवर प्रतिमा, सिद्धचक्र
एक जाणो ॥ पंचतीरथी एक धातुनी,पगलां नव गुरु
नाणो मे० ॥ सा० ॥ ८ ॥ पास पास वेरुट्या ज
क्खणी, शासन सांनिध्य जाणुं ॥ शेठ शेठाणी पां
च मुद्रा छे, समुच्चय अंक वखाणुं मे० ॥ सा० ॥
॥ ए ॥ एक शो गुण चालीशसवि संख्या, साकर व
सीमां कहियें ॥ ढाल तेरमी पूरण प्रेमें,मया करी जस
लहियें मे० ॥ सा० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम द्वीप नंदीश्वरें, बावन चोमुख जाण ॥
प्रतिमा ते कहि शाश्वती, भांखे केवल नाण ॥ १ ॥
रुषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान ए चार ॥ इण ना
में ए शाश्वती, अधिक कह्यो विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

अजित जिनेश्वर चरणनी सेवा, हेवायें हुं ह
लीयो ॥ ए देशी ॥

॥ नंदीश्वर तो अतिही छेटो, कीजें किणविध भे
टो ॥ ते नंदीश्वर आंहीज भेटो, मननो संशय मेटो
॥ सहियर चालो जइयें आज, श्री नंदीश्वर निरखो

॥ ए टेक ॥ १ ॥ शेठ श्रीराज नगर हेमाजाइ, ज्राता उजम बाइ ॥ साथें पुत्रज प्रेमा जाइ, तेणें ए रचना गाइ ॥ सहियर० ॥ श्रीनं० ॥ २ ॥ अढारशें त्राणुंनी शालें,संघ चतुर्विध साथें ॥ शुज मुहूरत प्रजु पधरावी, बेन उजमने हाथे ॥ सहिय० ॥ श्रीनं० ॥ ३ ॥ दोय देरासर खट बे देरी,बशें पंचाशी बिंब ॥ पंचतीर थी एक धातुनी, सिद्धचक्र दो अंब ॥ स० ॥ श्रीनं० ॥ ॥ ४ ॥ ढाल चउदमी पूरण कहियें, आनंद अधिको लइयें ॥ मयाविजय कहे धन धन ते दिन, नित नित जेटवा जइयें ॥सहि०॥ श्री नं०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ देरासर एक शोजतुं, अद्जुत आदिजिनंद ॥ बालावसीने पास बे, टाले कर्मनो फंद ॥ १ ॥ शेठ हेमा जाइनी कही, गोत्रज देवी मात ॥ त्रण्य कुंमज लशुं जस्या, निर्मल करवा गात ॥२॥ ए तीरथ महिमा घणो, जांखे त्रिजुवन जाण ॥ पूर्वे उद्धार जे जे थया, जाखुं तेह वखाण ॥ ३॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ साहेब सांजल वीनती, तुं बे चतुर सुजाण ॥ सनेही ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम उद्धार जरतें कीयो, आदिजिनंद उपदे
शें रे ॥ संघपति तिलक धरावीयुं, कह्यो अधिकार वि
शेषें रे ॥ ए तीरथ डे शाश्वतुं ॥ ए टेक ॥१॥ जरत पा
टथी आठमें, दंमवीरज थया जेह रे ॥ बीजो उद्धार
आमंबरें, वरणवीयें केम तेह रे ॥ ए तीरथ० ॥ २ ॥
ईशान इंडें त्रीजो कीयो, सीमंधर जिनवयणें रे ॥ चो
थो माह्न इंडें कीयो, धन जेणें निरख्यो नयणें रे ॥
॥ ए ती०॥३॥ ब्रह्मइंडें कस्यो पांचमो, बठो चमरेंडें क
राव्यो रे ॥ सागर चक्रवर्त्ती सातमो, ए तीरथ गुण
जाव्यो रे ॥ ए ती० ॥ ४ ॥ रत्ननां बिंब जंमारियां,
पडतो काल ते जाणी रे ॥ व्यंतरना इंडें कस्यो, अ
ष्टमो ए गुणखाणी रे ॥ ए ती० ॥ ५ ॥ चंडजसा
राजा करे, चंड प्रजु उपदेशें रे ॥ नवमो उद्धार ते
जाणीयें, सादीनंत सुख लेशें रे ॥ ए ती० ॥ ६ ॥
शांतिनाथ उपदेशथी, दशमो उद्धार करावे रे ॥ च
क्रायुध राजा तिहां, ज्ञानी वचन मन जावे रें ॥
॥ ए ती० ॥ ७ ॥ दशरथ नंदन राम जे, श्रीमुनि सु
व्रत वारे रे ॥ एकादशमो करावीयो, आतम कारज
सारे रे ॥ ए ती० ॥ ८ ॥ पांमव पांचे परवरी, नेम
जिनंदने वार रे ॥ द्वादशमो तेणें कीयो, मनुअ ज

नम कियो सार रे ॥ ए ती० ॥ ए ॥ बार उद्धार ए मोटका, चोथे आरे कीजें रे ॥ वीरवचन इंद्रें सुणी, ए गिरि गुण रस पीजें रे ॥ ए ती० ॥ १० ॥ संवत एक अठ्ठंतरें, जावड साहें कीधो रे ॥ वयर स्वामी उपदेशथी, तेरसमो सुप्रसिद्धो रे ॥ ए ती० ॥ ११ ॥ संवत बार नें तेरमां, चउदशमो उद्धार रे ॥ बाहडदे मंत्रियें कर्यो, कुमारपालनी वार रें ॥ ए ती० ॥१२॥ संवत तेर इकोत्तरें, पन्नरमो उद्धार रे ॥ समराशाहें करावीयो, वर्त्यो जयजयकार रे ॥ ए ती० ॥ १३ ॥ संवत पन्नर सत्याशीमां, कर्माशायें कीधो रे ॥ शोल उद्धार पूरण कर्या, आतम गुणरस पीधो रे ॥ ए ती० ॥ १४ ॥ पंचम आरे छेहडले, डुप्पसह सूरी थाशे रे ॥ सत्तरमो उपदेशथी, विमल वाहन सुख पासे रे ॥ ती० ॥ १५ ॥ सत्तरमो ए करावशे, एह गिरि उद्धार रे ॥ सूक्ष्म उद्धार विचें थया, कहेतां नावे पार रे ॥ ए ती० ॥ १६ ॥ प्रायें ए गिरि शाश्वतो, एंशी योजनने मानें रे ॥ प्रथम आरकथी अनुक्रमें, कह्युं केवलज्ञानें रे ॥ ए ती० ॥ १७ ॥ सीतेर शाठ पच्चास ते, बार योजन सात हाथ रे ॥ छठे आरे जाणीयें, एम भाखे जगनाथ रे ॥ ए ती० ॥

॥ १० ॥ शत्रुंजय महातम विषे, कह्यो अधिकार वि शेष रे ॥ ढाल पन्नरमी ए कही, मयाविजयें लवले श रे ॥ ए ती० ॥ १ए ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सरवालो सवि टुंकनो, तारीज कहियें जेह ॥
साची सरधा आणीने, नमीयें जिनवर तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ तीरथनी आशातना, नवि करीयें ॥ ए देशी ॥

॥ ए तीरथनें वंदीयें, त्रण कालें ॥ निज आतम शक्ति उजाले, मोहराय तो साहामुं न नाले, जाये दुःखदंद ॥ ए तीरथने वंदीयें, त्रण कालें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकशो पन्नर देहरां, जिहां गाजे ॥ देह रीयो बशें बिराजे,उपर बावीश समाजे, कहुं प्रतिमा जेह ॥ ए ती० ॥ २ ॥ आलीयें मालीयें जालीयें, सवि लहीयें ॥ नव सहसने सात शें कहीयें, उपर वली वेदज चहियें, प्रणमुं जिनराज ॥ ए ती० ॥ ३ ॥ बशें एकत्रीश धातुनी, जिन सरखी ॥ सिद्धचक्र एक शो दश निरखी, काउसगीया बहोंतेर ते हरखी, नमीयें निज काज ॥ ए ती० ॥ ४ ॥ मुनिमुद्रा बत्री शने, वली गणीयें ॥ एक साधवी काउसग्ग नणी

यें, पगलां नव सहस ते घुणीयें, पंचाशी तेम ॥
॥ ए ती० ॥ ५ ॥ नाभि मरुदेवा मातजी, दश जा
णो ॥ जुगलिक एक जोड वखाणो ॥ हस्तिवर आठ
प्रमाणो, दिगपाल ते एक ॥ ए ती० ॥ ६ ॥ एक चो
री नेम नाथजी, नवि परणे ॥ दोय लोक नालिने वर
णे, पांमव पंच नमीयें चरणे, माता कुंता दोय ॥
॥ ए ती० ॥ ७ ॥ एक डुपदी एक सांढीयो, पुण्य पा
पें ॥ शिव एक ते स्वस्तिक थापें, गणपति अन्न पूरणा
आपे, अंगारशा एक ॥ ए ती० ॥ ८ ॥ यक्ष मूरति
तिहां शोभ छे, सुखकारी ॥ चक्केसरी आदें जुहारी,
पंचवीश देवी उपगारी, हनुमान ते चार ॥ ए ती०॥
॥ ए ॥ एक वाघण शेठ दंपती, तिहां भणीयें ॥ चा
लीश उपर दश गणीयें, टांका आठ प्रभुजी न्हवणी
यें, कुंभ चउदज होय ॥ ए ती० ॥ १० ॥ उपर हेठें
मारगें सवि जाणो ॥ वृक्ष त्रण शत त्रीश प्रमाणो, त्र
ण्य वाव्य वली मन आणो, विसामा दश जोय ॥
॥ ए ती० ॥ ११ ॥ चंदन तलावडी साधुजी, घणा
सीधा ॥ उलखा जोले पण लीधा, कइ घेटीनी पागें
कीधा, नदी शेत्रुंजी एक ॥ ए ती० ॥ १२ ॥ कदंब
गिरि हस्तीगिरि, वली जइयें ॥ भाडवे चढी सिद्धवड

रहियें, तिहां साहामी वात्सल शुन्न कहियें, लाहो ली
जें एम ॥ ए ती० ॥ १३ ॥ अंक तीरथ कलना कली,
नवि होइ ॥ प्रत्यक्ष जे नजरें जोइ, अण जाण्युं रह्युं
जे कोइ, वंदूं सवि आज ॥ ए ती० ॥ १४ ॥ ढाल
शोलमी अंक समु,च्चय पूरी ॥ आदीजिन पाय हजू
री, कुरमतिने कीधी दूरी, मया विजयें एम ॥ ए० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीरथ गुण वरणव किया, मुऊ मतिने अनु
मार ॥ नाइचंद आग्रहथकी, कीधो नव्य उपकार ॥
॥ १ ॥ द्वितीय ढाल पूरण करी, देवगति नाइचंद ॥
तस आग्रह पूरण कस्यो, अतिही परमानंद ॥ २ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गाया गाया रे में, सिद्धगिरिना गुण गाया ॥ मुऊ
मन हरख सवाया रे ॥ में० ॥ सि० ॥ अनुनव दाता,
मुऊगुरु ग्याता, सौनाग्य विजय कवि राया ॥ तास
पसायें गिरि गुण गाया, आतम अनुनव पाया रे ॥
॥ में० ॥ १ ॥ श्रीविजय धरणींद्र सूरिश्वर राज्यें, ए
अधिकार बनाया ॥ संवत उगणी पांत्रीशनी शा
लें, मास आषाढ कहाया रे ॥ में० ॥ २ ॥ एह रास
जे नणशे गुणशे, सुणतां अति सुखदाया ॥ श्रीसि

द्धाचल जात्रा केरुं, घर बेगां फल पाया रे ॥ मे० ॥ ॥ ३ ॥ अल्पमति वरणन किम होवे, गिरि गुण नंत कहाया ॥ सिद्ध अनंत जये जीव केवल; परमानंद पद पाया रे ॥ मे० ॥४॥ सौजाग्य प्रताप जयो मोहे पूरण, हीरविजय सुपसाया ॥ मयाविजय मनवंछित पाया, सिद्धिगिरि गुण गाया रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति श्रीतीर्थमाला गर्जित सिद्धाचल रासः समाप्तः ॥ तत्स माप्तौ समाप्तोयं द्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयोल्लासप्रारंजः ॥

॥ तन्मध्ये प्रथम ॥

॥ शास्त्ररहस्य प्रकाश बालावबोध गुर्जर जाषा मां अनेकांत स्याद्वाद रूप श्रीजैनशैली समजवा नि मित्त स्वपर हेतुयें लखीयें बैयें ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसायथें, शास्त्र रहस्य प्रकाश ॥ स्यादवाद हेतें जणी, रचना बालक जाष ॥ १ ॥ बा ल जीव समजे सुखें, स्यादवाद रस रूप ॥ नय ए कंत हठ नवि ग्रहे, पडें नही जम कूप ॥ २ ॥ ते माटें जाषा करुं, शास्त्र तणे अनुसार ॥ स्यादवाद जिनमत विना, पामे नहिं जवपार ॥ ३ ॥

॥ अत्र व्याख्या॥ स्याद्वाद रूप द्रव्य गुणपर्याय नय निक्षेप प्रमाणं तत्त्वभेद संयुक्त श्रीवीतराग देव भाषित सिद्धांत रहस्य एटले वस्तुगतें वस्तुनुं लक्षण जड चैतन्य भिन्नाभिन्न विवेचन करी समभावें भावित जेणें आत्मा भाव्यो छे. एवा भव्य जीवो अनादि कर्मबंधनथी छूटी अनंत सुखमय जन्ममरणादि भय रहित एवुं जे मोक्षपद, ते प्रत्यें पामे, तेमां कांइ पण संदेह नथी. इहां कांइ स्वपर लिंगनुं पण प्रमाण नथी, केम के पन्नर भेदें सिद्ध थाय छे. तेमां अन्यलिंगें सिद्ध थवानो पण एक भेद छे, माटें द्रव्यलिंगनुं कांइ प्रयोजन नथी. इहां मोक्ष साधन करवामां तो भाव लिंग ज प्रमाण छे. गमे ते लिंग धारण कर्युं छतां राग द्वेष रहित समता सहित वीतराग भावें आत्माने भावतां मोक्ष पामे, जे माटे श्री संबोधसित्तरीनी आदिमां कह्युं छे, के ॥ सेअंबरो वा दिगंबरो वा, बोधो अहअन्नो वा ॥ समभावे भावि अप्पा, लहइ मुरकं न संदेहो ॥ ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ तथा वली सम्यक्त्व प्राप्ति थया विना मिथ्यादृष्टि वासित जीवें जो श्रीजिनलिंग मुनिवेश धारण कर्यो छे, अने सत्तरभेदें संयम पाले छे, बेतालीश दोष रहित आहारादि ग्रहण करे छे, पं

चमहाव्रत पाले छे, तो पण ते अनंतो काल संसार भ्रमण करशे.ए वात पण एज ग्रंथमां कही छे ॥यतः॥ विरिया सावद्याउ, कसाय हीणा महव्वयधरावी ॥ समद्दिठि विहूणा, कयावि मुरकं न पावंति ॥ १ ॥ दंसण नठो नठो, दंसण नठस्स नहि निव्वाणं ॥ सिझंति चरण रहिया, दंसण रहिया न सिझंति ॥ २ ॥

॥ तेमज बीजा पण घणा शास्त्र सिद्धांतमां तथा उपदेशमालामां अज्ञानीनी जे क्रिया छे, ते सर्व काय क्लेशमां गणी छे. परंतु निर्ज्जरामां गणी नथी,वली ज्ञानी पुरुषनी जे क्रिया छे,ते एक श्वासोश्वास अथवा लवमात्रमां पण अत्यंत कठिन कर्मने निर्ज्जरवानी हेतु थाय छे. जे माटें उपाध्याय श्रीयशोविजयजीयें साडा त्रणशो गाथाना स्तवनमां कह्युं छे, के ॥ "किरिया लव पण जे ज्ञानीनी,दृष्टि थिरादिक लागे ॥ इति वचनात्" ॥ पुनः श्रीभगवतीसूत्रें "आया खलु सामाइयं" ए वचनथी आत्मा तेहिज सामायिक छे, तथा श्रीयशो विजय उपाध्यायजीयें सवाशो गाथाना स्तवनने विषे " जिहां लगें आतम द्रव्यनुं, लक्षण नवि जाण्युं॥ तिहां लगें गुणगणुं भलुं, केम आवे ताण्युं ॥ आतम तत्त्व विचारीयें ॥ "तथा यशविलासमां पण

"स्यादवाद पूरन नय जाणे,नयगर्भित जस वाचा ॥
गुनपर्याय द्रव्य जे बूझे, सोही जैन है साचा" तथा
श्रीसूयगडांग मध्ये ॥ "एगंते होइ मिछ्वाउ"ए वचन
उपरथी जे एकांत नयनुं ग्रहण तेज मिथ्यात्व कहीयें.

॥ ए रीतें अनेक शास्त्र सिध्धांतोने विषे आत्म
अनुजव विना जे जे क्रिया, ते सर्व आश्रव खाता
मां छे. तेथी कांइ सकाम निर्जरायें मोक्ष प्राप्ति नज
होय. तेमाटें हे जव्यजीवो! आत्मोपयोग सहित सा
पेक्ष शुध्ध व्यवहारमां वर्त्तवुं. जे माटे श्रीनयचक्रनी
टीकामां कह्युं छे. तद्यथा ॥ "बाह्यक्रियाधर्मत्वं,धर्मकार
णस्य धर्मत्वेन कथनं ॥ इति वचनात् ॥" बाह्यक्रियायें
जे कांइ धर्म करवो,ते सर्व, धर्मनुं कारण छे,अर्थात् तेने
कथन मात्रज धर्म कहियें. केम के कारण विना कार्यनी
उत्पत्ति न होय. जेम मृत्तिकाने विषे घट थवानी शक्ति
रही छे, परंतु चीवर, दंम, चक्र, इत्यादि निमित्त का
रण मलवाथी घटोत्पत्ति थाय ॥

॥ तथा श्रीसिध्धांतें पांच कारण कह्यां छे ॥ गाथा ॥
काल सहावो नियइ, पुव्वकय पुरिस कारणे पंच ॥
समवाइय सम्मत्तो, एगंते होइ मिछ्वाउ ॥ १॥

अर्थः– काल,स्वजाव, नियति,पूर्वकृत, पुरुषाकार,

ए पांच समवाय कारण जे माने, ते सम्यक्ति जाणवो. ए पांचे मलेज मुक्ति होय. तथा कर्त्ता, क्रियादि षट् कारक कह्यां छे. ए सर्व निमित्त कारण व्यवहार रूप छे.

॥ वली आवश्यक निर्युक्ति मध्यें व्यवहारने बलिष्ट कह्यो छे ॥ छउमछ समयंचया, विवहार नयाणुसारणी सवा.॥ तं जहा समायरंजो, सिद्धई सव्वोवि सुद्धमणो ॥ १ ॥ संविवहारोवि बली, जिणसुद्धंपि गिहियं सुविवहीए ॥ कोवइ न सवाए, वंदइय कयाइं छउमछं ॥ २ ॥

अर्थः– जिहां सुधी छद्मस्थावस्था छे, तिहां सुधी सर्व व्यवहारनय आश्री वर्त्तवुं छे, तेमज शुद्ध व्यवहार विशुद्ध मनें समाचरते थके सिद्धगति प्रत्यें पामे.

॥ तथा जे मुनि सापेक्ष शुद्ध व्यवहारें बलिष्ठ छे, ते मुनिनो आणेलो आहार केवली भगवान् पण भुंजे. वली कोइएक शिष्यने केवलज्ञान उपनुं छे, अने गुरु हजी छद्मस्थ पणे छे, तो पण ते शिष्यें गुरुने वांदवानो व्यवहार कह्यो छे. परंतु गुरुने जाणवामां आवे, तेवारें केवलीनी आशातनाने लीधे वंदावे नही.

॥ माटे हे भव्यो! निश्चयदृष्टि हृदयमां धारण करीने सुव्यवहारें वर्त्तवुं, ते महाश्रेय छे. कारण के

व्यवहारनो उच्छेद थवाथी तीर्थनुं, गुरु शिष्यनुं, तथा अरिहंतादिक दश गुणीनुं जे विनय वैयावृत्त्यादि करवुं,ते सर्वनो उच्छेद थाय. अने श्रीजिनशासननी शैली तो अनेकांत स्याद्वाद निश्चय व्यवहार उत्सर्ग अपवाद मार्ग समस्त नय निक्षेप प्रमाण युक्त छे तेने अंगीकार करतां थकां पूर्वे अनंता जीव मोक्ष पाम्या छे. अने अनागत कालें अनंता मोक्ष पामशे ॥ इत्यर्थः ॥

॥ इहां व्यवहारने बलिष्ट कह्यो. ते पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व,गयां थकां जेने सम्यक्त्व प्राप्ति थई होय,तेनो व्यवहार समजवो. पण ज्यां सुधी सम्यक्त्व पाम्या नथी त्यां सुधी व्यवहारमां मोक्ष पद नथी.

॥ ते पांच मिथ्यात्वनां नाम कहे छेः—एक अभिग्रहिक, बीजुं अनभिग्रहिक, त्रीजुं अभिनिवेशिक, चोथुं संशयिक अने पांचमुं अनाभोगिक ए पांच मिथ्यात्व जाणवां. तेनुं किंचित् स्वरूप लखुं छुं.

१ तिहां प्रथम अभिग्रहिक मिथ्यात्व कहे छे. जे हठनुं ग्रहण कीधुं, ते पकडी टेक मूकाय नही. जेम हालर नामें पक्षी थाय छे, तेनी माता जेवारें पोताना बच्चांने उडवा शीखवे, तेवारें तेना पगमां एक लाकडानी कटकी ग्रहण करावे, पछी ते

लाकडाने जीवतां सुधी मूके नही. कारण के ते पद्मी ना मनमां एवी भ्रांति पडी जाय छे. के आ लाकडा नें आधारेंज हुं उडी शकुं छुं. अने एनेज आधारें र ही शकुं छुं. एवी खोटी शंकाथी उलटी लाकडानी उपाधि ग्रहण करी लीये छे. तथा केटलाएक जीवो ने तो पूर्वें आपणा वडीलोयें जे धर्म अंगीकार कस्यो तेज प्रमाण छे. एवी रीतें परंपरायें कुलाचारनेज धर्म मानी लेवानी भ्रांतिनी टेव होय छे, पण ते शुद्धाशु द्धनो विचार कांइ समजे नही, जेम कोइकने घरें वि विवाह हतो ते वखत तेना घर आगल बिलाडीनां बच्चां आडां अवलां फरतां हतां, तेनें जोइने विवाहना का ममां ए अपशुकन अश्रेयस्कारी जाणी ज्यां सुधी विवा हनुं कार्य हतुं, तिहां सुधी तेने सुंडला तले ढांकी रा ख्यां. पछी तेनी बे चार पहेढिमां एवोज चाल पडी गयो.तेथी परंपरायें तेना गोत्रीयानो पण एवोज चाल थयो, के जेवारें विवाहादिक आवे, तेवारें जो बिला डीनां बच्चां पोताना घरमां न होय, तो पाडोसीने घेरथी लइ आवीने पण सुंडला नीचे राखीने पछी विवाहनुं कार्य करे. एवी रीतें इहां पण जे कुगुरु, कुदेव अने कुधर्म ग्रहण कीधेलो ते हव मूके नही.

एवी रीतनुं छरूप अनिग्रहिक मिथ्यात्व छे. तेने आ पंचमकालमां नरत क्षेत्रने विषे केवली विना घणा बाल जीवो ग्रहण करी रहेला छे. जेमाटे श्रीयशोविजयजी उपाध्यायें सवाशो गाथाना स्तवनमां कह्युं छे, जे "कुगुरुनी वासना पासमां, हरण परें जे पड्या लोक रे" इत्यादि आ वर्त्तमान काले प्रायें घणा बिचारा बालजीवो धर्मना रागी तो होय, परंतु श्रीजिनवचन उत्सर्ग, अपवाद, निश्चय, व्यवहार तथा साधु श्रावक संबंधी मूलगुण उत्तर गुण रूप जे क्रिया, तेना सर्वथा अजाण, आत्मबोधरहित, धाम धूम बाह्याम्बरना रागी, तेवा जीव गछ परंपरानी सामाचारी तेनेज मोक्ष मानी रह्या छे. तेवा जीवोने घणा महारा जेवा लिंगधारी तथा मुनियो पोताना संघाडाना तथा मान अने यशः कीर्तिना लोनी थका सूत्र सिद्धांतना पाठ नणावे छे, पण ते निश्चय ज्ञान आत्मबोधथी विमुख छे. तेवा जनोने उपाध्याय श्रीयशोविजयजीयें साडात्रणशो गाथाना स्तवनमां जिनशासनना शत्रुनूत कही वखाण्या छे. "जिम जिम बहुश्रुत बहुजन सम्मत, बहु शिष्यें परवरियो ॥ तिम तिम जिनशासननो वयरी, जो नवि निश्चें दरियो

॥ १ ॥ "माटें एवा लिंगधारीना मुखथी नाना प्रकारना विकल्परूप एकांत मार्ग क्रिया कलाप उपदेश सांभली हठ वाद ग्रहण करी बेसे छे, केम के जेने जेवा गुरु मले,तेने तेवोज बोध थाय छे. तेवा जनो, हमणां केवल एकांत बाह्य क्रिया,लोचादिक कायक्लेश तप, योग वहन करे, तेने मुनि संज्ञा छे. अने उपधान वहेवां,माला पहेरवी, उनयकाल प्रतिक्रमणादि क्रिया करे,तेने श्रावक संज्ञा छे. माटें एवी रीतमां वर्त्तता देखे, तेने श्रीजिन मार्गमां परिपूर्ण सम्यक्त्व धारी गणे छे अने ते विना बीजा साधु तथा श्रावक ते सर्व ड्व्यथकी क्रियामां शिथिल छे. एवुं कही ने तेवा पुरुषोना ते प्रतिवादीयो अवर्णवाद बोले, निंदा गर्हा करे, श्रावकजनने उपदेश करवा माटे व्याख्यान पण तेवुंज वांचे,अने ते श्रावकोने पोताने मानवा रूप समकेत धारण करावे. एवी रीतें पोतें समकितधारी, तरण तारण सुगुरु नाम धरावी, पोतानो पक्ष तथा संघाडो संप्रदाय वधारवानी लालचें नोला लोकोने एकांत मिथ्या उपदेश रूप जालमां पाडे छे तथा एकांत व्यवहारनय पक्ष एवो दृढ करावे के ते नड्क जीवोने जो कोइ सारा, सद्ज्ञानी, निःस्पृही,

आत्मोपयोगी एवा मुनि आवीने हितोपदेश रूप शि खामण आपे, तो पण ते मुनिनुं वचन माने नही, अ ने तेवानुं विनय वेयावच्च पण अंगीकार करे नही, केम के ते भोळा जीवो एवुं समजे के अमें सुगुरु पा सेंथी समकित धारण कर्युं छे. तेनें अतिचार रूप दूष ण आवशे, पण ते बिचारा भोळा जीवो सम्यक्त्व प दार्थ वस्तु, वस्तु स्वरूपें शुं छे? एवी समदृष्टि समभाव ने जाणता नथी माटे जेम वृक्षना मूळ विना शाखा ते क्यांथी होय? तेम एवा जीवोने निश्चय समकित पण क्यांथीज होय? अने निश्चयविना व्यवहार सम्यक्त्वनी तो भजना जाणवी. एटले होय पण अने नही पण होय. तेतो ज्ञानिगम्य छे. एवी रीतें जूठ साचनी प रीक्षा करवानी असमर्थताने लीधे बिचारा भोळां लो को ठगाय छे. ते उपर उपाध्याय श्रीयशोविजयजीयें श्रीपाळना रासमां एक दृष्टांत कह्यो छे. ते इहां लखी ये छैयें. कोइ एक नगरनी बाहेर एक योगी अने चेलो रहे छे. ते चेलायें शहेरमां भिक्षा लेवा आवतां कोइ शेठना छोकराना हाथमां सोनानां कडां पहेरेलां दे खीने गुरुने कह्युं, के मने पण सोनानां कडां पहेरावो, ते ने गुरुयें कह्युं जे आपणे जोगी लोकोने सोनानां क

डां पहेरवां पण न जोइयें अने मले पण क्यांथी? ते सांजली चेलायें गुरुथी रीष करी जूदो थइने भिक्षा वृत्ति करवा मांडी. घणा दिवस भिक्षा करतां दररोज थोडो वधारो करी केटलाएक वर्षे घणे कष्टे पांचशो रु पैया नगद एकठा करी कोइ, सोनारनी पासें कडां घ डाव्यां. जेवारें तइयार थयां तेवारें सोनीयें योगीने कह्युं के मह्यारी साथें गामनां लोको घणीज ईर्ष्या राखे छे, मह्यारा द्वेषी छे, माटे तमें कडानी किम्मत करावना जाउ. तेवारें कोइ पासें मह्यारुं नाम लेशो नही जो नाम लेशो तो सोनाने बदले पीतलना कडां कहेशे. एवो मत दृढ करावीने चेलाने कडां आप्यां, चेले पण गामना बधा सराफोनी पासें किंमत करावी, तारें बधायें कह्युंके सोनुं तो श्रीकार छे, तारे चेलायें विचा र्युं जे आ सोनुं खरुं छे अने आ सोनी पण सारुं माण स छे. एवो निश्चय करी कडां लावी सोनीने उज लाववा दीधां. सोनीयें पण एवांज बीजां पीतल नां कडां तैयार करी राखेलां हतां ते अजुवालती व खतें बदलावीने चेलाना हाथमां आप्यां अने कह्युं जे गामना सराफो सर्व मह्यारा उपर द्वेष राखे छे, ए परीक्षा जोवी होय तो हवे तुं बधा सराफो पासें म

ह्यारुं नाम लइने पूछजे, तो बधाय पीतळनां कहेशे. चे लायें पण तेमज कर्युं, तो बधाय कहेवा लागा के आ कडां पीतळनां छे. गइ काले देखाड्यां ते नथी. अरे मूर्ख ! तुं ठगाइ गयो !! एवां लोकोनां सत्य वचन सांनळी ने ते जोगी कहेवा लाग्यो के तमें सर्व सत्यवादी लो नीना द्वेषी छो. ए में तमारुं प्रत्यक्ष पारखुं दीठुं, ए दृष्टांत विचारीने जे कोइ परीक्षक सम्यक्त्वधारी साधु श्रावक हशे, ते कदापि हठ विवाद करशे नही. ए वात विस्तारें श्रीहरिनद्रसूरिकृत प्रथम पंचाशकनी वृत्तिमां छे. ते जोजो ॥ इति प्रथम आनिग्रहिक मिथ्यात्वस्वरूपम ॥

२ हवे बीजा अननिग्रहिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप कहे छे. एमां तो कांइ कदाग्रह न होय पण "सव्वेदेवा सव्वे गुरु" ए वचन थकी सर्वे देव, कुदेव, सुगुरु, कुगुरु तथा धर्म अधर्म, ए सहुने सरखा तुल्य गणे छे. माटे एतो निविड महा मिथ्यात्व जाणवुं. कारण के एने तो शत्रु अने मित्र, सर्प अने फूलमाला, चिंतामणि रत्न अने पाषाण, चंद्र अने सूर्य, दिवस अने रात्रि, दयाधर्म अने यागहोमधर्म, नरक अने स्वर्ग, सिद्ध अने संसार, ए सर्व तुल्य मानवामां आव्या, माटे एथी वळी बीजो वधारे मूर्ख मिथ्यात्वी ते कोण हो

य? अर्थात् कोइ नही होय. एने तो अनवस्थित भाव छे, एटले कोइ स्थानकें तेनुं स्थिरीभूतचित्त नथी. एवा जीवोने सम्यक्त्व प्राप्ति अति दुर्लभ छे. ए अधिकार सिंदूर प्रकरणनी टीकाथी जाणजो. ए बीजुं अनिग्रहिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप जाणवुं ॥

३ हवे त्रीजा आभिनिवेशिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप कहे छेः— विपर्यास पणे उपयोग रहित थकां कोइ उपदेश निमित्तें सभा समक्ष कोइ जिनवचन सिद्धांत विरुद्ध वचन बोलाइ गयुं, पछी ते वचन सर्वथा असत्य छे,एवुं पोतानी समजमां आव्युं,तो पण पोताना मुखथी निकलेलुं वचन हठवाद मूके नही ते एम विचारे के महारा मुखमांथी निकलेलुं वचन खोटुं थाय तो लोकमां महारी प्रतिष्टा घटी जाय? तेने लीधे नाना प्रकारना विकल्प कुयुक्तियो करीने पण पोतानुं मत स्थापन करे,एवो मिथ्यात्वी जीव घणा काल संसारमां परिभ्रमण करे ए अधिकार श्रीठाणांगजीने सातमे ठाणे तथा उत्तराध्ययने सूत्रें जमालि, गोष्ठामाहिल प्रमुख निन्हवने अधिकारें छे. ए त्रीजुं आभिनिवेशिकमिथ्यात्व॥

॥ हवे चोथुं सांशयिक मिथ्यात्व कहे छेः—जे जिनवचनमां शंका कंखा करे, जेम के भगवंतें एक व्यवहार

राशिनिगोद, बीजो अव्यवहारराशि निगोद, एवा बे प्रकारें निगोदनुं स्वरूप कह्युं ले, ते एकेक निगोदमां अनंता जीव कह्या ले,जेम के॥गाथा॥गोलाइ असंखिज्जा, संखं गोलेय होइ निगोअंमि ॥ इक्किक निगोयम्मि,अणंत जीवा मुणेयव्वा ॥१॥ इत्यादि श्रीजिनवचन ले, तेमां शंका करे के आ वात केम, हशे के नही ! तथा मिथ्यात्वीनां कष्ट चमत्कार देखी तेनी उपर अभिलाषा करे के आ धर्म पण सारो श्रेयस्कर ले ! तथा वली एवुं विचारे के जैन धर्म तो सारो ले परंतु साधुने कपडां धोवां स्नान करवुं वर्जित ले माटे मलमलीन देखाय ले ! एवी शंका करे. नरक, स्वर्ग, सिद्ध, ए सर्व हशे, किंवा नही हशे ! एवी शंका करे, तथा हरिकेशी मुनि अने मेतार्य मुनि चंमाल कुलमां उपना ले, माटे तेनी उपर डुगंबा करे. एनो विशेष अधिकार श्रीउत्तराध्ययन तथा नरदेसरवृत्तिथी जाणवो. ए चोथुं सांशयिक मिथ्यात्व कह्युं॥

पांचमुं अनाभोगिक मिथ्यात्व ते प्रायें संमूर्छिमनी पेरें शून्य मने क्रिया करे तथा एक बीजानी देखादेखीयें क्रिया करे, पण तेनो परमार्थ समजे नही. जेम बीजा उठ बेस करे, तेम पोतें पण करें, परंतु ते क्रियानो हेतु समजे नही, जे हुं आ क्रिया करुं

छुं, ते केवा प्रकारना फळनी प्राप्ति माटे करुं छुं? एवी वातने देशथी एटले लगार मात्र पण जाणतो नथी, मात्र जे रीतें गुरुयें क्रिया विधि बताव्यो छे, तेहिज विधि हठग्राहीपणे व्यवहार धर्म व्यापार करे, पण तेमां उंच, नीच, मध्यम, कनिष्ठ, लाजकारक किंवा हानिकारक रीतनुं जे व्यापारमां हिसाब नामुं राखवुं, ते कांइ समजे नहिं. एतो केवळ शून्य मनथी क्रिया व्यवहार करी जाणे छे. तो तेवा व्यापारमां प्रायें लाजवृद्धि तो नहीज थाय. एनी उपर घणा स्थलें शास्त्रोमां लोह वाणीयानो दृष्टांत छे. पण स्वपर हेतु जाणी एकत्वजावें आत्मोपयोग युक्त संवरजावें वर्त्तिने शुद्ध क्रिया करवाथी जीव अनंतकर्म निर्ज्जरीने स्वर्ग तथा अपवर्ग एटले मोक्षनां सुख पामे छे. ते कांइ समजतो नथी. ए अनाजोगिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप कह्युं

॥ ए पांच मिथ्यात्वना वशें जीव अनादि काळनो चारगति, चोराशी लाख जीवायोनिमां अनंता गर्जावासनां दुःख सहन करे छे. तेमां अनिष्टनो संयोग तथा इष्ट जे अत्यंत प्रिय होय, तेनो वियोग थाय, तेने लीधे जीवने आर्त्त रौद्र ध्यान तथा हर्ष शोक अत्यंत आक्रंद स्वरें रुदन करवुं, शिर कूटवुं, हृदय कू

टवुं, मस्तकना केश त्रोडवा.इत्यादि अनेक प्रकारें क
री फरी नवां कर्म बंधातां जाय छे. माटे ए मिथ्यात्व
जे छे,तेज सर्व कर्म बंधन करवानुं मूल छे. ए अधि
कार श्रीदशवैकालिक सूत्रें जिहां इंगिया, पोइया, रसें
दिया इत्यादि आठ खाण त्रस जीवने उत्पन्न थवानी
कही छे. त्यांथी तथा श्रीपन्नवणा सूत्रमां संमूर्छिम
मनुष्यने उपजवानां मल मूत्रादि चौद स्थान कह्यां छे.
त्यांथी तथा गाय भेंपनां मल मूत्रमां बे इंद्रियादिक जी
वने उपजवानुं कह्युं छे त्यांथी तथा श्रीतंदुली वेयाली
मां गर्भावासना दुःख अने गर्भनी उत्पत्ति संबंधिवात
कही छे, त्यांथी जाणीने अनादि मिथ्यात्व जे जीवने
लागेलुं छे,तेनो त्याग करी श्रीवीतराग भाषित सम्यक्
रत्ननी प्राप्ति पामवाने अर्थें प्रथम तो ए जीव यथा
प्रवृत्ति आदिक त्रण करण करे,तेनुं स्वरूप बाल जी
वोनी समज माटे इहां लखीयें छैयें.

॥ पहेलुं यथाप्रवृत्ति करण, बीजुं अपूर्व करण, अ
ने त्रीजुं अनिवृत्ति करण, ए त्रण करण मांहेला प्रथ
म यथाप्रवृत्तिकरणनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

॥ एक आयुःकर्म वर्जीने बाकी सात कर्म मांहेला
एक ज्ञानावरणीय, बीजुं दर्शनावरणीय, त्रीजुं वेद

नीय अने चोथुं अंतराय, ए चार कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति प्रत्येकें त्रीश त्रीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण छे. अने नामकर्म तथा गोत्रकर्मनी प्रत्येकें वीश कोडी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्टी स्थिति छे. तथा मोहनीय कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे. सर्व साते कर्मनी एक कोडाकोडी सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमे जागें उंडी एटली स्थिति जेवारें प्रत्येकें एकेका कर्मनी शेष रहे अने बाकी सर्व खपावी नाखे, ते जीव प्रथम यथाप्रवृत्तिकरणें आव्यो कहीयें. इहां एवो वैराग्य जाव आवे, परंतु समकित रहित छे ए प्रथम करण, सर्व जीव अनंती वार करें, अजव्य पण करे, पण जेम कोइक पुरुष महोटो समुद्र तरी समुद्रना कांग नजीक आवी फरी पाणीना कल्लोलमां तणाइने समुद्रनी वचमां जतो रहे, तेम पण अशुजाध्यवसायना योगें इहांथी पडे, तो पाछो पूर्वला जावने पामे. एवी रीतें अनंती वार ए करणना जावप्रत्यें पामे. ए करणें अंतर मूहूर्त कालमान रहीने जो चडता परिणामने योगें चडे, तो अपूर्व करणें पण आवे ॥ इति प्रथम करणं ॥

॥ हवे बीजुं अपूर्वकरण कहे छे. जे जाव,

जीवने आ संसारमां रह्यां थकां पूर्वें कोइ वारें पण आव्यो नथी तेवो भाव आवे, तेने अपूर्वकरण कहीयें. ए करणें आवतां अनंती पावडीयो चडवी थाय, ते विस्तारें कम्मपयडीनी टीकाथी जोवुं. हवे प्रथम करणें साते कर्मनी एकेकी कोडाकोडी सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमे भागें न्यून स्थिति रही हती, तेमांथी एक मुहूर्त जेटली खपावे,तेवारें अपूर्व भाव वीर्योल्लास थाय. ते अपूर्व भाव रूप मोघर लइने अनादिनी राग द्वेषनी ग्रंथि भेदन करे, तेवारें ते जीव. त्रीजुं अनिवृत्ति करण करे, ते कहे छे.

त्रीजा अनिवृत्ति करणने विषे अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चोकडी तथा पांचमी मिथ्यात्व मोहनीय, ए पांच प्रकृति अंतर मुहूर्त मात्र उपशमावे, तेथी उपशम सम्यक्त्व पामे. पछी ते उपशम समकितमां शुभ परिणामें रह्यो थको मिथ्यात्व मोहनीयनां दलियाने त्रण विभागें करी त्रण पुंज करे, तेमां एक शुद्धपुंज, बीजो अशुद्धपुंज अने त्रीजो शुद्धाशुद्ध पुंज, एवां त्रण ढगला करे, तेमां उपशम समकेतने अंतें जो शुद्धपुंजनो उदय थाय, तो क्षयोपशम समकेत पामे, अने जो अर्द्धविशुद्ध पुं

जनो उदय थाय, तो त्रीजे मिश्रगुणठाणे आवे, तथा अशुद्धपुंजनो उदय थाय, तो मिथ्यात्व गुणठाणे आवे. ए त्रण पुंजमां जे शुद्धपुंज ते सम्यक्त्व मोहनी अने जे अर्द्ध शुद्धपुंज ते मिश्रमोहनी तथा जे अशु द्ध पुंज ते मिथ्यात्व मोहनी जाणवी. इहां त्रण करण आश्रयी सिद्धांतनी गाथा लखीयें छैयें ॥ यदुक्तं ॥ जा गंठित्ता पढमं, गठिछिउ नवे बीउ ॥ अनिअट्टी करणं पुण, सम्मत्त पुरकडे जीवे ॥ १ ॥

हवे क्षयोपशम समकेतना घणा नेद छे. जेम लु हारनी साणसी क्षण वार अग्निमां अने क्षण वार पा णीमां होय, तेम क्षयोपशम समकेती जीव पण क्ष णे क्षणे जूदी जूदी ज्ञानादि दशामां प्रवर्त्ते, माटे ए ना विचित्र नेद छे. तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावर णीय, मोहनीय अने अंतराय, ए चार कर्मना क्षयो पशमथी अने दर्शनमोहनीयना क्षयोपशमथी जीव, समकेत पामे छे. ते समकेत बे प्रकारें पामे छे. तेमां एक गुरु उपदेश विना जे समकेत पामे, ते निःसर्ग समकेत जाणवुं. अने गुर्वादिकना उपदेशथी पामे, ते बीजुं उपदेश समकित जाणवुं, तथा एक कारक, बीजुं रोचक अने त्रीजुं दीपक, ए त्रण प्रकारें पण

समकेत कह्युं छे. तेमां जेवीरीतें सिद्धांतमां जाव कह्या छे, ते प्रमाणें वर्त्ते, क्रिया पाळे, तेने कारक समकेत कहीयें. तथा जीवादि पदार्थने याथातथ्य जाणीने निरपराध निरपेक्ष पणे संकल्पीने त्रसादिक जीवने हणे नही, ते जीव, चोथे अथवा पांचमे गुणठाणे होय, ते बीजुं रोचक समकेत जाणवुं. तथा जे जीव पोतें मिथ्यादृष्टियको पर जीवने जीवाजीवादि पदार्थनुं स्वरूप श्रीसिद्धांतने अनुसारें समजावीने समकेत गुण पमाडे. ए तेनाथी प्रतिबोध पामेला जीवो मोक्षे पण जाय, परंतु ते दीपक समकेतनो धरनार जीव, पोतें तो जो उत्सूत्र प्ररूपणा न करे तो उत्कृष्टथी नवग्रैवेयक पर्यंत जाय ॥ उक्तं च ॥ जइलिंग मिछदिठी, गेविज्जे जाव जंति मुक्कोसं ॥ पयमवि असद्दहंतो, सुत्तछं मिछदिठीउ ॥ १ ॥ ए अधिकार, श्रीभगवतीसूत्रें प्रथम शतकना बीजा उद्देशामां कह्यो छे ॥ इति क्षयोपशम सम्यक्त्वाधिकारः ॥

॥ हवे क्षायिक सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तथा मिथ्यात्वमोहनी, मिश्रमोहनी, अने समकेतमोहनी, ए सात प्रकृति क्षय करीने क्षपक श्रेणी मांमे, तेवारें

क्षायिक समकेत पामे. कदापि कोइ जीवें प्रथम को इ गतिनुं आयु बांध्युं होय, ने पछी सात प्रकृति ख पावे, तेने खंड श्रेणी क्षायिक सम्यक्त्व कहियें.

एम उपशम सम्यक्त्व तो ए सात प्रकृति उपश मावे, तेने कहीयें. अने जे पूर्वे कही आव्या मुजब सम्यक्त्व मोहनी रूप शुद्ध पुंजनो उदय थाय, ते क्षयोपशम समकेत कहेवाय. वली जे जीव, सात प्र कृति खपावे, ते जीवने क्षायिक समकेत कहेवाय.

तथा सास्वादन समकेत ते जेम कोइ पुरुष खीर खांडनुं भोजन करी तुरत वमन करे, तेने कांइक स्वाद रही जाय, तेम इहां पण जीव उपशम समके तथी पडे, ते बीजा सास्वादन गुणागणे आवे, तेने सास्वादन समकेत कहीयें. एनुं जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टुं छ आवलिका प्रमाण काल मान छे.

तथा वेदक समकेत ते जिहां समकेत मोहनी क्ष य करतां करतां छेल्ला एक समय मात्र जेटलां दली यां क्षय करवानां शेष रहे, तेने वेदक समकेत एक समय प्रमाण कहीयें. केम के, तेज समयमां शेष द लीयां खपावीने बीजे समयें क्षायिक समकेत पामशे.

हवे उपशमादिक समकेतने रहेवानी स्थितिनुं का

ल प्रमाण कहे छे. तिहां प्रथम उपशम समकेतनो का ल अंतर मुहूर्त्त प्रमाण छे. सास्वादननो छ आवलिका, वेदकनो एक समय, क्षयोपशमनो छाशठ सागरोपम, अने क्षायिक समकेतनो काल, तेत्रीश सागरोपमनो छे.

हवे एक जीवने संसारमां परिभ्रमण करतां कयुं समकेत केटली वार आवे? ते कहे छे. एक उपशम, बीजुं सास्वादन, ए बे समकेत उत्कृष्टथी पांच वार आवे. अने क्षायिक तथा वेदक ए बे एकज वार आवे, तथा क्षयोपशम असंख्याती वार आवे.

हवे समकेत आववानो विरह काल कहे छे. एक उपशम, बीजुं सास्वादन, अने त्रीजुं क्षयोपशम, ए त्रणनो विरहकाल उत्कृष्टथी अर्द्ध पुजल परावर्त होय. अने जघन्यथी अंतर मुहूर्त होय. तथा क्षायिक अने वेदक ए बे सम्यकत्त्व तो जीवने एक वार आव्या, ते पाछा जाय नही माटें एनो विरहकाल नथी.

हवे चौद गुणठाणानां मात्र नामज लखीयें छेयें. १ मिथ्यादृष्टि, २ सास्वादन सम्यग्दृष्टि, ३ मिश्रदृष्टि, ४ अविरति सम्यग्दृष्टि, ५ देशविरति, ६ प्रमत्त, ७ अप्रमत्त, ८ निवृत्ति, ए अनिवृत्ति, १० सूक्ष्म संपराय, ११ उपशांत मोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगी

केवली, १४ अयोगी केवली॥इति गुणस्थानक नामानि

हवे चौद गुणस्थानकनुं कालमान कहे छे. मिथ्यात्व गुणस्थानक, अभव्यने अनादि अनंत अने भव्यने अनादि सांत तथा सादि सांत पण होय, तथा पाचमुं, छठुं, सातमुं, अने तेरमुं, ए चार गुणस्थानकनुं कालमान देशों ऊणी एक पूर्वकोटी वर्षनुं जाणवुं. तथा चोथानुं साधिक तेत्रीश सागरोपमनुं जाणवुं, तथा बीजा सास्वादननुं छ आवलि प्रमाण अने चौदमानुं पांच ह्रस्व अक्षर उच्चार प्रमाण कालमान जाणवुं, तथा शेष छ गुणठाणानुं अंतरमुहूर्त कालमान जाणवुं. ए उत्कृष्ट कालमान कह्युं ॥

इति श्रीमद् पंडित प्रवर पन्यास गणी श्रीसौभाग्य विजयजी महाराज तत् शिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी महाराज तत्शिष्य मुनि मयाविजयेन विरचिते श्रीशास्त्ररहस्यप्रकाशे प्रथम वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय वर्ग प्रारंभः ॥

ए वर्गमां त्रूटक त्रूटक सिद्धांत शास्त्रना बोल कहीशुं.

१ जे यति वेषधारी श्रीजिनप्रतिमा भरावे, तथा नविन जिनमंदिर करावे, प्रतिष्ठा स्थापन पोतें पोतानुं द्रव्य खरचीने करावे, ते जिनबिंब पूजवा वांदवा

योग्य नही. ए अधिकार, श्रीमहानिशीथ सूत्रमां छे.

२ श्रीतीर्थंकरनी प्रतिमा अन्यदर्शनीयें ग्रहण करी होय,तेने वांदवी नही. ए वात, उपासकदशांगमां छे.

३ साधर्मिक श्रावकने जमाडवा, साहामी वात्सल्य करवुं, ते शंख पुष्कली ने अधिकारें, तथा श्रावक श्रावकने नमस्कार करवो, ते सनत्कुमार इंद्रने अधिकारें कह्युं छे. ए वात, श्रीनगवती सूत्रना अगीयारमा तथा बारमा शतकमां छे.

४ साधुने योगवहीने सूत्र नणवां तथा सनामां बेसी उपदेश आपवो, व्याख्यान करवुं, ते व्यवहार सूत्रमां जेटले वर्षे कह्युं छे, तेटले वर्षे चारित्र पर्याय पालते गुरु योग जाणी आज्ञा उपदेश करे, ते विना करे, तो तेमने गुरु वचन तथा जिनवचन अने सिद्धांतना उबापक कह्या छे. केम के श्रीसिंदूरप्रकरमां गुरु आज्ञा विना जे क्रिया करवी, ते सर्व वृथा कही छे.

५ श्रावक गृहस्थारंनी होय, अने साधुमुनिराजनी परें सना नरी उपदेश आपे, तथा व्रत उपवासादिक पच्चरकाण करावे, ते पण गुरु आज्ञा लोपी सिद्धांतना उबापक जाणवा. कारण के, नगवतीसूत्रमां गृहस्थने श्रोता कह्या छे, परंतु उपदेश आपना

रा कह्या नथी. लद्धा गहियठा पुछियठा इति नग वती वचनात्. पण ए पाठमां ठवएसिअठा कह्या न थी. तेमज प्रश्नव्याकरणना संवर द्वारमां पण देवता तथा गृहस्थने सांजलवानो अधिकार छे. पण सजा जरीने उपदेश आपवानो अधिकार नथी. श्रीनिशीथ सूत्रमां जे साधु, गृहस्थने सूत्र जणावे, अने गृहस्थ नुं जणेलुं सूत्र वखाणे, तो ते साधुनुं चार मासनुं चारि त्र जाय, तथा तेने चार मासना चउविहार उपवास नी आलोयणा आवे, एम कह्युं छे.

६ वली सुपात्रदान साधु आश्रयी कह्युं छे, केम के श्रीसूयगडांगमां १ अन्नपुस्से, २ पाणपुस्से, ३ व त्थपुस्से, ४ सेण पुस्से, ५ लेणपुस्से, ६ मणपुस्से, ७ व यणपुस्से, ८ कायपुस्से, ए नमस्कारपुस्से, ए नव प्रका रें पुण्य बंधनां स्थानक कह्यां छे. तेमज श्रीउपासक दशांगमां आनंद श्रावकें एम कह्युं छे, के हुं साधु विना बीजाने न आपुं. इहां कोइ एम कहेशे के शं खजी प्रमुख श्रावक तो जम्या देखाय छे? तेने उत्तर क हीयें छेयें. के तिहां साहामी वछल तथा पोसह करना रा जमाडीयें एम नथी बोल्या, तिहां तो एक स्थान कें जमछुं! एवोज पाठ छे. तथा वली साहामीवात्स

ब्य तो सरखा साधर्मि नाइने सहाय करवुं, तथा धर्मथकी पडताने स्थिर करवो. तेने कहीयें बैयें. पण एकांतें जमाडवामांज साहामीवात्सल्यनी स्थापना न थाय. तथा श्रीजिनशासनमां साते क्षेत्रें दान आपवुं कह्युं बे. वली अनयदान, सुपात्रदान, कीर्त्तिदान, उचितदान अने अनुकंपादान. ए पांच प्रकारें पण दान कह्युं बे. तेमां गृहस्थने तो ड्व्यथी तथा नावथी जिहां जेम घटे, तिहां तेम उपयोग सहित करवुं. पण नज करवुं. एवो निषेध नथी. जेम श्री जिनशासननी उन्नति वधे, तेम करवुं.

७ योग वह्या विना साधुने सूत्र वांचवानी ना कही बे. तो नगवतीजीने विषे, खंधक तापस दीक्षा लइने तरतज द्वादशांगी नण्या. वली अनुत्तरोववाइने विषे धना काकंदी, नव महीना चारित्र पाली इग्यार अंग नण्यां, तेमां काइ योग वह्यानो अधिकार देखातो नथी. माटे योग वह्या विना साधु नही होय, एम समजवुं नही. तथा वली जे योग वह्या विना साधु होय, ते मोक्षमार्गमां नथी अने ते साधु संसारमां घणा नव नमशे. एवो पाठ पण कोइ सिद्धांत शास्त्रमां देखातो नथी. माटे ए वात एकांत नथी.

८ वली श्रावकने उपधान वह्या विना नवकार प्रमु
ख सूत्र न जणवां, तथा उपधान वह्या विना कोइ
क्रिया खपमां न आवे, एवुं पण एकांत नथी. कार
ण के श्रीवीरजगवानें स्वमुखें वर्णवेला एवा दश श्रा
वकना अधिकार, अथथी मांमीने इति सुधी श्रीउपा
सकदशांग सूत्रमां ठे. तेमां पण ते श्रावक बार व्रत
उच्चरीने तरतज पडिमा वह्या ठे. पण उपधान व
ह्यानो अधिकार कांइ नथी. माटे उपधान वह्या वि
ना श्रावक न कहेवाय, ए वात पण निश्चयवाचक
न समजवी. कारण के कोइथी वधारे व्रत पच्चरकाण
न थइ शके, तो मात्र एक नोकारसीनुं पच्चरकाण अ
ने एक काकना मांसनो त्याग एटलो नियम करना
र पण श्रावक कहेवाय ठे. ए वात में गुरु मुखथी
सांजली ठे के जघन्य तो उपधाननो कांइ निश्चय
नियम नथी. ते वात, श्रीजरहेसर वृत्तिमां पण वंक
चूलना अधिकारथी जाणवी. श्रीजैनमार्गानुसारी
आत्मानुयायीनी जे जे क्रिया, ते सर्व सफल ठे.

ए तथा श्रीउमास्वाति वाचक अने पादलिप्ताचार्य
कृत प्रतिष्ठाकल्पमां प्रगट लखेलुं ठे के "सूरिःप्रतिष्ठां
कुर्यात्" ए पाठ प्रमाणें आचार्य तथा बहुश्रुत यति

प्रतिष्ठा करे, पण श्रावकें प्रतिष्ठा करवी एम कह्युं नथी.

१० वळी उत्सूत्र प्ररूपकना हाथें प्रतिष्ठित तथा गृहस्थ प्रतिष्ठित एवां जे जिनबिंब, ते अवंदनीय छे. एम सात प्रकारें मिथ्यात्वीनां चैत्य अथवा बिंब वांदवां निषेध छे. ए वात श्रीजिनपति सूरिकृत प्रबोधोदय ग्रंथ तथा बृहत्कल्पभाष्यनी चूर्णीना प्रथम खंडमें छे.

११ तथा श्रीविजयदान सूरिकृत सात बोलें समस्त साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकायें योग्य वर्त्तमान कालें मार्गानुसारी पणे वर्त्तवुं. ते सात बोलनो विस्तारें अर्थ संवत् १७४६ ना पौषशुदि १३ ने वार शुक्रने दिने श्रीअणहिलपुर पाटणे श्रीहीरविजय सूरियें लखी प्रगट कीधो, तेमां आचार्य श्रीविजयसेन सूरि, श्रीधर्मसागरउपाध्याय, श्रीविमलहर्ष उपाध्याय, श्रीशांतिचंद्रगणि उपाध्याय, श्रीकल्याणविजय उपाध्याय, श्रीसोमविजय उपाध्याय, पन्यास श्री सहजसागर, पन्यास कान्हर्षि इत्यादिनी साक्षी करावी. एम समस्त संघें मळी ए सात बोल विस्तारें वर्णव्या. तेमां द्रव्यलिंगी साधुयें पोतानुं द्रव्य खरची करेलां चैत्यो तथा साधु विना श्रावकनां प्रतिष्ठित करेलां चैत्यो, तेने वांदवा पूजवानो निषेध कर्यो छे.

ग्रंथ वधे माटे सात बोल, इहां विस्तारें लख्या नथी.

१२ तथा श्रीतीर्थंकर जगवान् समवसरणमां देश ना आपवाना अवसरें पादपीठ उपरें पोतानां चरण कमल थापी बे हाथ योग मुद्रायें राखे. पुनः श्रीआ चार्य पण तेज प्रमाणें राखे. परंतु एटलुं विशेष जे तीर्थंकर मुहपत्ति न राखे, अने आचार्यजी मुहपत्ति राखे, ए अधिकार, श्रीचैत्यवंदन बृहद्भाष्यमां छे.

१३ तथा जगवान् देशनावसरें "नमोतित्थस्स" एम नमस्कार करे, ते अधिकार, आवश्यकनिर्युक्तिमां छे.

१४ पुनः तीर्थंकर, दीक्षावसरें तो नमोसिद्धस्स क ही पोतें पोताने हाथें लोच करे, केम के स्वयंबुद्ध छे, पोतानी मेलेंज बोध पाम्या छे, माटे. ए अधिकार श्री आचारांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना छठा अध्ययने छे.

१५ श्रीतीर्थंकर तथा श्रीतीर्थंकरनी प्रतिमा निमित्त जे गृहस्थें आहार पक्कान्न नीपजाव्यां होय, ते आहार कोइ साधु मुनिराज गोचरी आवे थके तेमने वोहो रावी आपे, ते साधुने लेवो कल्पे, ए अधिकार बृह त्कल्पजाष्यनी टीकामां कह्यो छे तथा चैत्यवंदन जा ष्यनी संघाचारनामें टीकामां कह्यो छे.

१६ तथा साधु आहार करवा बेठा छे, एटलामां

बीजो कोइ प्राहुणो साधु आवे,तेवारें निस्सही सांजली ने वास करी रहेलो साधु आहार करवो गंफीने ते आवेला साधुने माटे आहारनी तजवीज करे. ए अधिकार विस्तारें तो उघ निर्युक्ति सूत्रनी वृत्तिमां छे, परंतु ते एकज सामाचारी वाला साधु आश्रयीने छे, अने जिन्न सामाचारी वाला साधुने तो आहारनी जरुर नही पण पीठ फलकादि निमंत्रणा करवी. ए अधिकार, श्रीआचारांगसूत्रनी वृत्तिमां सातमा अध्ययनने प्रथम उद्देशें कह्यो छे ॥

१७ तथा रात्रिने विषे साध्वीयो उपाश्रयना बारणां ढांके अने जिनकल्पी साधु नहीज ढांके तथा थिविरकल्पी तो कारण विशेषें ढाके,कारण के उघाडा दरवाजामां चोर, सिंह श्वानादिक प्रवेश करे, माटें. ए अधिकार, बृहत्कल्पजाष्यनी टीकामां बीजे खंमें छे.

१८ वली साधु अटवी प्रमुख मार्ग उल्लंघन करतां पोतानी पासें राखवा योग्य आहारादिक संबल राखे, ते उत्सर्गथी तो नहीज राखे, पण अपवादें जो नही राखे, तो एक उपवासनुं प्रायश्चित्त दूषण आवे, अने संयम विराधना तथा आत्मविराधना होय, माटें सूजतो अथवा असूजतो आधाकर्मि आहार प

ण राखे. इत्यादि बृहत्कल्पभाष्यनी वृत्तिमां बीजे खंमें छे. तथा गोचरी प्रमुखें फरतां थकां साधु जे छे, ते गृहस्थना घरनुं बारणुं उत्सर्ग मार्गे तो नहीज उघाडे, परंतु अपवाद मार्गे कारण विशेषें उघाडे अथवा साद पण करे. ए अधिकार आचारांगसूत्रनी वृत्तिमां बीजे श्रुतस्कंधें प्रथम उद्देशें छे.

१ए तथा जे साध्वी बहुश्रुत होय, अपूर्व सिद्धांत जणेली होय, ते साध्वी पासें कोइ साधुनें जणवुं. होय तो ते साधु पण जणावनार साध्वीने फेटा वंदन करे, अथवा कारणें उसन्ना पासडादिकने पण साधु वंदन करे, जो न वांदे, तो उपद्रव उपजे, ते अजापालक वाचकने दृष्टांतें जाणवुं. ए अधिकार घणो छे. ते प्रश्नोत्तरसार्द्धशतक ग्रंथथी जाणवो.

२० तथा श्रीजिन गृहमां अथवा जिनप्रतिमानी उपरें वृक्षादिक तथा मधुपिंम प्रमुख आशातना थती होय अने तिहां कोइ श्रावक उपयोगवान् न होय, तो साधु पोतें पोताने हाथें ते दूर करे, जो तेम न करे, तो ते साधुने प्रायश्चित्त दोष लागे, ए अधिकार बृहत्कल्पभाष्यमां कह्यो छे.

२१ तथा जे साधु फासु पाणीथी वस्त्रनो मेल

काढता नथी तेमने ते मलना प्रसंगथी जीवनी उत्प त्ति थाय तथा डुगंछनिक पणुं इत्यादि घणा दूषण लागे. ए अधिकार, ओघनिर्युक्ति सूत्रनी वृत्तिमां छे. अने आचारांग सूत्रें "न धोईज्जा" एवो पाठ छे. ते प्रायः जिनकल्पी साधुनी अपेक्षायें जणाय छे.

२२ तथा साधु स्थंडिल भूमिकायें जाय, तेवारें बे साधु साथें जाय परंतु तेमां एटलुं विशेष छे. जो तरुण साधु होय तो बे साधु एकठा मली जाय, पण जो वृद्ध स्थविर होय तो एक पण जाय अने बे पण जाय. ए अधिकार, ओघनिर्युक्तिमां विस्तारें कह्यो छे.

२३ वली आचार्यादिक साधु प्रमुख जेवारें विहार करे, तेवारें सर्व प्रकारें धर्मवृद्धि तथा शासन्नोनति रूप सर्व कार्यनी कुशलता माटे मुहूर्त लग्नादिकनी शुद्धि जोइने करे. ए वात बृहत्कल्पवृत्तिना बीजा खंडमां छे.

२४ वली ज्यां सुधी छद्मस्थावस्था होय, तिहां सुधी साधु वस्त्रादिक उपधिनुं पडिलेहण करे, अने केवली भगवान् तो जीवनी उत्पत्ति थती देखे, तोज पडिलेहण करे, नही देखे, तो पडिलेहण न करे. ए अधिकार ओघ निर्युक्तिमां श्रीभद्रबाहु स्वामीयें कह्यो छे.

२५ वली चरम शरीरीपणुं तथा तीर्थंकरपणुं पाम

वानुं नियाणुं करवुं, ते पण साधुने अयुक्त छे. अपवा दें पण नियाणुं करवुं नही. ए अधिकार, आवश्यक बृहद्वृत्तिमां तथा ध्यानशतकमां छे.

१६ वली जयवीयराय इत्यादि प्रणिधान छठा गुण गणाथी उपरांत न करवुं. कारण के प्रणिधान प्रार्थना जे शुभ वस्तुनी इछा, ते उपरला सप्तमादिक अप्रमादि गुणगणामां छे नही, माटे मनाइ करी छे. ए अधिकार, पूजा पंचाशक वृत्तिमां विस्तारें छे.

वली श्रावकने जघन्यथी आठ प्रवचन माता अने प्रतिक्रमणादि षडावश्यक तथा उत्कृष्टथी तो दशवैकालिक सूत्रना चोथा छ जीवणिया नामें अध्ययन सुधीज जणवुं कह्युं छे. ए अधिकार, आवश्यक चूर्णीमां छे. तथा कोइक श्रावक अगियार प्रतिमा वह्या पछी पाछो घरमां आवे. ए वात निशीथ चूर्णीना बीजा खंमने शोलमे उद्देशें छे. तथा बृहत्कल्प टीकामां अने उपासक दशा, प्रतिमापंचाशकमां पण छे.

॥ तथा श्रावकनी अगीयार प्रतिमा कही छे, ते कहे छे. पहेली एक मासनी, बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी. एम एकेक मास वधारतां अगीआरमी प्रतिमा अगीआर. मासनी थाय. तेवारें सर्व मली छासठ म

हीना एटले साडा पांच वर्ष थाय. तिहां १ सम्यक्त्व, २ व्रत, ३ सामायिक, ४ पौषध, ५ काउस्सग्ग, ६ ब्रह्मचर्य, ७ सचित्तत्याग, ८ कृषीप्रमुख आरंभ वर्ज्जन, ए बीजा पासें आरंभ न करावे, १० उद्देशी ते पोताने माटें आहार नीपजे ते आहार न लीये, अने अगीयारमी प्रतिमामां तो गोचरी प्रमुख साधुनी परें करे, ए रीतें प्रतिमां प्रतिमामां वर्त्तन करे. उक्तं चः— दंसण वय सामाइय, पोसह पडिमा अबंभ सच्चित्ते ॥ आरंभ पोस उद्दि, ठ वज्जए समणभूएय॥ए प्रतिमाधारी श्रावक ते उत्कृष्ट श्रावक कहेवाय. केम के श्रावक पण जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना कह्या छे. श्लोक ॥ देवपूजा गुरूपास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः ॥ दानं चेति गृहस्थानां, षट् कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥ ए षट् कर्म जे श्रावक नित्य करे, ते श्रावक प्रतिमा वहेवानो अधिकारी थाय. ए अधिकार, पूजापंचाशक तथा उपासकदशांगथी जाणवो.

तथा श्रावकें जे पच्चरकाण करवुं, ते एक आत्मानी साखें करवुं, बीजुं श्रीजिनप्रतिमा आगल करवुं, अने त्रीजुं तो प्रगट वाच्यवाचक संबध रूप प्रत्यक्षआत्मस्वरूपदर्शि, भवभयहरण, संसारसमुद्रत

रणतारण एवा आचार्यादिक श्रीमुनिराजादि गुरु पासें करवुं, केम के? गुरु आणा विना सर्व क्रिया निःफल छे. एटले फलीभूत थाय नहिं.जेम राजा विना सैन्य कदापि विजय नहीज पामे. ए अधिकार,श्रीसिंदूरप्रकरनी टीकामां घणो विस्तारें छे. तथा उत्तराध्ययनना प्रथमाध्ययनें कुलवालुयाना दृष्टांतमां पण ए त्रणनी साखें पच्चख्काण करवुं कह्युं छे. वली ए अधिकार,योग शास्त्रना त्रीजा प्रकाशमां पण छे.

तथा श्रीमहानिशीथ सूत्रें कह्युं छे, के गुरु होय ते प्रथम श्रावकने जैनमार्गनी श्रद्धा कराववा माटें सवारमां उठी श्रीजिनप्रतिमा तथा योगवाही गुरुनां दर्शन कर्या विना मुखमां पाणी पण लेवुं नही, एवी प्रतिज्ञा व्यवहारथी भव्य जीवोने करावे. ए प्रतिज्ञा प्रथम सम्यक्त्व पामवानी कारणभूत छे. तथा उत्तर गुणरूप जे दश पच्चख्काण छे, ते पण श्रीजिनमार्गनी शैली तथा धर्म पामवानां कारण छे.

तथा छ आवश्यक श्रावकने उभयकाल करवां. तेनो परमार्थ कहे छेः– श्लोक ॥ स्वस्थानाद्यत् परस्थानं, प्रमादस्य वशाद्गतः ॥ तत्रैव क्रमणं भूयः, प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ १ ॥ जे पोताना स्थानकथी परस्था

नकें एटले प्रमादने वश गयो, तेने आलोइने फरी पोताने स्थानकें आववुं, ते प्रतिक्रमण कहीयें.

तथा उत्तर गुण रूप दश पच्चरकाणनां नाम कहे छे. १ नाविपच्चरकाण, २ अतीत पच्चरकाण, ३ कोटि सहित, ४ नीयंत्रित, ५ सागार, ६ अणागार, ७ परिमाणकृत, ८ निर्विशेष, ए सांकेत, १० अछा.

हवे ए दश पच्चरकाणोना अर्थ कहे छेः—जे पजोसणादि पर्वने विषे कोइ कारणने लीधे छठ अठमादि तप थइ शकशे नहीं? एवुं विचारीने ते पर्व आव्यानी पहेलांज ते पच्चरकाण करी लीयें, ते प्रथम नाविपच्चरकाण कहियें. एमज पजोसण पर्व वीती गया पछी जे तेज पर्व संबधि छठ अठमादि तप करी लेवुं, ते बीजुं अतीत पच्चरकाण जाणवुं. तथा उपवास, आंबिल एकासणादि तप करीने फरी ते तपने बीजे दिवसें प्रजातथी वली बीजुं पच्चरकाण करवुं, ते त्रीजुं कोटि सहित पच्चरकाण जाणवुं. तथा प्रथमथी धारणा करी राखवी, जे महारे अमुक दिवसें अमुक तप करवुं छे. ते चोथुं नियंत्रित पच्चरकाण. तथा जे आगार सहित पच्चरकाण करवुं, ते पांचमुं सागार पच्चरकाण, अने जेमां कोइ आगार न होय, एवुं आगार रहित पच्चरकाण करवुं,

ते छहुं अणागार पच्चरकाण. तथा घरनी संख्या करवी, एक बे इत्यादि कोलीयानी संख्या करवी, ते सातमुं परिमाणकृत पच्चरकाण तथा अशनादि चारे आहा रनो त्याग करी अनशन करवुं, ते आठमुं निर्विशेष प च्चरकाण, तथा नवमा सांकेत पच्चरकाणना आठ नेद छे. ते कहे छे. कोइकें प्रथम पोरिसि पच्चरकाण करेलुं होय, पछी कांइ काम आवी पडवाथी पोरिसीनो काल पूर्ण थइ गयाथी मनमां विचारे के एटलो वखत, म्हा रो व्रत विनानो जाय छे, तेथी हुं सांकेत पच्चरकाण करुं, तो निरंतर व्रतमां रहुं? एटला माटे १ ज्यां सुधी हुं मुठिमां अंगुठो राखुं, ते अंगुठ सहियं २ मुठी वाली राखुं त्यांसुधी वली म्हारे पच्चरकाण छे. ते मुठसही, ३ गंठिसही, ४ घरसहियं, ५ अंगनो परसेवो था य, त्यां सुधी तेने सेउसहियं पच्चरकाण कहियें, ६ उ साससहियं, ७ थिबुग सहीयं ते पाणीना बिंदूआ सूके, त्यां सुधी, ८ जोइसहियं एटले दीवा प्रमुखनी ज्योति रहे त्यां सुधी, ए आठ प्रकारें सांकेत पच्चरकाण कह्युं.

हवे दशमुं अध्धापच्चरकाण. इहां अध्धा शब्दें काल जाणवो. ते काल, मुहूर्त्तथी मांमीने पोरिसी उपवासादि क मली दश प्रकार, ए पच्चरकाणना छे. ते कहे छेः—

१ नवकारसी, २ पोरिसी, ३ पुरिमट्ठ, ४ एकासणुं, ५ एकलठाणुं, ६ विगइ, ७ आंबिल, ८ उपवास, ए दिवसचरिम अथवा नवचरिम, १० अनिग्रह. ए दश प्रकारें अद्धापच्चरकाण कह्युं. तथा नावि पच्चरका णादिक जे ठे, ते सर्व उत्तर गुण पच्चरकाण जाणवां,

अने मूल गुण पच्चरकाण तो साधुने पांच महा व्रत रूप ठे, अने श्रावकने अणुव्रत रूप ठे.

हवे व्यवहार नाष्य मध्यें श्रीजिननवननी आशा तना टालवा माटें साधु तथा श्रावकने उत्कृष्ट चैत्य वंदन करवा पर्यंत रहेवुं कह्युं ठे, अने बीजुं वली श्रा वकने पूजा प्रतिष्ठा प्रमुख कारणें रहेवुं कह्युं ठे, परं तु उपरांत रहेवानी ना कही ठे.

तथा पांच प्रकारनां श्रीजिनचैत्य कह्यां ठे, तेनां नाम कहे ठे. १ नक्तिचैत्य, २ मंगलचैत्य, ३ निश्रा कृत चैत्य, ४ अनिश्राकृतचैत्य, ५ शाश्वत चैत्य. तेमां प्रथम जे पोताना घरने विषे त्रण कालें नक्ति करवाने अर्थें करावे, ते प्रथम नक्तिचैत्य, बीजुं घर ना बार साखने विषे जिनमुद्रा चितरावे,ते मंगल चै त्य. ए मथुरा नगरीयें श्रीपार्श्वनाथनी मुद्रा करेली देखाय ठे. त्रीजुं पोताना गछनुं चैत्य, ते निश्राकृत

चैत्य कहेवाय. चोथुं सर्व संघोना समुदायनुं चैत्य होय, ते अनिश्राकृत चैत्य कहेवाय. पांचमुं जे सिद्धायतन ते शाश्वत चैत्य कहेवाय. ए पांच प्रकारनां चैत्य श्रीप्रवचनसारोद्धारमां कह्यां छे. तथा वळी साधर्मिक चैत्य पण तेज ग्रंथें वारतकमुनिना पुत्रें पोताना पितानी मूर्त्ति साधुना चिन्ह सहित कीधी छे.

हवे सामायिक चार प्रकारनां कहे छेः—पहेलुं श्रुत सामायिक, बीजुं सम्यक्त्व सामायिक, त्रीजुं देशविरति सामायिक, अने चोथुं सर्वविरति सामायिक, श्रावकने दिवस संबंधि तथा रात्रिने विषे वळी पर्युषणादि पर्वने विषे तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य अने साधारण द्रव्यना रक्षणने अर्थें जे जे मार्गानुसारें वर्त्तवुं, ते सर्व देशविरतिपणुं जाणवुं. ए अधिकार, श्राद्धविधि ग्रंथथी जोवो. इहां लख्यो नथी.

हवे साधुनी बार प्रतिमा कही छे, तेने विषे एटलो विशेष छे के जे, साधुनुं वज्रऋषभनाराच संघयण होय, अने अत्यंत मननी स्थिरता होय, वळी स्वपररूपज्ञायक, जाणंग एवा मुनिराज सानुकूल तथा प्रतिकूल उपसर्ग सहन करवाने समर्थ होय, ते बारे पडिमा वहे. वळी ते पडिमाधारी मुनिनी पांच ना

वना छे, तेनुं स्वरूप विस्तारें व्यवहारज्ञाष्यनी टीका मां छे. ते बार पडिमानुं काळमान कहे छेः—पहेली एक मासनी, बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी, एम यावत् सातमी सात मासनी जाणवी. तथा आ ठमी, नवमी, अने दशमी, ए त्रणे सात सात अहोरा त्रनी अने अगीयारमी एक अहोरात्रनी तथा बार मी एकज रात्रिनी होय. ए पडिमा तथा अनिग्रह ए एकज नामें छे. एनो विशेष अधिकार, श्रीप्रवचन सारोद्धारनी बृहद्वृत्तिमां छे, तिहांथी जोवो.

तथा कल्पचूर्णी मध्यें जिनकल्पी मुनिनो अधि कार छे. तेवीज रीतें प्रायें यथालंदी मुनिनो कल्प पण जाणवो. ते यथालंदी बे प्रकारनां छे. एक गछ प्रतिबद्ध, बीजा गछ अप्रतिबद्ध, ए साधुउने गुरु ते मनी सांहामा जइने सूत्रार्थ आपे छे, कारण के, अ प्रतिबद्ध मुनिउ जे छे, ते बीजा कोइ मुनियोने वांदता नथी, तेथी कदाच बीजा मुनिउ द्वेष करे, ते माटेज गुरु तेमने साहामा जाय. इहां यथालंद शब्दें काळनुं मान छे. ते जघन्यथी तो पाणीथी नींजेलो हाथ सू काइ जाय, तेटला काळमाननुं ए पच्चरकाण छे.

तथा बीजा लब्धि प्रतिपन्न मुनियो, ते जंघाचा

रण, विद्याचारण, व्योमचारण, जलचारण, अग्नि शिखाचारणादि अनेक भेदें सिद्धांतें कह्यां छे.

तथा स्थविरकल्पी मुनिनो व्यवहार तो ए छे जे, मार्गानुसारें वर्त्तवुं, तेनो सिद्धांतें विस्तार घणो छे, परंतु इहां स्वल्प मात्र लखुं छुं ॥गाथा॥ पंचा सवा विरमण, पंचिंदिय निग्गहो कसाय जउ ॥ दंम तियस्स विरइस, तरस्सहा संजमो होइ ॥ १ ॥ अर्थः—१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह. ए पांच आश्रवथी विरम्या एटले दूर थया, पांच इंद्रियनो निग्रह एटले पांचे इंद्रियोना विषयो जे छे, तेनो त्याग कर्यो, तथा क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चार कषायने जीत्या छे, तथा मन, वचन अने काय, ए त्रण दंम, तेना अकुशलपणाने जेणें वर्ज्युं छे, ए सत्तर भेदें संयम पाले, तथा मूलोत्तर गुण ते चरणसित्तरी अने करणसित्तरीना धरनार होय, ते गाथायें करी कहे छे ॥ वय समण धम्म संजम, वेयावच्चं च बंभ गुत्तीउ ॥ नाणाइ तियं तव को, हनिग्गहाइंइ चरण मेयं ॥१॥ पिंमविसोही समइ, भावणा पडिमाय इंदिय निरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीउ, अभिग्गहो चेव करणं तु ॥ २ ॥ वली ते मुनि आहार, उ

पाश्रय, वस्त्र अने पात्र ए चार प्रकारें पिंमविशुद्धि करनार, बेहेंतालीश दोष रहित आहारना ग्रहण करवा वाला. ए अधिकार, विशेषथी पिंमनिर्युक्ति ग्रंथनी श्रीनद्रबाहु स्वामिकृत टीका तथा श्रीमलयगिरि महाराजकृत सात हजारी टीका तथा श्रीजिनवल्लनसूरिकृत पिंमविशुद्धि ग्रंथ तेनी श्रीजिनपति सूरियें टीका करेली छे, तेमां तथा श्रीनेमिचंद्र सूरिकृत प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ तेनी टीका श्रीसिद्धसेन सूरिकृत छे. तथा श्रीहेमचंद्र सूरिकृत योगशास्त्रथी जाणवो.

तथा मुनि छ कारणें आहार लीये, ते कारण कहे छेः—एक क्षुधावेदनी न सहन थवाथी, बीजुं वेयावच्च करवाने अर्थें, त्रीजुं संयम पालवाने अर्थें, चोथुं प्राण रक्षणार्थें, पांचमुं पांच समिति शोधवाने अर्थें, छठुं धर्मध्यान करवाने अर्थें, ए छ कारण जाणवां.

तथा मुनिराज छ कारणें आहार न लीये, तेनां नाम कहे छेः—१ ज्वरादिक रोग प्राप्त थये थके, २ उपसर्ग सहन करवाने अर्थें, ३ माता पिता व्रत मूकावे ते वखतें, ४ ब्रह्मचर्यनी गुप्ति राखवाने अर्थें, ५ जीवदया निमित्तें जयणा पालवाने अर्थें, ६ठ अ

छमादि करे, ६ अंत अवस्थायें अनशन करे, तेवारें ए ठ कारण आहार न लेवानां कह्यां.

हवे सिद्धांतमां मुनिने पांच प्रकारना अवग्रह कह्या छे, तेनां नाम कहे छेः— भरत क्षेत्रना साधु होय, ते सौधर्म इंद्रनी आज्ञा लिये, अने ऐरवत क्षेत्रना साधु ईशानेंद्रनी आज्ञा लीये, ते प्रथम देवेंद्रनी आज्ञा संबंधी अवग्रह जाणवो. बीजी राजानी, त्रीजी वस्तिना मालेकनी एटले गृहपतिनी आज्ञा लीये, चोथी सागारिकनी, पांचमी साधर्मिकनी आज्ञा लीये, ए पांचमां जिहां जेनुं स्थानक तथा हुकुम आदेश होय, तिहां ए पांचेनी आज्ञा लइने साधु मुनिराज वस्तिमां निवास करे, ते पांच अवग्रह जाणवा. तथा वली बे कोश सुधीनो वहोरी लावेलो आहार साधुने कल्पे. उपरांत नही कल्पे. तथा प्रथम पहोरनो लावेलो आहार, ते त्रीजा पहोर सुधी वावरवो कल्पे, उपरांत नही कल्पे. तथा आहारनुं बत्रीश कवलनुं प्रमाण छे. ए सर्व वात, विस्तारें श्रीप्रवचनसारोद्धार ग्रंथमां छे.

तथा शास्त्रमां चार प्रकारनी भाषा कही छेः— १ सत्यभाषा, २ मृषाभाषा, ३ सत्या मृषा भाषा, ४ असत्या मृषा भाषा. तेमां प्रथम सत्यभाषा दश

प्रकारें छे. ते कहे छेः– १ जेम कुंकणदेशमां पाणीने पीचं कहे छे. ते जनपद सत्यजाषा, २ कुमुद, कुवलय, उत्पल, इत्यादिकने विषे पंकज कमल ए सर्वनुं जाषण, वचन, जूडुं जूडुं छे; परंतु वस्तु पदार्थ कमल एकज सम्मत छे. ते सम्मतसत्यजाषा, ३ जेम अंक स्थापना, एक, दश इत्यादि तेमज मासो, रति, तोलो, शेर, मण, जे निर्धारी लखी थापीयें, ते तोल कहेवाय. तेमज आचार्यादिक जिनप्रतिमा प्रमुखनी थापना करीयें, ते सर्वे, स्थापना सत्य जाणवुं. ४ जो कुलवृद्धि न करतो होय, तो पण कोइकनुं नाम कुलवर्द्धन होय छे. ते नामसत्यजाषा, ५ जो कपटें करी साधुनो वेष लीधो होय, तो पण तेने साधु कहीयें, जेम जवाइया प्रमुख जे छे, ते साधुनो, महादेवनो, रामकृष्ण इत्यादिकनो वेष लीये, तेवारें तेने लोको पण जेवो वेष देखे, तेवुं नाम कही बोलावे, ते रूपसत्य जाणवुं. ६ जेम पांच अंगुलमांहे अनामिकाने देखी तेनी अपेक्षायें मध्यमा अंगुली महोटी कहीयें छैयें, एवी महोटी न्हानीनी प्रतीतें प्रतीतसत्य जाणवुं. ७ जेम पर्वत उपर घास काष्ठ बलतां देखी पर्वत बले छे,

एम कहेवाय, तथा पाणी वासणमांथी ज़वे छे, तेने वासण जवे छे, एम कहेवाय, ते व्यवहारसत्य जाणवुं. ८ जेम पांच वर्ण रंगना छे, तेमां जे स्थानकें जे जे वर्णना रंगनी अधिकता देखाय, जेम भ्रमरमां पीलाश तथा लालाश छे, तथापि काला रंगनी अधिकताने योगें मुख्यतायें भ्रमरो कालो कहेवाय, ते भावसत्य जाणवुं. ९ जेम लिंगना योगथी लिंगी कहेवाय, ते योगसत्य जाणवुं. १० जेम महोटुं तलाव देखीने आ तलाव समुद्र जेवुं छे, एवी उपमा अपाय, ते उपमासत्य. ए दश प्रकारें भाषासत्य छे.

बीजी मृषा भाषा. ते पण दश प्रकारें कहे छेः—
१ क्रोधें, २ मानें, ३ मायायें, ४ लोभें, ५ प्रेमें, ६ द्वेषें, ७ हास्यें, ८ भयें, ९ व्याख्यानविषे कांइक कल्पित बोलवुं, १० चोरने चोर कहेवाथी तेने उपघात थाय. ए दश प्रकार मृषाभाषाना जाणवा.

त्रीजी सत्यामृषा भाषा. पण दश प्रकारें कहे छे. आजे आ नगरमां अटलां माणस, मरण पाम्यां, अटलांनो जन्म थयो, तथा कांइक दिवस छतां पण कहे के, रात्रि पडी. तथा सूर्योदय थया विना, उगो भाइ सूर्य उग्यो, इत्यादि मिश्रभेदें दश भेद थाय छे.

चोथी असत्यामृषा जाषा. ते केवल व्यवहार मात्र जे साची पण नही, अने जूठी पण नहिं ते जाणवी. ए चार प्रकारनी जाषामां सत्य जाषाना कहेनार एवा अने शांत, दांत, धैर्य, औदार्य, गांजीर्यादि गुणोपेत. मित्र शत्रु समचित्त, तृण मणि तुल्य, निःस्पृही, पंचमहाव्रत धारक, ठक्कायना रक्षक, सत्य जाषक, सालंबन ठठे गुणगणे वर्त्तता होय, तो पण जावना, सातमा अप्रमत्त गुणस्थानकनी ठे. एवा साधु मुनिराजनां लक्षण पूर्वे महामुनिउये जे प्रमाणें कह्यां ठे, ते लखीयें ठैयें.

श्लोकः॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्वशं, तत्संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समाश्रित्य च ॥ पर्यंकेन मया शिवाय विधिवत् स्थित्वैकजून्नृद्दरी, मध्यस्थेन कदाचिदर्पितहृशा स्थातव्यमंतर्मुखम् ॥ १ ॥ तथा श्रीहेमचंद्रसूरिकृतश्लोकः ॥ वने पद्मासनासीनं, क्रीडस्थितमृगार्जकम् ॥ कदा स्थास्यंति मस्ते मे, चरंतो मृगयूथपाः॥ २॥अर्थः— अहो हुं चित्तनी वृत्तिनुं रोधन करी, इंद्रियोना विषयनो ध्वंस करी, तथा गतागत वायुनो प्राणायाम करी पर्यंक एटले पद्मासने, एक पर्वतनी गुफामां बेसी एकाकी दृढासन, आत्मानुयायी ता

हश अंतर्वृत्ति करीने क्यारें रहीश!! ॥१॥ तथा महा अरण्यने विषे पद्मासनें स्थित, एटले स्थिरीभूत थये बते, वनचर मृग महारा शरीरें तथा मस्तकें क्यारें आ रूढ थशे ? तथा केवारें मुझने मृगलानां टोलां आवीने परस्पर मुखें मुख चुंबन करशे ? एवा महामुनि योगी श्वर आत्मानुयायी ते निरंतर अढीद्वीपने विषे वर्त्ते बे, तेमने महारो त्रिविधें त्रिविधें नमस्कार हो.

तथा वर्त्तमाने आ दक्षिण भरतमां बत्रीश हजा र देश कह्या बे, परंतु तेमां धर्मनां स्थानक तो मात्र साडा पचवीश आर्यदेश कह्या बे, तेमनां नाम त था ते मध्येनी मुख्य एकेकी नगरीनां नाम कहीयें बैयें.

देश.	नगरी.	देश.	नगरी.
मगध.	राजगृही.	अंगदेश.	चंपा.
वंगदेश.	ताम्रलीप्ति.	कलिंगदेश.	कांचनपुर.
काशी.	वाराणसी.	कोसल.	साकेतन०
कुरुदेश.	गजपुर.	कुशावर्त्त.	सौरिपुर.
पंचाल.	कंपिल्ल०	जंगल.	अहिबत्ता.
सोरठ.	द्वारावती.	विदेह.	मिथिला.
वत्सदेश.	कोसंबी.	शांडिल्य.	नंदिपुर.
मलय.	भद्दिलपुर.	मत्स्य.	वैराटनगर.

वरुण.	अच्छ.	दशार्ण.	मृत्तिकावती.
चेदिदेश.	शुक्तिमती.	सिंधुसौवीर.	वीतभय.
शूरसेन.	मथुरा.	भंगदेश.	पावपुरी.
मासदेश.	पुरीवट्टा०	कुणाल.	श्रावस्ती.
लाट.	कोटिवर्ष.	केकइअर्द्ध.	श्वेतंबिका.

ए साडा पचवीश देशने विषे अष्ट प्रवचन माताना धारक, पंच महाव्रत पालक, एवा मुनि महाराज पांचमा आराना छेहडा पर्यंत विचरशे. तेमां छेहला दुःप्रसह आचार्यादि चतुर्विध श्रीसंघ रहेशे. अने छठो आरो बेसतां आ क्षेत्रमां पहेले पहोरें धर्मनो विछेद थशे. एनो विशेष अधिकार, दीवालीकल्प तथा तिछोगाली पयन्नामां छे, अने साडा पचवीश आर्यदेशनो अधिकार तो आवश्यकचूर्णीमां छे.

तथा आ पंचमकालें भरतक्षेत्रमां एक बकुश, बीजा कुशील, एवा बे प्रकारना निर्ग्रंथ कह्या छे, ते मूलगुण चारित्रने तो दूषण न लगाडे, पण उत्तर गुणमां कोइ कोइ दूषण लगाडे, अने निर्ग्रंथ, स्नातक, पुलाक ए त्रणनो तो आ कालें विछेद छे. ए अधिकार, श्रीभगवतीजीना पच्चीशमा शतकने छठे उद्देशे छे.

वली पांच प्रकारनां चारित्र कह्यां छे. तेमां पहे

लुं सामायिक चारित्र अने बीजुं छेदोपस्थापनीय चारित्र, ए बे चारित्र वर्त्तमान कालें छे. अने परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय तथा यथाख्यात, ए पाछलां त्रण चारित्र, ते आ कालें विच्छेद गयां छे, ए अधिकार, श्री देवाचार्यकृत नवतत्त्व प्रकरणनी टीकामां तथा भगवतीजी अने पन्नवणाजी सूत्रनी वृत्तिथी जाणवो.

तथा जे मुनिने व्रतभंग थयो होय, तो तेज व्रतनुं आलोयण लीधे निर्मल थाय, कारण के एक व्रतनो भंग थवाथी कांइ पांचे व्रत भंग थातां नथी, ए आलोयण लीधे शुद्ध थवानो अधिकार, श्रीठाणांग सूत्रमां छे. तेमज जीवानुशासन सूत्रवृत्ति तथा निशीथसूत्रमां पण कह्युं छे, जे मूलगुणें तथा उत्तरगुणें कांइक व्रतने दूषण लागवाथी कांइ साधुनो संयम जाय नही, जेमाटें ज्यां सुधी छकायनी दया छे, तथा प्रायश्चित्त एटले पापनी आलोयणा लेवाना परिणाम वर्त्ते छे, त्यां सुधी तेने संयमीज कहीयें. आ कालमां बकुश अने कुशील ए बे प्रकारना मुनिथीज पांचमा आराना छेहडा सुधी शासन रहेशे. एम श्रीअभयदेवसूरियें भगवतीनी टीकामां पच्चीशमा शतकने छठे उदेशें कह्यो छे.

तथा श्रीविशेषावश्यकनी टीकामां पांच अणुव्रत

नी चउनंगी करी बे. तेमां १ द्रव्यें हिंसा अने नावें न थी, २ द्रव्यें हिंसा नथी अने नावें हिंसा बे, ३ द्रव्यें हिंसा अने नावें पण हिंसा बे. ४ द्रव्यें हिंसा नथी, अने नावें पण हिंसा नथी. ए चोथो नांगो तो सिद्ध ना जीवोमां पामीयें, पण संसारी जीवोमां न पामियें.

तथा आ पंचम कालें त्रिषष्ठिशिलाका पुरुष न होय, ते तो चोथा आरामांज होय. ते त्रेशठनां ना म लखुं बुं. १ ऋषन, २ अजित, ३ संनव, ४ अनि नंदन, ५ सुमति, ६ पद्मप्रन ७ सुपार्श्व, ७ चंद्रप्रन, ए सुविधि, १० शीतल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत, १५ धर्म, १६ शांति, १७ कुंथु, १७ अर, १ए मल्लि, २० मुनिसुव्रत, २१ नमि, २२ नेमि, २३ पार्श्व, २४ श्रीवर्द्धमान. ए चोवीश तीर्थंक रनां नाम कह्यां. तथा १ नरत, २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत्कुमार, ५ शांति, ६ कुंथु, ७ अरनाथ, ७ सुनूम, ए महापद्म, १० हरिषेण, ११ जय, १२ ब्र ह्मदत्त, ए बार चक्रवर्त्तिनां नाम कह्यां. तथा १ त्रिपृ ष्ठ, २ द्विपृष्ठ, ३ स्वयंनु, ४ पुरुषोत्तम, ५ पुरुषसिंह, ६ पुरुष पुंमरीक, ७ दत्त, ७ नारायण, ए कृष्ण. ए नव वासुदेवनां नाम कह्यां. तथा १ अश्वग्रीव, २

तारक, ३ मेरक. ४ मधुकैटन्न, ५ निशुंन्न, ६ बली, ७ प्रल्हाद, ८ रावण, ९ जरासंध, ए नव प्रतिवासुदेवनां नाम कह्यां. तथा १ अचल, २ विजय, ३ न्नद्र, ४ सुन्नद्र, ५ सुदर्शन, ६ आनंद, ७ नंदन, ८ रामचंद्र, ९ बलन्नद्र, ए नव बलदेवनां नाम कह्यां. एम चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्त्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलदेव मली त्रेशठ थया.

तथा चक्रवर्त्तीने पुण्योदयें करी चौद रत्न प्रगट थाय, तेनां नाम कहे छेः– एक सेनापति, बीजो गाथापति कौटुंबिक ते सर्वजातिनां धान्य, घृत, प्रमुख तेना स्वाधीनमां रहे छे, त्रीजो पुरोहित ते शांतिकर्म करे, चोथुं गजरत्न, ते मस्तकें मणिरत्न बांधी तिमिस्त्रा गुफामां प्रथम प्रवेश करे, पांचमुं अश्वरत्न ते गुफाना बारणां खडखडावे अने पाछे पगें बार योजन चाले, ते अश्व विना बीजो अश्व होय, तो गुफानी बाफथी कोणीकनी पेरें मरण पामे, छठुं वार्धिक रत्न, ते सूत्रधार कर्म करे, निमग्ना नदी प्रमुखना पुल बांधे, सातमुं स्त्रीरत्न, ते चक्रवर्त्तिनां शरीर साथें न्नोगमां आवे, ते विना बीजी चोशठ हजार स्त्री, तथा सवा लाख पिंम विलासिणी स्त्री होय, ए सात पंचिंद्रय रत्न जाणवां.

तथा १ चक्ररत्न ते एक वाम प्रमाण होय, ते सर्व शत्रुउनो क्षय करे, तेने एक हजार अधिष्ठायक देव होय, बीजुं छत्र रत्न पण एक वाम प्रमाण होय, त्रीजुं चर्मरत्न बे हाथ प्रमाण होय. इहां एटलुं विशेष जे छत्ररत्न तथा चर्मरत्न ए बेहुने जेवारें चक्रवर्त्तिना हाथनो स्पर्श थाय, तेवारें विस्तार पामतां बार योजन सुधी पसरे, वली चर्मरत्न उपर पहेले पहोरे शालि वावे, ते शालि पाछले पहोरे जमवामां काम आवे, चोथुं मणिरत्न ते चार अंगुल लांबु अने बे अंगुल पहोलुं छतां बार योजन सुधीमां प्रकाश करे, पांचमुं कांगणिरत्न ते आठशो वार्णिकि प्रमाण होय ते गुफामां प्रकाश करे, अने सर्व प्रकारना विषने हरण करे, तथा चक्रवर्त्ती ते रत्नें करीने गुफामां उगण पच्चाश मांडलां आलेखे, छहुं खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण होय, सातमुं दंड रत्न, ते एक वाम प्रमाण होय. एक हजार योजन भूमिकानुं विदारण करी उंडुं जाय. ए सात एकेंद्रिय रत्न कह्यां. तेनी साथें पूर्वोक्त सात रत्न मेलवतां चौद थयां. ते चौदे रत्न प्रत्येकें एकेक हजार यक्ष देवें करी अधिष्ठित होय.

तथा वासुदेवने सात रत्न होय. तेनां नाम कहे

छेः—१ चक्र, २ खड्ग, ३ मणि, ४ शार्ङ्ग धनुष्य, ५ माला, ६ गदा कौमोदिकी, ७ पांचजन्य नामें शंख ॥ इति ॥

हवे चक्रवर्त्तिना नव निधान कहे छेः—पहेला नैसर्प्पिनामा निधानथी ग्राम नगरादि स्थापन अने तेने फरता कोट किल्ला वाडी प्रमुख थाय, बीजो पांडुक नामा निधान ते सर्व वस्तुनी गणितविद्या तथा राग रागिणी अने चोवीश जातिना धान्यनी उत्पत्तिनुं कारण थाय. त्रीजा पिंगलक नामा निधानें करी पुरुष स्त्री तथा गज अश्व प्रमुख सर्वनां आभरण उत्पन्न थाय, चोथो सर्व रत्न निधान तेनाथी चक्रवर्त्तीनां महोटां प्रधान चौद रत्न प्रगट होय, पांचमा महापद्म निधानथी सर्व प्रकारनां वस्त्र तथा तेना रंग तथा तेने धोवानो विधि अने त्रांबा प्रमुख साते धातु ते सर्व थाय, छठा कालनामा निधानथी तो समस्त कालज्ञान, ज्योतिष संबंधि ज्ञान, तथा वर्त्तमान चोवीशीना तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव, ए सर्वना वंशनुं कहेवापणुं, वर्त्तमान वर्षमां जे थयुं तथा थाशे, तेनुं कहेवा पणुं तथा लोहखंभ, चित्र, वस्त्र, नापिक, शिला ए पांचना वीश भेद छे ते, तथा व्यापार, वाणिज्य, ए सर्व ए निधानथी

कहेवाय, सातमो महाकाल निधान ते अनेक प्रकारें लोह, रूपुं, सोनुं, मणि चंद्रकांतादि, मोती, शिला स्फाटिक, प्रवालां, ए सर्वनो प्रगट करनारुं थाय, आठमो माणवक निधान, ते शूरवीर योद्धा पुरुष तथा सर्व जातिनां शस्त्र आयुध, तथा साम, दान, भेद अने दंड, ए चार प्रकारनी राजनीति, ए सर्वनी उत्पत्ति करनारुं थाय, नवमो शंख नामें निधान ते सर्व प्रकारना भरतादिक नाटक तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अने संकीर्ण ए चार प्रकारें काव्य तथा गद्यबंध पद्यबंधनुं आवडवुं, अने सर्व प्रकारना वाजित्रनी प्राप्ति करनारुं थाय. ए नव निधाननुं विशेष वर्णन श्रीठाणांग सूत्रनें विषे कह्युं छे. वली चौद रत्ननो अधिकार, तो महात्माउयें शास्त्रांतरथी जाणवो. ए शिलाका पुरुष, चौद रत्न, नव निधाननी ऋद्धि ते आ भरत क्षेत्रमां पांचमे आरे न पामियें. ए तो ते कालेंज पामीयें ॥ इत्यर्थः ॥

तथा श्रीजंबुचरित्रमां जंबुस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विछेद गइ, तेनां नाम कहे छेः—१ मनःपर्यवज्ञान, २ परमावधिज्ञान, ३ पुलाकलब्धि, ४ आहारक शरीर, ५ क्षायिक सम्यक्त्व, ६ अगीयारमुं उ

पशांतमोह गुणठाणुं, ७ जिनकल्प मार्ग, ८ संयम त्रिक एटले मन,वचन अने कायायें चारित्र लेवुं, ए केवलज्ञान,१० मोक्षमार्ग,ए दश वानां विछेद गयां छे.

चोथो आरो एक कोडाकोडी सागरोपममां बेहें तालीश हजार वर्ष न्यून छे. तेमां एकवीश हजार वर्षनो पांचमो आरो अने एकवीश हजार वर्षनो छ ठो आरो, एम बेहेंतालीश हजार वर्ष पूर्ण थयां, ह वे त्रीजा आराना शेष नेव्याशी पक्ष रह्या, तेवारें श्रीऋषभदेव मोक्ष गया, अने श्रीमहावीर भगवान् तो चोथा आराना नेव्याशी पक्ष रह्या तेवारें मोक्ष गया. ते शासन नायक श्रीवीर मोक्ष गया पछी चो राशी हजार वर्ष गये थकें उत्सर्पिणी कालनो त्री जो आरो तेना नेव्याशी पक्ष शेष रहे थके, श्रीश्रे णिकराजानो जीव,ते पद्मनाभ एवे नामें प्रथम तीर्थं कर थशे. अने आ पांचमा आराना अंत सुधी चतु र्विध श्रीसंघ जिनशासन वर्त्तशे.

वली आ भरतक्षेत्रमां पंचम कालें श्रीजिनभाषि त सूत्र तथा दश पूर्वीनां कहेलां सूत्र, वली सुविहि त पूर्वाचार्यनां रचेलां सूत्र तेनो अति गंभीर ऊंडो आशय समजवो घणोज कठिण छे. माटें हे भव्य !

श्रीजिनशासननी शैजी स्याद्वाद उत्सर्ग अपवाद रू
प ठे, तेमां सैज साज वात वातमां शंका न करवी.
कारण के श्रीवीर निर्वाणथी ५८५ वर्षे श्रीआर्यर
क्षित आचार्य थया, तेमणें साडा नव पूर्व जणी मु
खपाठें कर्यां, तेमने इंद्रमहाराजें वृद्ध ब्राह्मणनुं रूप
करी निगोदनुं स्वरूप पूठ्युं. तथा हवे महारुं आयुष्य
केटलुं ठे? एवुं पण पूठ्युं.तेवारें आचार्यें उपयोग देइ
विचार्युं, जे आ जरतक्षेत्रमां पांचमे आरे शो वर्षथी
अधिक तो होय,बीजी वार उपयोगथी बशों वर्ष, एम
त्रीजी वार उपयोग दइ विचार्युं जे कोइ द्वीप, खंम,
क्षेत्र तथा कोइ जीव आश्रयी त्रणशों वर्षथी अधिक
आयु आ जरतक्षेत्रमां पांचमे आरे निश्चें न होय.
एम न्यूनाधिक जे कोइ व्यवहारनयने मतें बहुजता
यें वचन ठे. कोइ ठेकाणें निश्चय नयने मतें सूक्ष्म
वचन ठे, ए बन्ने वचननी व्याख्या एक वचनें समु
च्चय न थाय. ते तो अनुक्रमें एक पठी बीजुं वचन
केडावेडें कहेवाय. माटे अनेकांत ठे. परंतु श्रीजिन
जाषित वचन एकांत नथी तेथी एमां जे शंका करवी
ते मिथ्या ठे. ए कथानक आवश्यकसूत्रना सामायिक
अध्ययनना उपोद्घात निर्युक्तिमां ठे.

तथा बहुलतायें सूत्रकारें लख्युं छे, जे सर्व ताराना विमान मेरु पर्वतने प्रदक्षिणा करे छे, ए वचन पूज्य श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणें विशेषणवती ग्रंथमां कह्युं, ते प्रमाण छे. तथा महोटी संघयणमांहे तो सप्तऋषि नामादि जे तारा छे, ते तो ध्रूताराने ज प्रदक्षिणा आपे छे, पण मेरुने प्रदक्षिणा नथी आपता. एवुं लख्युं छे, ते वचन पण सत्य छे, पण ए वचन बहुलतायें नथी ॥ इत्यर्थः ॥

तेमाटें हे भव्यजीवो! शंका कांक्षादि दूषणें रहित परमहितकारी, आ लोक परलोक सुखकारी, स्वर्गापवर्ग दायक एवोजे जिनधर्म, तेनुं आराधन ते पूर्वें कह्युं छे, तेम साधुमुनिराज तथा श्रावकनें धर्म आराधन अर्थें निरुपाधिक, एकांतस्थानें, स्थिर आसनें, तथा उभा रहीने उत्तर अथवा पूर्व सन्मुख कमलबंध ध्यान पंच परमेष्ठिनुं करवुं ते कहुं छुं. आठ पांखडीनुं कमल हृदयने विषे चिंतवे, तिहां मूल मध्य कर्णिकामां तो श्रीअरिहंत पद, अने पूर्व दिशिनी पांखडीमां सिद्धपद, दक्षिण पांखडीमां आचार्यपद, पश्चिम पांखडीमां उपाध्याय पद, उत्तर पांखडीमां साधुपद, बाकी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप, ए चार चूलिकानां पद, ते

अनुक्रमें अग्नि कोणथी चार विदिशियें थापे. एम अष्टकमल दलनुं हृदयने विषे ध्यान करे, ते श्रीहेमाचार्यकृत योग शास्त्रना आठमा प्रकाशमां कह्युं छे.

॥ श्लोक ॥ अष्टपत्रे सितांजोजे, कर्णिकायां करस्थितः ॥ आद्यं सप्ताक्षरं मंत्रं, पवित्रं चिंतयेत्ततः ॥ १ ॥ पूजाकोटिसमं स्तोत्रं, स्तोत्रकोटिसमो जपः ॥ जपकोटिसमं ध्यानं, ध्यानकोटिसमो लयः ॥ २ ॥ ए ध्यान जे छे, ते आत्माने इहलोक परलोकें सुखदायक परंपरायें मोक्ष सुखनुं देवावालुं छे.

तथा साधुने अने श्रावकने उत्कृष्टथी दिनप्रत्यें सात चैत्यवंदन करवां, ते कहे छेः—एक प्रजातने पडिक्कमणे, बीजुं जिनमंदिरमां, त्रीजुं आहार करवा पहेलां, चोथुं देवस चरिम पच्चरकाण करती वखतें, पांचमुं देवसी पडिक्कमणे, छठुं सूती वखतें अने सातमुं सुइने उठे ते वखतें करे. एम महानिशीथ सूत्रें कह्यो छे.

॥ तथा चार अनुष्ठान कह्यां छे, ते कहे छे. एक प्रिति सहित करवुं, ते प्रीतिअनुष्ठान, बीजुं जक्ति सहित ते जक्ति अनुष्ठान, त्रीजुं वचन प्रमाण बहुमानपणुं ते वचनानुष्ठान, चोथुं निरालंबन क्रिया रहित ते असंगानुष्ठान, ए चार विना धर्माराधन थाय नहीं.

॥ तथा योगशास्त्रमां गुरु आवे, बेगं थवुं, शाता पूछवी. बेसवाने आसन आपवुं, आहारादि वस्तुनी निमंत्रणा करवी, इत्यादि गुरु नक्ति विशेष प्रकारें करे, ते जीव, परमपद प्रत्यें पामे.

॥ तथा हरिनद्रसूरियें पांचमा अष्टकमां निक्षा त्रण प्रकारें कही छे. प्रथम मुनिनी निक्षा, ते सर्वसत्करी महाश्रेष्ठ छे,बीजी पुरुषविघ्नकरी निक्षा ते साधु वेंष तथा गृहस्थावस्थामां लष्ट पुष्ट थका मागी खावुं एम साधुगुणरहित निक्षा ते आत्माने विघ्नकारी जाणवी, पण सारी नही. केम के? श्रावक पण प्रतिमाधारी विना निक्षा मागी खाय ते निक्षा महादुष्ट, धर्मनी हेलना करनारी जाणवी. जेणें पूर्वला नवमां जिनाज्ञा खंमित करी होय,तेनुं फल मागी खावुं छे. त्रीजी वृत्तिनिक्षा ते जेना कुलपरंपरायें चाली आवेली जेम ब्राह्मणादिक तथा आजीविका रहित गृहस्थ आंधलो, पांगलो, रोगी प्रमुख होय ते निक्षा मागी खाय, ते आजीविकावृत्तिनिक्षा जाणवी.

॥ वली जेना कुलमां एक जण पण साधु मुनिराज थयो होय, ते कुल महा उत्तम पुण्यवान् जाणवुं. एवुं शास्त्रमां कह्युं छे. श्लोक ॥ तावद् न्रमंति संसारे,

पितरः पिंमकांक्षिणः ॥ यावत्कुले विशुद्धात्मा, यतिः पुत्रो न जायते ॥१॥ इति श्रीमद् प्रवर पंमित पंन्यासगणि श्रीसौनाग्यविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनिश्री मयाविजयजी विरचित शास्त्ररहस्यप्रकाशे द्वितीयवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयवर्ग प्रारंनः ॥

॥ ए वर्गमां एक श्रीजैनदर्शन विना शेष जे पांच दर्शन छे, ते एकांतनयमतवादी छे, माटें तेनुं स्वरूप किंचित् लखियें छेयें.

॥ प्रथम बौधदर्शननुं स्वरूप कहे छे. एनुं बीजुं नाम सौगतमत छे. ए मूल मत तो एवुं छे, जे ते बौद्धो आत्माने क्षण नंगुर माने छे, केम के पर्यायनेज मूल सत्ता जीव करी माने छे. जेवारें पर्यायनो व्यय थाय, तेवारें जीवनो पण व्यय थाय अने नाश थाय. अने नवो पर्याय उत्पन्न थाय, तेवारें नवो जीव उपजे. एवी पर्याय बुद्धि वालो एकांतमति मिथ्यात्वी जाणवो. कारण के एणे मूल सत्तायें आत्मा अखंम अविनाशी रूप जीव छे, तेने जाण्यो नही माटें एमने मतें आत्माने बंध मोक्ष सुख दुःख कांइ घटतुं नथी,

केम के पर्यायनुं समय समय विणसवुं थाय ळे, ते वारें आगलो जीव नाश पामे ळे, अने नवो पर्याय उपजे तेवारें नवो जीव आवे, तो क्रिया व्यापार पण एक जीव करे, ने बीजो नोगवे. एम अनवस्थित पणुं थाय ळे. पण कोइ प्रमाण ठरतुं नथी, ते प्रत्यक्ष प्रमाणें एटलुं देखता नथी के कोइ वृक्षनुं एक पुष्प नाश थवाथी कांइ संपूर्ण वृक्षनो नाश थतो नथी? तथा वली बीजो दृष्टांत कहीयें ळैयें. जेम के, कोइ साहुकारें कोइ व्यापारीने एक लाख रुपैयानी रकम उधारी आपीने पांच दिवस पळी ते रुपैया पाछा लेवा जाय तो ते रुपैया साहुकारने पाछा मलवा न जोइयें, कारण के एमने मतें समय समय जीव मरण पामे ळे. तो रुपैयानो देनार तथा लेनार ए बे तो मरण पामी गया. हवे कोण आपे, ने कोण लीये! माटे ए मतप्ररूपक पण दुष्ट दुर्बुद्धिना धणी दुर्गति जावावाला समजवा ॥ इति बौद्धदर्शनम् ॥

२ बीजुं नैयायिकमत एनुं अपर नाम योगमत पण कहे ळे. तेमज त्रीजुं वैशेषिक दर्शन ते पण नैयायिकनेज मलतुं ळे. पण एटलुं विशेष ळे के, ते प्रत्यक्ष अने अनुमान ए बे प्रमाण माने ळे, अने नै

यायिक मतवाला प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान अने शब्द, ए चार प्रमाण माने छे. पण बीजुं वर्त्तन सर्वे नैयायिक अने वैशेषिकनुं एक सरखुंज छे, ते माने छे के, आ जगतनी स्थिति, उत्पत्ति, विनाश, ए सर्व नो कर्त्ता पुरुष ईश्वर छे, केम के कर्त्ता विना आवुं जगत्स्वरूप केम बने? एवुं तेमनुं मत छे. पण ते असत्य छे. केम के,तेमने पूछीयें जे तमें ईश्वरने कर्त्ता कह्ो छो, तो तमें पोतें तो जडरूप थया. तमारे मतें तो सर्व सत्ता मात्र ज्ञान, विज्ञान, पुण्य, पाप, ए सर्व कर्त्ताने हाथ छे, तेवारें तमो शुभाशुभ करणी कष्ट क्रिया करो छो,ते व्यर्थ जाय छे.माटे ए करवानुं कांइ कारण नथी? केम के, एनुं फल तो कर्त्ताने हाथ छे, तेवारें फोकट कष्ट शा वास्ते करो छो? वली तमारें मतें तो जीवादि पदार्थ सर्वने कर्त्तायें नवीन कर्या छे. तेवारें पूर्वें तो कांइ पण नज हतुं, एवुं थयुं. ते रीतें जोतां तो नविन कर्त्रिम पदार्थनो अवश्य नाश पण थवो जोइयें. तेथी पूर्व कर्त्तायें जे रचना करी, ते सर्व वृथा थइ जाय. वली कर्त्तायें आ सृष्टिनी नवीन रचना करी तो, तेथी आगल आ सृष्टि न होवी जोइयें. तो प्रथम शुं हतुं? ते कह्ो. वली कर्त्तायें

नवीन रचना करी, तेवारें आ जीवादि सर्व पदार्थ क्यां पड्या हता. के ज्यांथी लावीने आ सृष्टि बनावी? वली तमें तमारा न्याय शास्त्रमांज कह्यो छे के, सात पदार्थ तथा नव द्रव्य तो सदा सर्वदा शाश्वता छे,तेनो तो कोइवारें नाश थतोज नथी, तेवारें कर्त्ता पुरुषें वली कया नवीन पदार्थनी रचना करी, ते देखाडी आपो? युक्तियें विचारतां तो तमाराज कहेवा प्रमाणें कांइ पण नवीन रचना करी संभवती नथी. कर्त्ता भोक्ता सर्व पोतें पोतानो आत्माज छे,अने ए सर्व वस्तु पण स्वभावें अनादि अनंत छे. ए सर्वज्ञ वचन सिद्ध छे. शास्त्रमां कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ यः कर्त्ता कर्म भेदानां, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥ संसर्त्ता परिनिर्वृत्ता, सह्यात्मा नान्यलक्षणम् ॥ १ ॥

॥ तथा श्रीभागवतना एकादशस्कंधना अठावीशमा अध्यायने विषे श्रीभगवानें उद्धवजी प्रत्यें उपदेश करेलो छे के ॥श्लोक॥ शोक हर्ष भय क्रोध, लोभ मोह स्पृहादयः ॥ अहंकारस्य दृश्यंते, जन्म मृत्युश्च नात्मनः ॥१॥ भावार्थः– हर्ष, शोक, भय, क्रोध, तथा इंद्रिय जनित विषयादि सुखनी वांछा,अने अहंकार ममकार तथा जन्म अने मरण इत्यादि जडना

व विभाव पुज्जलदशा ए सर्वे पदार्थमां आत्माना घर नुं कांइ नथी. ए वचनथी जे सृष्टिनी रचना करवी,ते तो सर्व जडभावनी रचना करी कहेवाय. एवी रचना भगवान् ज्योति स्वरूपीने करवी घटे नही !

तथा श्रीभगवद्गीतामां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ यथैधांसि समिद्धोग्नि,र्भस्म सात् कुरुतेऽर्जुन ॥ ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुते तथा ॥ १ ॥ भावार्थः—श्रीभगवान कहे छे, के हे अर्जुन ! जेम अग्नि ज्वलित काष्ठने भस्म करे छे. तेम ज्ञानरूप अग्नि ते सर्व कर्मोने बाली भस्म करे छे. ए वचनथी आत्मा पोतेंज कर्मोनो कर्त्ता तथा हर्त्ता जणाय छे. वली पुराणमां कह्युं छे .के आ शरीरछे तेज हुं छुं. एम देहनेज आत्मबुद्धियें आत्मा मानी लीधो छे, ते तथा वेदनी श्रुतिमां पण कह्युं छे, के जे देहाभिमानी जीव छे, तेनेज सर्व दोष उत्पन्न थाय छे, तेना सरखो कोइ पापी नथी, तेना शिर उपर एक कोटि गोवध करवानुं पाप चडे छे, अने जेने आत्मबुद्धि छे, के हुं सच्चिदानंद आत्माराम अखंड अविनाशी छुं. अने आ संसारसुख जडरूप इंद्रियजनित छे. ते महारुं स्वरूप नथी. एवी बुद्धि जे पुरुषनी छे. ते पुरुष,महोटुं पुण्यानुबंधी पुण्यवान् कह्यो छे ॥ श्लो

क ॥ देहात्मबुद्धिजं पापं, न तद्गोवधकोटिभिः ॥ आ त्माहंबुद्धिजं पुण्यं, न भूतं न भविष्यति ॥ १ ॥ माटें मनादि जे तत्त्व छे, ते सर्व जड रूप छे, तेनो जे आ त्मा साथें संयोग ते परवस्तुसंयोग जाणवो. केम के, ते पदार्थ सर्व रूपी छे, अने आत्मा तो अरूपी छे. माटे जेम सुवर्णमां कुधातुनो मेलाप तेनी परें ए आत्माने कलंक रूप छे, ज्यां सुधी ए विभाव छे, त्यां सुधी मुक्ति नज होय. ए अधिकार विस्तारें न्यायशा स्त्रमां कह्यो छे. इति वैशेषिक दर्शनम् ॥

हवे चोथुं सांख्य दर्शन कहे छेः—ए मतना साधु त्रिदंडी थाय छे, पाणी गलीने पीये छे, तेउ कहे छे, के एक जलबिंडुमां घणा जीव छे, जो ते जीवोना भमरा जेवडा मह्रोटां शरीर करीयें, तो त्रण लोकमां समाय नही. एटला जीव एक जलबिंडुमां छे, एवुं ते माने छे. एनुं बीजुं नाम पातंजल पण कहेवाय छे. ए सांख्य दर्शनना बे भेद छे. एक प्राचीन बीजुं नवी न. तेमां प्राचीन तो ईश्वर मानता नथी, अने नवीन माने छे, ए सांख्य मतनुं मूल कपिलादि आचार्य छे. ते पच्चीश तत्त्व माने छे. एमना आचार्यनो करे लो सांख्यसप्तति नामें ग्रंथ छे, तेमां प्रकृतिनो वि

चार घणो कह्यो छे. तथा तेमां प्रत्यक्ष, अनुमान अ
ने शब्द, ए त्रण प्रमाण कह्यां छे, तथा प्रकृतिनी सं
ख्या करी छे, माटें सांख्य एवुं नाम छे ॥ इति सां०॥

पांचमुं मीमांसक दर्शन कहे छेः—एनुं बीजुं नाम
जैमिनीय पण छे. तेमना मतमां संन्यासी ब्राह्मण
प्रमुख थाय छे. ते एक दंमी तथा त्रिदंमी थाय छे.
मृगचर्मनुं आसन करे छे, रक्तवस्त्रलिंग धारण करे
छे, अने तेमना गुरु तो केवल एक वेदज छे, वेद वि
ना बीजा कोइ पुरुषनो उपदेश तेमनामां नथी. तथा
एना एक पूर्व मीमांसक, बीजो उत्तर मीमांसक एवा
बे नेद छे. ए मतमां जे परमहंस थाय छे, तेतो चारे
वर्णना घरनुं अन्न जमे छे. ते उत्कृष्ट साधु कहेवाय
छे; अने बीजा ब्राह्मणना घरनुं अन्न जमे छे. तथा
एमां जे पांच प्रमाणना माननारा छे, ते प्राजाकर क
हेवाय छे, तथा जे छ प्रमाण माने छे, ते नाट्ट कहे
वाय छे. एम एना बे नेद छे, ए बेहुने वेदनुं ग्रहण छे.

आंही वेदनी उत्पत्ति केवीरीतें अने क्यांथी चा
ली? तेनुं स्वरूप जेम पूर्वाचार्यें कह्युं छे, तेम हुं कांइक
कहुं छुं. जे माटें बृहदारण्यक उपनिषद्ना नाष्यमां
लखेलुं छे, के यज्ञ होमादिना कहेवा.वाजा ते यज्ञ

वल्क्य छे, तेनो पुत्र याज्ञवल्क्य थयो. एज प्रमाणें व
ली ब्राह्मणोना शास्त्रमां पण कहेलुं छे,के पूर्वली ब्रह्म
विद्या त्यागीने सूर्य पासें नवीन ब्रह्मविद्या चलावी,
ते उपरथी पण एमज जणाय छे, के पूर्वला वेद न
थी, ए वर्तमान कल्पित वेद जे यज्ञ होमादिकना उ
पदेशक छे, ते याज्ञवल्क्यथीज चालेला संभवे छे.

तथा वली त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरित्रना आठ
मा पर्वने बीजे सर्गें कह्युं छे, जे काशीपुरीमां एक सु
लसा अने बीजी सुभद्रा एवे नामें बे संन्यासिणीयो र
हेती हती,ते बेहु बेहेनो हती,अने वेदशास्त्रनी पारंगत
हती, तेणीयें घणा एक वादी विद्वानोने जीती निरुत्तर
कस्या,ते अवसरें याज्ञवल्क्य परिव्राजक पण ते संन्या
सिणी साथें वाद करवा आव्यो,अने वादकरतां एवो बं
दोबस्त कस्यो के,आपणे बेहुमांथी जे हारी जाय,ते जी
तवावालानी सेवामां रहे.एवी प्रतिज्ञा थया,पछी याज्ञ
वल्क्यें सुलसाने जीती लीधी, तेवारें सुलसा, ते या
ज्ञवल्क्य परिव्राजकनी सेवा करवामां तत्पर रही,
परंतु बेहुजण तरुण अवस्थावालां हतां, तेथी वि
षयसुख भोगववा लाग्यां, तेने योगें सुलसाने पुत्र
प्राप्ति थइ. ए अकार्य करवाथी लोक, तेमनी घणी

ज निंदा करवा लाग्या, तेथी लज्जा पामीने एक पीपलाना वृक्ष नीचें बालकने नाखी देइने बेहुजण तिहांथी नाशी गयां, ए वात ते सुलसानी बेहेन जे सुनंदा हती, तेने जाणवामां आवी; तेवारें सुनंदायें ते छोकराने पींपलाना वृक्षनी नीचेंथी उपाडी पोताने घेर लावी प्रतिपालन करीने म्होटो कस्यो, अने पीपलने तलेथी उपाड्यो माटे पिप्पलाद एवुं नाम राख्युं. अनुक्रमें ते पिप्पलाद वेद शास्त्र नणीने लोकोमां प्रसिद्धि पामतो घणा वादीयोने जीतवा वालो थयो, तेवारें सुलसा अने याज्ञवल्क्य ए बेहु जण तेनी साथें वाद करवा आव्या, ते वखतें पिप्प लादें पण पोतानी सुनंदा माशीना केहेवाथी जाण्युं, जे आ वाद करवा आव्या छे,ते म्हारां माता पिता छे, अने मुजने प्रसवीने बाल्यावस्थामांज पिंपलाना वृक्ष नीचें नाखी गया छे, माटे एमने हुं पूर्ण शिक्षा आपुं! एवुं चिंतवी माता आगल मातृमेध यज्ञ अने पिता आगल पितृमेधयज्ञ करी देव थवानी आशा देखाडी निर्दयपणे बेहु जणने यज्ञमां होमावी दी धा, ते दिवसथी मातृमेध, पितृमेध, अश्वने होमवो ते अश्वमेध, बोकडाने होमवो, ते अजामेध. इत्यादि.

महा अनर्थकारी जीवहिंसा करवाना यज्ञ चालु थ
या. ए मीमांसक मतना मुख्य आचार्य पिप्पलाद
थया, पछी तेना शिष्य बातली नामें थया. ए रीतें
याज्ञवल्क्यथीज आ जीवहिंसा चालेली जणाय छे,
परंतु श्रीतीर्थंकर नाषित वेद तो ए नथी. आ जीव
हिंसायुक्त वेद ते सर्व नवीन कल्पित करेला जणा
य छे; वली श्रीआवश्यक सूत्रमां पण लख्युं छे के,
जीवहिंसा चाली ते सर्व याज्ञवल्क्यथी चाली छे; अ
ने वेदना उपनिषदोमां पण पिप्पलादनुं नाम छे. तेम
ज बीजा रुषियोनां पण केटलीएक जगायें नाम छे.
वली जमदग्नि कश्यपनुं नाम तो मुख्य छे, माटे ए नवी
न कल्पित वेद बनेला छे, ए वातमां कांइ शंका नथी.

तथा वली रुग्वेदमां " अजैर्यष्टव्यमिति वंचना
त् " ए वेदश्रुतिनो जूठो अर्थ करीने निर्दय पणें छा
ग बोकडा पशुउने अग्निमां होमी तेमनोवध करीने
कहे छे, के अमे एमने स्वर्ग पहोंचाडीयेंछेयें ! ए प
ण कल्पित अर्थ करे छे, परंतु ए श्रुतिनोअर्थ एम
नथी, ते उपर कथा कहुं छुं.

एक दिवस, ब्राह्मणोयें घणीज जीवहिंसा, रा
जाउमां चलावेली देखीने नारदजी रावण पासें

फरियाद करवा आव्या. तेमने रावणें पूछ्युं के, ए दु
ष्ट जीवहिंसा रूप कुकर्म क्यांथी चालु थयुं छे? एवुं
रावणनुं बोलवुं सांभलीने नारदजी कहेवा लाग्या
के, शुक्तिमती नदीने किनारे शुक्तिमती नगरीयें हरि
वंशमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकरनी परंपरामां अभिचंद्र
नामें राजानो पुत्र वसु एवे नामें महाबुद्धिमान् अने
सत्यवादी राजा थयो. हवे ते नगरीमां खीरकदंबक
नामें उपाध्याय रहे छे. तेनी पासें एक तो तेहिज
उपाध्यायनो पुत्र पर्वत नामें तथा बीजो वसुराजा
अने त्रीजो हुं नारद, ए त्रण जण साथें जणतां हु
ता, एक दिवस रात्रिने समयें अमें सूता छैयें, ते व
खतें बे चारण मुनियो आकाश मार्गें चाल्या जता ह
ता, ते पोतपोतामां वातो करतां कहेवा लाग्या के,
आ उपाध्यायना बे शिष्य नरकें जवाना छे, अने
एक स्वर्गें जशे! ते वात खीरकदंबक उपाध्यायें सांभ
ली पछी त्रणे शिष्यनी परीक्षा करवा माटे लोटना त्र
ण कूकडा बनावीने त्रणे जणने हाथमां एकेको कूकडो
आपीने कह्युं के, आ कूकडा लइ तमें त्रणे जण जूदे
जूदे स्थानके जइ जिहां कोइ देखे नही, तेवे स्थानकें
मारीने महारी पासें लइ आवो. एवुं उपाध्यायनुं

बोलवुं सांजली,पर्वत तथा वसुराजा तो कोइएक स्थ
लें जइ जिहां कोइ माणस दीठुं नही,तिहां जइ कूकडा
ने मारी उपाध्याय पासें आव्या, अने हुं तो घणो
जंगल फर्यो, पण ज्यां कोइ पण जीव देखे नही, ए
वी जगा तो कोइ पण म्हारा दीठामां आवी नही.
केम के,जिहां तिहां प्रथम हुं पोतें तो अवश्य देखुंज
छुं. अने बीजा ज्ञानी पुरुषो पण सर्वत्र देखी रह्या
छे. वली म्हारा गुरु उपाध्याय पण कूकडो मारवा
नी आज्ञा आपेज नही. एतो कोइ कारणें परीक्षा
लेवा निमित्तें गुरुयें मोकल्यो जणाय छे? एवुं विचा
री ते लोटनो कूकडो पाछो लावीने पोताना मनमां
विचारेली सर्व वात गुरु आगल निवेदन करी, ते
सांजली उपाध्यायें पण मुफने हृदय सार्थे 'चीडी
आलिंगन कर्युं, मनमां जाण्युं, जे आ स्वर्गे जवावा
लो छे,अने पहेला बे नरकें जनारा छे. माटे तेमनी गु
रुयें निर्भृछना करी. पछी केटलेक कालें गुरु समाधिस्थ
थया, वसुराजा राजगादी उपर बेठो, ते सत्यवादी छे,
माटे व्यंतर देवें सहाय आपी तेनुं आसन जमीनथी
अधर राख्युं, अने पर्वत पण महाबुद्धिमान् पंमित
थयो छे, ते विद्यार्थीयोने जणावतो हतो; तेवा अव

सरमां हुं पण पर्वत पासें गयो. ते वखतें पर्वत पण "अजैर्यष्टव्यमिति" ए श्रुतिनो अर्थ अज ए टले बोकडाने अग्निमां होमवो, अजामेध यज्ञ करवो. एम शिष्योने कहेतो हतो, ते विपरीत अर्थ सांजलीने में कह्युं के, नाइ आ तुं जूगे अर्थ करे छे! केम के, उपाध्यायजीयें तो एम कह्युं छे, के त्रण वर्षना यव धान्य होय छे, ते वाव्या थका अजा एटले न जन्मे, अर्थात् न उगे एटले त्रण वर्षना जुना यव जे वाव्या थका न उगे, तेनो होम करवो कह्यो छे, एम कह्याथी पर्वतनो अने मह्रारो मांहोमांहे वाद थयो. पछी छेवट एवो ठेराव थयो, जे आपणी साथें वसुराजा पण जणतो हतो, अने ते महा सत्यवादी छे. ते जूठुं नही बोले, माटे तेने साक्षी दाखल पूछवुं, अने आपणे बेहु जणमांथी जे जूगे पडे, तेनी जीन्न छेदी नाखवी. एवी प्रतिज्ञा करी ते सांजली पर्वतनी माताने संताप थयो, जे मह्रारा पुत्रें जूगे हठ लीधो छे, अने फोकट जीन्न छेदावशे. तेवारें वसुराजा पासें गइ. राजायें पण पोताना गुरुनी स्त्रीने माता समान जाणी तेणें कहेली जूगी साक्षी आपवानी वात कबूल करीने अजा एवुं बोकडानुं नाम

पण कह्युं छे. एवो असत्य अर्थ कहेतांज तेना उपर व्यंतर देवो कुपित थइ लात मारीने तेने आसन उपरथी नीचें भूमि उपर पाडी मारी नाख्यो, ते वसुराजा मरी नरकें गयो. पछी तेना आठ पुत्र अनुक्रमें गादीयें बेठा. तेने पण व्यंतर देवताओयें गादी उपरथी पटकीने मारी नाख्या, तेथी भय पामीने नवमो पुत्र त्यांथी नाशी नागपुर जतो रह्यो, अने दशमो बृहद्ध्वजनामा पुत्रें मथुरामां जइ राज्य कर्युं. तेना कुलमां अनुक्रमें यदुनामें राजा घणो तेजवंत लोक प्रसिद्ध थशे, तेनाथी हरिवंशनो लोप थइने यदुवंश प्रसिद्ध थशे. ए अजा शब्दना अर्थ उपरथी पण वेदनी उत्पत्ति पर्वत नामे ब्राह्मणथी नवीन थयेली सिद्ध थाय छे. ए अधिकार आवश्यकसूत्र, आचारदिनकर तथा त्रिषष्ठिशिलाका पुरुष चरित्रथी जाणवो. इति मीमांसक दर्शनम् ॥ एम ए पांचे दर्शन एकांतमत नयवादी मिथ्यात्वी छे.

अने छहुं जैनदर्शन तो अनेकांतनय स्याद्वाद रूप उत्सर्ग अपवाद मार्ग प्ररूपक मोक्षपद दायक श्री सर्वज्ञ भाषित छे. ए छ दर्शननुं स्वरूप कह्युं.

हवे ए छ दर्शन विना पण बीजा कल्पित धर्म

आ पंचम कालें घणा निकल्या छे, ते कहीयें छैयें.

प्रथम नांस्तिक मत एने वाममार्गी पण कहे छे. तथा चार्वाक पण कहे छे. ए मत वाला पुण्य, पाप, नरक, स्वर्ग तथा जीव इत्यादि पदार्थने मानताज नथी. ए मतमां केटलाएक संप्रदायनां मनुष्य तो पांच भूतनेज माने छे. जेम जलमां जलना पर्पोटा थाय छे, ते फूटीने पाछा जलमांज संमाइ जाय छे, तेम पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन अने आकाश ए पांच भूतनी शक्ति छे. ते पाछी एमांज समाइ जाय छे. ए उपर दृष्टांत कहे छे. जेम भीतमां चित्र आलेखीयें, ते साक्षात् रूप देखाय छे, अने भीतनो नाश थवाथी ते चित्रनो पण नाश थाय छे. तेम पांच भूतना मेला पथी शंरीरनुं पुतलुं बने छे, अने शरीरनो नाश थवाथी पांचे भूत पोतपोताना स्वरूपमां समाइ ली न थाय छे, एवी रीतें माने छे. परंतु ते जडबुद्धिना धणी, साक्षात् चैतन्य स्वरूप, सुख दुःखनो वेदक, कर्त्ता, भोक्ता, अविनाशी, अखंड, एवो जीवात्मा छे. तेने तो जाणताज नथी. तथा ए वाममार्गी लो को जे छे, ते एक स्त्रीने बेसाडी तेना जननेंद्रियनी पूजा करे छे. एम ए मतवाला विषय सेवननेज धर्म

माने छे. एवुं तेनुं मत महादुष्ट छे. तेथी इहां ल
खतां शरम आवे छे, माटे नथी लख्युं.

हवे ए नास्तिक मतनी उत्पत्ति लखुं छुं. एक बृह
स्पतिनामें ब्राह्मण हतो, तेनी बहेन महा स्वरूपव
ती हती, परंतु ते बालरंमा थइ, अने ते बृहस्पतिनी
पोतानी स्त्री मरण पामी तेवारें पोतानी बहेन साथें
विषय नोगववा लाग्यो. पछी जेवारें लोक निंदा कर
वा लाग्यां, तेवारें ते नवां नवां शास्त्रो रचीने लो
कोने बोध करवा लाग्यो, के पुण्य, पाप, जीव, नरक,
स्वर्ग, इत्यादि कांइ पण नथी. ए सर्व पंचनूत छे,
माटें एवो योग वारंवार मलवो कठिण छे,तेणें करी
खावुं, पीवुं, विषयसुख नोगववां, एज संसारमां सार
छे. बीजो कांइ सार नथी.इत्यादि विषय सेवन रूप ना
स्तिक धर्म, बृहस्पति ब्राह्मणें चलाव्यो छे. ए वात, शील
तरिंगिणी ग्रंथथी जोवी ॥ इति नास्तिकं दर्शनम् ॥

हवे सांख्यमत क्यारथी प्रचलित थयुं? तेनी उ
त्पति किंचत् मात्र लखुं छुं. क्षत्रिय वंशमां प्रथम श्री
ऋषनदेव थया, तेमना पुत्र नरतचक्रवर्त्ती थयो,तेमनो
पुत्र मरिचीनामें त्रिदंमी तापस थयो, तेनो शिष्य क

पिल नामें थयो, तेनो शिष्य आसुरि नामें थयो. हवे कपिल मरीने पांचमे ब्रह्म देवलोकें गयो, तिहां अव धिज्ञानें देखीने पोताना आसुरी नामें शिष्यने तत्त्वो पदेश कस्यो के, अव्यक्त व्यक्त एवा सर्व पदार्थ पंचनू तथी प्रगट थाय छे, इत्यादि उपदेश सांजलीने आसु रीयें षष्ठीतंत्र नामें नवीन शास्त्र बनाव्युं. तेमां लखे लुं छे, के पंचतत्त्व प्रकृतिथी अहंकार उत्पन्न थाय छे, अने अहंकारथी शोल गुण प्रगटे छे, तेमां पच्ची श प्रकृति बंधाय छे, एवी रीतें ईश्वर इच्छाथी सृष्टि उ त्पन्न थइ छे, ए उत्पत्तिनुं कथन सांख्यमतना शास्त्र मां लखेलुं छे. पछी अनुक्रमें ते आसुरीना संप्रदायमां सांख्य नामें आचार्य थयो, तेनाथी सांख्यमत एवुं नाम पड्युं छे. ए जोतां तो ए सर्व परिव्राजक सन्या सीयोना लिंग तथा आचारादि धर्म तेनुं मूल मरिची छे. अने प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न थया, ते श्रीऋषभदेवजी जणाय छे. वली ईश्वरकर्त्तानुं कथन जे लोको कहे छे, ते पण श्रीऋषभदेवजीज कर्त्ता जणाय छे.

ते उपर पुराणादि शास्त्रोक्त कथन लखीयें छैयें.

श्लोक ॥ नाभिस्त्वजनयत्पुत्रं, मरुदेव्यां महाद्युतिं ॥

ऋषभं क्षत्रियश्रेष्ठं, सर्वक्षत्रियपूर्वजं ॥ १ ॥ ऋषभा
भरतो जज्ञे, वीरपुत्रः शताग्रजः ॥ अभिषिच्य च तं रा
ज्ये, महाप्रव्रज्यामाश्रितः ॥ एम ब्रह्मांडपुराणमां क
ह्युं छे. वळी पण ब्रह्मांडपुराणमां कह्युं छे. ते जेम केः—
इह हीक्ष्वाकुळवंशोद्भवेन नाभिसुतेन मरुदेव्या नंद
नेन महादेवेन ऋषभेण दशप्रकारो धर्मः स्वयमेवाची
र्णः ॥ केवलज्ञानलाभाच्च प्रवर्त्तितः ॥ वळी आर
ण्यक पुराणमां कह्युं छे केः— ऋषभ एव भगवान्
ब्रह्मा तेन भगवता ब्रह्मणा स्वयमेव आचीर्णानि ब्र
ह्माणि ॥ तपसा च प्राप्तं परं पदं ॥ वळी प्रभासपुरा
णमां पण कह्युं छे केः— श्लोक ॥ युगे युगे महापु
ण्या, दृश्यंते द्वारकापुरि ॥ अवतीर्णो हरिर्यत्र, प्रभासे
शविभूषणं ॥ रेवताद्रौ जिनोनेमि, र्युगादिर्विमला
चले ॥ ऋषीणामाश्रमादेव, मुक्तिमार्गस्य कारणं ॥ ए
प्रकारें इहां लोकमां प्रथम न्याय, नीति, धर्मना प्रव
र्त्तावनार तेमज आद्य तीर्थंकर, तथा ब्रह्मा जे कहे
वाय छे ते सर्व श्रीऋषभदेवजीज जाणवा ॥ इत्यर्थः ॥

मार्टें श्रीजिनवचन उपर साची श्रद्धा प्रतीत कर
वी परंतु गुरु मुखथी घणा सिद्धांत शास्त्रनां रहस्य
सांभळ्या विना मात्र मिथ्यात्वीयोनां कष्ट चमत्कार दे

खीनें श्रीजिनवचनने विषे नाना प्रकारना संदेह मन
मां आणवा नही. कारण के, मिथ्यात्वीयोमां जो को
इ पुरुष इंद्रजालनो जाणकार होय, ते विचित्र प्रकार
ना चमत्कार बतावी शके, ते जोइने मुंगवुं नही. जेम
बोधिदेव नामें ब्राह्मणें इंद्रजाल विद्याना बलें करी कु
मारपालराजानी सात पेढीना पुरुषोने नरककुंभमां
पडेला आक्रंद करता थका कुमारपालनी आगल न
जरो नजर उभा राखेला देखाड्या, ते वली साक्षात् रूपें
कुमारपालने कहेता होय, के हे पुत्र! तें ज्यारथी जैन
धर्म ग्रहण करेलो छे, त्यारथी अमें सर्व नरक कुंभमां
पड्या छैयें! माटें जो तुं जैनधर्मनो त्याग करे, तोज
अमें आ दुःखथी विमुक्त थइयें! एवुं प्रत्यक्ष स्वरू
प देखी कुमारपाल राजा भयभ्रांत थयो थको श्री हे
माचार्य महाराज पासें आवी सर्व हकीगत निवेदन
करी पूछवा लाग्यो, तेवारें हेमचंद्राचार्यें कह्युं के, हे
राजन्! ए ब्राह्मणें सर्व इंद्रजाल करी तुजने भ्रमित क
र्यो छे. बीजुं एमां कांइ पण विशेष जाणीश नही. ए
वो तमासो हुं पण तुजने देखाडुं, ते तुं जो. एम कहीने
कुमारपालने कोइ एकांत जगामां लइ जइने तिहां इंद्र
जालना बलें करी चोवीश तीर्थंकर सर्व जूदा जूदा सिंहा

सन उपर बेठेला देखाड्या, अने ते एकेक श्रीतीर्थंक
र देवनी पासें कुमारपालनी सात पहेडीना पुरुषो
सर्व तीर्थंकरोनी सेवा करता थका उना रहेला देखा
ड्या. वली ते पुरुषो कुमारपालने कहेवा लाग्या, के हे
वत्स! तुं तो अमारा कुलमां महोटो पुण्यात्मा थयो,
जेमाटे, जे दिवसथी तें श्रीजिनधर्म आदर्यो छे, ते दि
वसथी अमें सर्व नरक कुंभमांथी निकलीने स्वर्गमां
निवास करी बेठा छैयें. माटें अमारुं नलुं थवानी चा
हना राखतो होय, तो क्यारें पण तुं श्रीजिनधर्म छां
मीश नही. एवुं कृतिम स्वरूप देखाडीने राजाने ते
स्थलनी बाहेर तेडी आचार्य कहेवा लाग्या के, हे रा
जन्! ते प्रथम ब्राह्मणें करेलो तमासो दीठो, अने पा
छलथी आ में तमासो देखाड्यो. ए बे मांथी कोश्ने प
ण साचो जाणीश नही. ए बेहु देखवा मात्र इंद्रजाल
विद्या छे. में योनिप्राभृत नामें शास्त्रथी ए इंद्रजाल प्रग
ट करी देखाडयुं छे. ए योनिप्राभृत विचार व्यवहार
नाष्यनी चूर्णीमां छे, पण आ पंचमकालना तुछबुद्धि
मान्, अने गंनीरता रहित जीवोथी ए विद्या जीरवा
य नही माटे गुप्त राखी छे, प्रगट करी नथी. एम सम
जावी कुमारपालने स्थिर कीधो. तथा तत्त्वार्थना म

हा नाष्यमां सामंतनद्राचार्यें एवुं लख्युं छे, के इंद्रजा लथी तीर्थंकरना समवसरणनी रुद्धि बनी शके, मा टें ए देखीने जिनवचनमां शंका न करवी; केम के, जि नवचन उपर जे साची श्रद्धा छे, तेज सम्यक्त्व छे.

तथा वली पूर्वें जे पंचांगी प्रमाण सूत्रनी आम्ना यो छे. तेमांथी घणां शास्त्रोनो हालमां. विच्छेद थइ ग यो छे. जेमाटें प्रथम तो श्रीआर्यरक्षित सूरिना वख तमां चार अनुयोग तोडीनें बीजा नवीन रच्या, तथा स्कंदिल सूरिने वारे बार डुकाली पडवाथी साधुमात्र घणा सूत्र नूली गया हता, तेमां पण जेमने कंठे जेटलो सूत्रपाठ रह्यो हतो, ते सर्व साधुना संघें मली दक्षिण म थुरामां फरी सूत्र लख्यो, ते पछी देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण ना वखतमां वली सर्व आचार्योयें मलीने एक क्रोड ग्रं थसंख्यायें पुस्तको लख्यां, तथा वली प्रानाविक चरित्र मां लख्युं छे, के सर्व शास्त्रोनी टीकाउ हती, तेमांथी घणो नाग तो विच्छेद गयो छे, पछी पण ब्राह्मण तथा बौद्ध लोकोयें द्वेषथी केटलाएक नागनो नाश कर्यो छे. तेमज मुसलमानोना हाथमां तो जे जे मतनां शास्त्र आव्यां, ते ते सर्वेने माटी पाणी साथें मेलावी दीधां. एवी रीतें नुकशान थतां थतां हाल वर्त्तमानकालें

जे शेषसूत्ररूप श्रुत रह्युं छे, ते प्रमाण करवुं, अने श्र
द्धापूर्वक अंगीकार करवुं ॥ इति श्रीमत्प्रवर पंडितग
णि श्री सौभाग्यविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीप्रता
पविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्री हीरविजयजी त
च्छिष्य मुनि श्रीमयाविजयजी विरचितश्री शास्त्ररह
स्यप्रकाशे तृतीयवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंभः ॥

एमां श्रीजिनप्रतिमाना उच्छापक अने श्रीजिनवचन
उच्छापक एवा लुंका लोकोनुं स्वरूप दर्शावीयें छैयें.

विक्रम संवत् १५०८ ना वर्षमां श्रीगुर्ज्जरदेशना
अमदावाद शहेरमां दशा श्रीमाली ज्ञातीनो लुंको
एवे नामें लहीयो ते पुस्तको लखवानो धंधो करतो ह
तो. एकदा ग्रंथ लखतां जे स्थानकें जिनप्रतिमानो अ
धिकार हतो, ते संबंधी पाठ लखतां भूली गयो, पछी
लखावनारें कह्युं, के तुं भूल्यो छो? तेवारें साह्मो
हठ कदाग्रह करी साधु तथा श्रावकोने कहेवा लाग्यो,
के पूर्वें जे पाठ लखेला छे, ते भूलमां जूठा लखाणा
छे, अने में जे हमणां पाठ लख्या छे,ते साचा छे. एवां
वचन सांभली तेना हाथें लखाववुं बंध करी तिरस्कार
करी तेने उपाश्रयथी बाहेर काढ्यो. पछी ते द्वेषें करी

तिहांथी निकलीने लींबडी शहेरमां कोइ लखमशी नामें वाणीयो राजानो कारजारी हतो, तेने जइ मल्यो, अने कह्युं के, हुं जगवंतना प्ररूपेलां वचन प्रमाणें पुस्तक लखुं छुं, तो ते उपरथी श्रावक, मह्हारा उपर द्वेष बुद्धि राखे छे. एवुं तेनुं बोलवुं सांजली लखमशीयें तेने पोताथी बनती ए काममां मदत आपी, ते उपरथी तेणें पण सूत्रोना पाठ फेरफार करी लोकोनें जिनप्रतिमा विरुद्ध उपदेश करवा मांड्यो. एम करतां संवत् १५३३ मां कोइ जाणा नामें वाणीयाने वेष आपी तेनुं रुषि "लुणा" एवुं नाम देइ पोतानो पंथ चालु कर्यो. पछी ते लुणानो शिष्य रूपजी रुषि थयो, तेनो शिष्य जीवाजी, तेनो शिष्य वरसिंहजी, तेनो शिष्य जशवंतजी तिहां त्रण प्रकारना लुंका थया, एक गुजराती लुंका, बीजा नाघोरी लुंका, त्रीजा उत्तराधि लुंका, एम त्रण प्रकारनी लुंकामतनी उत्पत्ति थइ. ए श्री रत्नशेखरसूरि, त्रेपनमे पाटें थयां, तिहांथी लुंका थया छे. पछी अनुक्रमें बाशठमे पाटें श्रीविजयप्रजसूरिनी वारें एज लुंका मतमांथी ढूंढीया मतनी उत्पत्ति थइ. ते आवी रीतें के श्रीसूरतमध्ये वोहोरा वीरजी नामें दशा श्रीमाली वाणीयानी दीक

री फूली बाइनो छोकरो लवजी हतो, ते लुंकाना सा धुथी प्रतिबोध पामीने साधु थयो. पछी ते बीजा लुं काना साधुउने कहेवा लाग्यो, के तमें बराबर दया पूर्वक साधुमार्ग पालता नथी, अने में जे साधुपणुं लीधुं छे. ते मनें तो बराबर दया पालवी जोशे? एम कही साधुना टोलाथी जूदो पडी वायुकायनी रक्षाने अर्थें मुखें एक मुहपत्ति कपडानी बांधी जूदो पंथ काहाढ्यो, एम लोकोमां तो गाम्मरीयो प्रवाह चाले छे, परमार्थ जाण्या विना मात्र देखादेखीथी मूर्ख, अज्ञानी, जडबुद्धि जीवो जे छे, ते श्रीवीतरागनो शुद्ध मार्ग समज्या विना ढूंढीयामत रूप जालमां आवी फसवा लागा छे, परंतु ते देव, गुरु अने धर्म ए त्रण तत्त्व रूप सम्यक्त्व ते निश्चय व्यवहार जाण्या विना पामवुं दुर्लज्ञ छे, एवुं समजता नथी.

हवे ते त्रण तत्त्वनो विवरो कहुं छुं. तेमां व्यवहारथी देव तो अढार दूषण रहित श्री अरिहंतजी जाणवा, अने निश्चयथी देव तो ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिमय जेनो आत्मस्वज्ञाव छे, तेज जाणवो. तथा व्यवहार थी गुरु जे निर्ग्रंथ कंचन कामिनी रहित, पंच महा व्रतना पालक ते जाणवा, अने निश्चयथी गुरु तो जेना

आत्माने विषे तत्त्व रमणता होय, तेज जाणवा; तथा निश्चयथी धर्म तो जे पोताना आत्म भावप्राणथी भ्रष्ट थको अनंता जन्म मरण कर्मने वशथको करे छे, ते जन्म मरणना दुःखथी छोडाववुं, तेज जाणवो. अने एवो निश्चय स्वदया धर्म जिहां छे, तिहां व्यवहार धर्म तो निश्चयनयमां छेज. जे माटे उपाध्याय श्रीयशोविजयजीयें सवाशो गाथाना स्तवनमां कह्युं छे, के ॥ निजदया विण कहो परदया, होये कवण प्रकारें ॥ लोक विण जिम नगर मेदिनी, जिम जीव विण काया ॥ फोक तिम ज्ञानविण परदया, जेसी नट तणी माया ॥ शुद्धनय अर्थ मन धारियें ॥ १ ॥ ए वचनथी जाणवुं.

तथा सर्वविरति अने देशविरति जे साधु श्रावक ते सर्वनो धर्म, दयामय छे, ते दया, धर्म तत्त्व छे, ते दयाधर्म आठ प्रकारें छे, ते कहे छे. १ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूपदया, ६ अनुबंधदया, ७ व्यवहारदया, ८ निश्चयदया.

तेमां जे सर्व प्रकारनी शुभाशुभ क्रिया करतां थकां जीवनुं रक्षण करवुं, ते द्रव्यदया.

तथा कोइ जीवने दुर्गतिमां पडतां राखवा माटे हितोपदेश करी धर्म मार्गमां स्थिर करवो, ते. भावदया.

तथा पोताना आत्माने कर्मरूप शत्रुथी छोडाव वा माटें चारित्र ग्रहण करी विहार करवो, जव्यजी वोने हितोपदेश करवा माटे नदी उतरवी, इत्यादि जे धर्म कार्य आत्मोपयोगथी करवुं, तेमां जो पण किं चित् मात्र आरंज थाय, तो पण ते सर्व स्वदया छे.

तथा छकायना जीवोनुं रक्षण करवुं, ते परदया छे. तेमज जिहां पूर्वोक्त स्वदया छे, तिहां परदया तो निश्चे छेज, अने जिहां एकली परदया छे, तिहां स्व दयानी जजना एटले होय पण अने न पण होय.

तथा इहलोक अने परलोकना सुखनी इछाने माटे तथा लोकोनी देखा देखीयें जे जीवरक्षा कर वी, ते दया मंडुक चूर्णवत् संसार वृद्धिनुं कारण छे. जावथी तो ते हिंसाज छे, पण देखवा मात्र दया छे, ते स्वरूपदया जाणवी.

तथा जे श्रावक महोटा आमंबर सहित तीर्थंक रने तथा मुनिने वांदवा जाय ते, तथा शिष्य प्रमुख बीजा जीवोने धर्म मार्गमां आणवाने अर्थे गुरु ते मने आक्रोश करी आकरां वचन कहे, अथवा ता डना करे, ते देखवामां तो हिंसा छे, परंतु जावथी ते दयाज छे. ए अनुबंधदया जाणवी.

तथा जे साधु, श्रावक, विधि पूर्वक जीव दया पाले,क्रिया उपयोग सहित करे,ते व्यवहार दया छे.

तथा जे शुद्ध साध्य उपयोगमां एकत्व अभेद उपयोग साध्य भावमां एकता ज्ञान ते निश्चय दया जाणवी. उपरला गुणठाणानी वृद्धि करनार ए दया छे, माटे सर्वथी श्रेष्ठ ते ए निश्चय दयाज छे.

इत्यादि अनेक प्रकारें दयानुं स्वरूप, सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, वृत्ति, ए पंचांगी प्रमाणथी समजी लेवुं. परंतु एकला सूत्रनुंज ग्रहण करवुं नही. वली ते एकला मूल सूत्र पण वर्त्तमानें पीस्तालीश संख्यायें छे, तेमांथी पण ढूंढीया लोको तो, हठग्राही थका मात्र बत्रीश सूत्रनेज माने छे. ते बत्रीशनां नाम लखुं छुं. १ आचारांग, २ सूयगडांग, ३ ठाणांग, ४ सम वायांग, ५ भगवती, ६ ज्ञाताजी,७ उपासकदशांग,८ अंतगडदशांग,९अनुत्तरउववाइ,१०प्रश्नव्याकरण,११ विपाक, ए अगीआर अंग. तथा १ उववाइजी, २ रायपसेणी, ३ जीवाभिगमजी, ४ पन्नवणाजी, ५ जंबूद्वीपपन्नत्ति, ६ चंदपन्नत्ति, ७ सूरपन्नत्ति, ८ निर यावली, ९ कप्पिया, १० कप्पविमंसिया, ११ पुप्फि या, १२ पुप्फचूलिया, ए बार उपांग. तथा १ नंदी

सूत्र, २ अनुयोगद्वार, ३ दशवैकालिक, ४ उत्तराध्य
यन, ५ निशीथ, ६ बृहत्कल्पभाष्य, ७ व्यवहारकल्प,
८ आवश्यक, ९ दशाश्रुतस्कंध. एवं बत्रीश सूत्रनां
मात्र मूल पाठने मानवामां पण पोतानी मति कल्प
नायें स्वछंदी पणे उपयोग विना जेम पोताना ध्या
नमां आवे, तेम उत्सूत्र प्ररूपतां विपरीत अर्थ क
रवामां पण कांइ बीक राखता नथी एवा जड मू
र्खोने समजाववा माटे किंचित् उपदेश लखुं छुं.

१ श्रीआचारांग सूत्रें साधुने वस्त्र "न धोइज्जा,
न रंगिज्जा" एवो पाठ जिनकल्पी मुनि आश्रयी छे,
अने स्थविरकल्पी साधुने तो शरीरनी शोभा माटे
नही, पण मेलने प्रसंगें जीवनी उत्पत्ति थाय, तथा
लोकमां डुगंछा निंदनीय पणुं थाय, माटे उष्ण पा
णीथी धोइने वस्त्रनो मेल काढाडवो कह्यो छे. तेम
छतां तमें शा वास्ते काढाढता नथी?

तथा रजोहरणनी दांडी अने दसी मलीने बत्री
श आंगुलनुं प्रमाण कह्युं छे, ते तमें घणुंज लांबो रजो
हरण प्रमाण विनानुं कया शास्त्रने आधारें राखो छो?

तथा रात्रियें फासु पाणी, चुनो अने त्रिफलादि
नाखीने साधुयें राखवुं जोइयें, जेमाटे औदारिक

शरीर छे, तेथी कदापि वडीनिति प्रमुख अशुचित्व था य, तो तेनी शुद्धि करवाना काममां आवे, तेम छतां तमें तेवुं फासु पाणी नथी राखता, तेवारें शो उपाय करी अशुचि टालो शुद्ध थइने सद्याय ध्यान करो छो?

वली स्त्रीने रुतुधर्म आवे तथा पुत्रादि जन्मे, सुवावड थाय, तेना घरनो आहार सूतकना योगथी न लेवो, तेम छतां तमें रुतुवतीने हाथे वंहोरो छो अने सुवावडीने हाथे लाडुवा वहोरो छो, ते कया शास्त्रना आधारथी वहोरो छो?

वली श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमां प्रत्येक पदार्थना अनेक निक्षेपा करवा कह्या छे, ते करवानी शक्ति तमारामां नथी, तो पण नाम, स्थापना, द्रव्य अने जाव, ए चार निक्षेपा तो वस्तु मात्रमां अवश्य करवा कह्या छे, तेमज श्रीठाणांगजीने चोथे ठाणे चार प्रकारें जाषा सत्य, तथा दशमे ठाणे दश प्रकारें जाषासत्य कह्युं छे, अने श्रीपन्नवणाजीना जाषा पदमां जाषा सत्य कह्युं छे, तेमज बीजा पण घणा शास्त्र सिद्धांतमां स्थानकें स्थानकें निक्षेपा कह्या छे, ते तमें शा माटे मानता नथी?

तथा श्रीनंदीसूत्रमां सर्व सूत्रोनां नाम कह्यां छे.

ते मांहेला वर्तमानें पीस्तालीश सूत्रो छे, तेमांथी तेर सूत्र नही मानवां अने बत्रीशज मानवां. ते त में क्या गुरुनी आज्ञाथी मान्य करो छो?

तथा श्रीजगवतीजीनी आदिमां सुधर्मास्वामीयें "णमो बंजीए लीवीए" ए पाठें करी ब्राह्मी लीपीने न मस्कार कस्यो छे, ते ब्राह्मी लीपी ज्ञाननी थापना छे, माटे थापनानिक्षेपो सत्य छे, जे माटे श्रीअनुयोगद्वा रमां षडावश्यक करती वखतें पण थापना थापवी कही छे, ते थापना बे प्रकारनी छे, एक सद्भाव थापना, बीजी असद्भाव थापना कही छे. माटे थापना ते द्र व्य छे, अने ज्ञाननो थापना निक्षेपो ते द्रव्यश्रुत छे, तो ते वांदवा योग्य छे. तेवारें श्रीजिन प्रतिमा तेतो श्रीतीर्थंकरनी थापना छे, तेने तमें केम वांदता नथी?

वली समवायांगनी आदिमां ब्राह्मी लीपिना अ ढार जेद कह्या छे, ते अढार प्रकारें द्रव्यश्रुत अक्षर न्यास रूप छे, तेने गणधर देवें नमस्कार कस्यो छे, तथा जगवतीमां "णमोसुयदेवआए" ए वचनथी श्रीजिनवाणीने गणधरें नमस्कार कस्यो छे, अनें श्री जिनवाणी ते नंदीसूत्रमां द्रव्यश्रुत कहेली छे, अने जे द्रव्य ते जावनुं कारण छे, एम कारण कार्यनो

संबंध छे, केम के कारण विना कार्य न होय, तथा शास्त्रमां गुरुनी तेत्रीश आशातना टालवामां पाट, पीठ, संथारादि उपकरणनी आशातना टालवी कही छे, ते उपकरण तो सर्व अजीव छे, तथा वस्त्र, पात्र, रजोहरणादि पण सर्व अजीव छे, पण ते चारित्रनां साधन छे, एथी चारित्र सधाय छे, तो श्रीजिनप्रतिमा ते समकित शुद्धिनुं साधन केम न होय? जे माटें छद्मस्थ मुनिने पण ध्याननुं आलंबन छे, पण निरालंबन नथी, तो श्रीजिनेश्वरनी स्थापना ते आलंबन केम न होय? ए अधिकार, उववाइ सूत्रें छे.

वली दशवैकालिक सूत्रें तथा उत्तराध्ययनना आठमे अध्ययनें कहेलुं छे के, जिहां स्त्रीनुं रूप चित्रित करेलुं होय, तो ते स्थानकें मुनिने रहेवुं नही. केम के, स्थापनास्त्री पण विकारनुं कारण थाय छे, तेम श्रीजिनेश्वरनी स्थापना, ते आत्मध्याननुं कारण थाय छे.

वली जंघाचारण विद्याचारण मुनियो मेरुपर्वतना शिखर उपर पांडुकवनना चैत्योने वांदीने पछी नीचें, समभूतलाथी पांचशें योजन ऊंचुं नंदनवन छे, त्यांनां चैत्योने वांदे छे, पछी एकज मगले इहां आवीने इहांनां अशाश्वतां चैत्योने वांदे छे, तेमांथी जंघाचारण

मुनियोने इहांथी जातां लवणसमुद्रमांहेली पाणीनी
वेल शोल हजार योजन उंची छे,तेथी ते मुनियो अप्का
य जीवोनी विराधना न थाय, ए हेतु माटे सत्तर ह
जार योजन उंचा चालीने पछी तीर्छि गति करे छे, ए
अधिकार, श्री समवायांग सूत्रमां छे.

वली चैत्य शब्दनो ज्ञान एवो अर्थ तमें करो छो,ते
सिद्धांतोमां तो जिहां ज्ञान संबंधी पाठ छे,त्यां सर्व ठे
काणें "णाणं पंचविहं पन्नत्तं" एवा पाठ छे, पण
"चेइयं पंचविहं पन्नत्तं" एवा पाठ तो क्यांय नथी,माटे
जूठो अर्थ न करवो, चैत्य शब्दें जिनगृहज समजवुं.

वली परदेशी राजानो जीव, सुधर्म देवलोकें सूरि
याभ नामें देव थयो छे,तेणें श्री जिनप्रतिमा तथा जि
न दाढाउनी पूजा करी छे, ए अधिकार, श्रीरायप्पसे
णी सूत्रमां छे, ते जोइ लेजो.

वली जंबूद्वीपपन्नत्तिमां तथा भगवतीसूत्रना दश
मा शतकना पांचमा उद्देशामां श्री तीर्थंकरनी दाढा
उ पूजवा वांदवा योग्य कही छे. तो ते देवो श्रीजिन
प्रतिमा शा वास्ते न पूजे ? अर्थात् जे दाढाउ पूजे, ते
प्रतिमा तो अवश्य पूजेज. ते विचारी जोजो.

वली तमें शास्त्रना अजाण थका कहो छो के, दे

वता नोधम्मिया छे माटे तेनी करणी जे छे,ते मनुष्य
ने करवा योग्य नथी. ए कहेवुं पण नूल नरेलुं छे.
केम के, एम कहेवाथी देवताना अवर्णवाद बोलो बो,
माटे देवताना अवर्णवाद बोलवाथी तमोने डुर्लनबो
धि पणुं प्राप्त थशे! ए वात ठाणांग सूत्रमां छे.

तथा श्रीउववाइ सूत्रमां अंबड नामें पारिव्राजक
तथा तेना सातशें शिष्योयें मली एवुं कह्युं छे, के
अमें श्री अरिहंतनी प्रतिमाने नमस्कार करीयें अ
ने अन्यदर्शनीयोयें ग्रहण करेली जे श्रीअरिहंत प्र
तिमा, तेने नमस्कार न करीयें, ते विचारी जो जो.

वली उपासक दशांगमां आनंद श्रावकें श्रीजिन
प्रतिमाने नमस्कार कस्यो छे, अने ते विना बीजा
दर्शनीयोना देवोनी प्रतिमाने तथा अन्यदर्शनीयोयें
ग्रहण करेली जिनप्रतिमाने वांदवानो निषेध कस्यो छे.

तथा श्रीठाणांग सूत्रने दशमे ठाणे श्रीअरिहंता
दिक दश गुणीनो विनय करवो कह्यो छे, ते दशमां
श्रीजिनप्रतिमानो विनय पण आवी गयो छे.

ज्ञातासूत्रना शोलमा अध्ययनमां द्रौपदीयें श्री
जिनप्रतिमानी सत्तर नेदें पूजा कीधी छे. ते पण
श्राविका हती. जे माटे नारद आवे थके तेने असं

यमी अपच्चक्खाणी जाणीने उत्री थइ .नथी. तथा वली जे प्रतिमानी पूजा करी तेनी आगल नमुत्थु णंनो पाठ कह्यो छे. ते जिनप्रतिमा विना बीजा यक्षादिकनी प्रतिमा आगल ए पाठ कहेवाय नही.

तथा व्यवहार सूत्रमां कोइ साधुथी अयोग्य स्थानक सेवाइ गयुं होय, तो आचार्य अथवा उपाध्याय पासें आलोयणा लीये, तेनो योग न बने तो पोताना सरखा बरोबरीया साधु पासें आलोयणा लीये, तेनो पण योग न बने तो जेणें कर्मने वशें साधु पणुं त्यागीने पाछुं श्रावक पणुं अंगीकार करेलुं होय, परंतु श्रद्धायुक्त होय तेनी पासेंथी आलोयणा लीये, तेनो योग न बने तो श्रीजिनप्रतिमानी आगल आवी आलोयणा लीये, तेनो पण योग न बने तो गामनी बाहिर आवी पूर्वदिशि अथवा उत्तरदिशिनी सन्मुख जइ आलोयणा लीये. इहां पण साधुने जिनप्रतिमा आगल आलोयणा लेवानुं कह्युं छे.

माटे जिनप्रतिमानी पूजा, ते श्रीवीतरागनी आज्ञा छे. अने आज्ञायें चालवुं, तेज धर्म छे. जे माटे सिद्धांतमां " आणाए धम्मो, आणाए तवो, आणाए संजमो." एवा पाठ छे, तेथी आणा विना धर्म, तप

तथा संयम दया प्रमुख सर्व व्यर्थ छे. जे माटे श्रीसू यगडांगमां कह्युं छे, के जे साधु अत्यंत दुर्बल शरीरें मास मास क्षमणें पारणुं करे छे, वली वस्त्र रहित नग्न रहे छे, तथापि एक श्रीवीतरागनी आज्ञा बाहि र छे, तो ते साधु अनंतो काल भवभ्रमण करशे. तो तमें शा माटे आज्ञालोपक थाउ छो ?

तथा श्रीजिन प्रतिमा पूजारूप शुभकरणीमां हिंसा मानो छो, तो श्रीज्ञाता सूत्रना पांचमा अध्य यनें श्रीनेमीश्वर भगवान् द्वारिकायें समोसर्या, तेवा रें श्रीकृष्ण प्रमुख सर्व वांदवा गया. तिहां भगवान् नी देशना सांभली थावच्चा कुमरने चारित्र लेवानी उत्कंठा थइ, तेवारें श्रीकृष्णें नगरमां पडह वजडा व्यो, जे थावच्चा कुमार दीक्षा लीये छे. तेनी सार्थे जेमने दीक्षा लेवी होय, तेने जे द्रव्य जोइयें, ते म हारा भंमारमांथी लइ जाय, तेमना माता पितादि कनुं प्रतिपालन हुं पुत्रतुल्य थइ करीश ! इत्यादि प डह सांभलीने एक हजार भाविक पुरुषोयें थावच्चा कुमरना सार्थे दीक्षा लीधी. अने श्रीकृष्णें चतुरंगि णी सेना सजी वाजित्रादिक आमंबर सहित महोटो महोत्सव कर्यो, तेमां तमारे लेखे तो हिंसा थइ ह

शे,पण सिद्धांतमां तो एने कर्मनिर्जरानुं हेतु कह्युं छे.

वली श्रीउववाइमां कोणिकराजा तथा नगवती ना तेरमा शतकने छठे उद्देशें उदायिनराजा श्रीवीर स्वामीने महोटा आमंबर सहित चतुरंगी सैन्या सहित सामैयुं लइने वांदवा गया छे, ते पण तमारे लेखे तो हिंसा थइ हशे! पण शास्त्रमां तो एवा शुन्न कृत्योने महोटा पुण्यबंधना कारणनूत गण्यां छे.

तथा नगवतीना बीजा शतकना पांचमा उद्देशा मां तुंगीया नगरीना श्रावकोयें बलिकर्म एटले श्री जिनपडिमानी पूजा कीधी छे, तेमने श्रीवीरन्नगवानें वखाण्या छे, ते विचारजो.

तथा ज्ञातासूत्रें श्रीमल्लिनाथजीयें पोतानी प्रतिमा स्थापीने तेमां नित्य प्रत्यें एक कवल अन्न नाख्युं, तेमां यद्यपि हिंसा तो थइ हशे, तथापि पूर्वन्नवना छ मित्रोने प्रतिबोधवा माटे लान्ननुं कारण हतुं, तेथी एम करवुं पडयुं छे. माटे त्रोटो कह्यो नथी. वली बलिकर्म शब्द जे छे ते पूजाकर्मवाचक छे, ते श्रीज्ञातासूत्रें तथा निशीथसूत्रें जो जो.

वली आवश्यकनिर्युक्तिमां पण बलि शब्दें नैवेद्य कह्युं छे, तथा वास्तु शास्त्रमां, ज्योतिष्य शास्त्रमां

पण गृह देवतानी पूजा करी नूतने बलिदान देइने घरमां प्रवेश करे. एम सर्वत्र बलिशब्दथी नैवेद्य पूजा ए अर्थ सिद्ध थाय ळे, ते विचारी जो जो.

तथा जंबुद्वीपपन्नत्तिमां श्रीतीर्थंकरनो जन्माभिषेक करवा माटे देवतायें स्नात्र महोत्सव कस्यो, तिहां समुद्र जेवो पाणीनो प्रवाह चाल्यो,तेमां जो पण हिंसा तो थइ हशे,तो पण जिन भक्तिनी प्रबलता माटें कोइ पण शास्त्रमां स्नात्र महोत्सवने हिंसामां गण्यो नथी! पण उलटो बोधिबीज एटले समकेतने उपार्जन करनारो गण्यो ळे, तेथी ए अहिंसाज ळे पण एमां परिणामें हिंसानो बंध नथी. इति ढूंढकोपदेश.

ए ढूंढकोने करेलो शुभोपदेश सांभळीने हे भव्य जीवो! तमें नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव, ए चार निक्षेपे करी श्रीअरिहंतादिक नवपदनुं एकाग्र चित्तें स्मरण करो. एम करवाथी पूर्वें अनंता जीव सिद्ध पदने पाम्या ळे, अने हवे पामशे.

ए श्रीअरिहंतादिक नवपदनुं स्मरण करवानी पद्धति श्रीसिद्धांतमां आवी रीतें कही ळे, के हाथनी आंगुलिना पर्व आवर्त्तथी जे नवकार गुणे, तेने पिशाचादि भूत प्रमुख ळल करी शके नही, तथा विष

रीतपदें एटले उलटावीने एक लक्ष जाप करे,तो महा
कष्ट बंधनथी छूटे. कदापि हाथ उपर न गणी शके, तो
माला हृदयनी सन्मुख राखे, ते माला अंगुठ उपर
राखी तर्जनी आंगुलिथी गणे, तथा मेरुने उल्लंघे
नही, मौनपणे स्मरण करे.

तथा श्रीपादलिप्ताचार्यकृत प्रतिष्ठा कल्पमां ए
जाप संबंधी विशेष अधिकार कह्यो छे, तिहां त्रण
प्रकारना जाप कह्या छे, तेमां प्रथम मानस जाप,
ते मनमां जाप करवो, ए तो सर्वोत्तम छे. अने बी
जो उपांशु जाप तेमां बीजो कोइ न सांभले पण पो
ताना अंतर्गतमां शब्दनो उच्चार थाय,माटे ए मध्यम
छे. तथा त्रीजो भाष्यजाप ते तो बीजा पण सांभले,
माटे ए अधमजाप छे. ए त्रणमां प्रथम मानस जाप ते
शांतिने अर्थे छे अने बीजो उपांशु जाप, ते पुष्टिने अर्थे
छे, तथा त्रीजो भाष्यजाप ते देवादिकनुं आकर्षण
एटले तेमने बोलाववाने अर्थे छे. तथा फलनी इच्छा
वालाने तो ॐकार सहित गुणवो, अने मोक्षनी इच्छा
वालाने ॐकार सहित गुणवानी जरूर नथी. ए अधि
कार, श्रीहेमाचार्यकृत योग शास्त्रमां पण कह्यो छे.

॥ दोहा ॥

नरुअच बंदिर नाग्यथी, मुनिसुव्रत जिनराज ॥ नेटे नच नावठ गइ, सीधां सघलां काज ॥ १ ॥ तेह नयरमां दीपतुं, वेजलपुर वरवीर ॥ संघ सकल शोना अधिक, धर्मे मेरु ज्युं धीर ॥ २ ॥ चउमासुं संघ आग्रहें, कीधुं धर्म संकेत ॥ शास्त्र रहस्य प्रगट कर्युं, स्यादवादने हेत ॥ ३ ॥ संवत् उगणी चुमालिशें, ज्ञानपंचमी सुखवास ॥ प्रथम जिणंद पसायथी, पूगी मननी आश ॥ ४ ॥ सौनाग्यविजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविजय जिनवचनथी, आनंद अधिको पाय ॥ ५ ॥ इति ॥

इति श्रीमद्प्रवर पंमित गणिश्री सौनाग्य विजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनिश्री मयाविजयविरचित श्रीशास्त्ररहस्य प्रकाशे चतुर्थ वर्गः ॥ ४ ॥

अथ चतुर्थ षट्द्रव्य नयप्रकाशकविलास प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर्द्धमान जिन प्रणमीने, नाषण सार सिद्धांत ॥ द्रव्यह गुण पर्यायथी, ध्यावे विरला शांत ॥ १ ॥ नयनिक्षेप संयुक्त जे, तत्त्वनेद अलंकार ॥ तेमां पंच

जड जाणीयें, एक चेतना धार ॥ २ ॥ करे पर्यायें रमण जे, तत्त्व न पामे सार ॥ नेदन्नेद षट् द्रव्यमां, आतम गुण सुखकार ॥ ३ ॥ एह जगत स्थिति जाणीयें, नादिनंत नव मूल ॥ पुगलादि पर रमणमां, एह अनादी नूल ॥ ४ ॥ तातें सद्गुरु सेवियें, करि थिर मन वच काय ॥ ध्येय ध्यान एकत्वता, जन्म मरण दुःख जाय ॥ ५ ॥

प्रथम ठ द्रव्यनां नाम कहे ठे. १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुजलास्तिकाय, ५ जीवास्तिकाय, ६ कालद्रव्य, ए ठ द्रव्यशाश्वतां ठे. अने जगतजाल बंधन रूप संसार, मूल ठे. तेमां धर्मास्तिकायनो चलनस्वनाव, अधर्मास्तिकायस्थिर स्वनाव, आकाशनो अवकाश स्वनाव, पुजलनो पूर्ण गलन वर्ण गंध रस स्पर्श इत्यादि स्वनाव, जीवनो ज्ञानादिगुण लक्षण चैतन्य स्वनाव, अने कालनो नवा पुराणावर्त्तना लक्षण स्वनाव, ए कालद्रव्य उपचार मात्र ठे ए ठ द्रव्यना नाम कह्या.

ठ द्रव्यमां एक कालद्रव्यने प्रदेश नथी माटे अप्रदेशी ठे, अने शेष पांच द्रव्य सप्रदेशी ठे. माटे ए पांच द्रव्यने सिद्धांतमां अस्तिकाय कह्यां ठे.

छ द्रव्यमां एक पुद्गलद्रव्य रूपी छे, अने शेष पां
च द्रव्य अरूपी छे. तथा एक जीव द्रव्य ते चैतन्य ल
क्षण छे. अने शेष पांच द्रव्य चैतन्य रहित जडभूत छे.

छ द्रव्यमां धर्म, अधर्म, अने जीव ए त्रण द्रव्य
ना प्रदेश तो प्रत्येकें लोक प्रमाणें असंख्याता छे,
तथा आकाशास्तिकायना तो लोकालोक प्रमाण अ
नंता प्रदेश छे. तथा पुद्गल द्रव्यना जगतमां अनंता
सूक्ष्म परमाणु नित्य शाश्वता छे, ते एकेका परमा
णुमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे स्पर्श
छे, तथा बे परमाणु एकठा मळे, तेवारें द्व्यणुक
खंध कहेवाय, एमज त्रण परमाणुयें त्र्यणुक खंध
कहेवाय. एम यावत् संख्याता असंख्याता तथा अ
नंता परमाणु एकठा मळी एक पिंड बंधाय तथा
वळी विखरी पण जाय. एवो पुद्गलनो पूर्ण गलन
स्वभाव छे, ते एक आकाश प्रदेशें पुद्गलना स्कंध अ
नंता रह्या छे. एम सर्व चौदराज लोकमां स्कंध भ
र्या छे. तथा जीव द्रव्य अनंता छे परंतु सर्वमां चै
तन्य लक्षण स्वभाव एक सरखो छे, तेमज धर्मास्ति
काय द्रव्य लोकप्रमाण छे, प्रदेश असंख्याता छे,
पण चलन सहाय गुण बधा प्रदेशमां एक सरखो

छे, तेम अधर्मास्तिकायमां स्थिति सहाय गुण, तथा आकाशास्तिकाय अनंत प्रदेशी सर्व द्रव्य आधार नूत छे, पण अवकाश गुण एटले जीव पुद्गलने चालतां मार्ग आपे, ते स्वनाव एकज छे. तथा पुद्गल परमाणु अनंता छे, ते सर्वेमां पूर्ण गलन पुद्गल स्वनाव एकज छे.

तथा कालद्रव्य ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमानकाल आश्रयी समय अनंता छे,पण वर्त्तमान समय एकज छे. एम सर्वद्रव्य पोतपोतानुं कार्य करवामां निन्ननिन्न स्वनावी छे,कारण के छ ए द्रव्य एकज आकाश क्षेत्रमां रह्यां छे पण एक बीजाना स्वनावमां मले नही पोतपोताना स्वनावमांज रहे. तथा एना क्षेत्रथी, कालथी अने नावथी घणा नेदो थाय, पण स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वनावने प्रत्येक द्रव्य लीधुं रह्युं छे, माटे ए चारना पिंमीनूत समुदायने द्रव्य कहीयें. ते द्रव्य रूप कोइ कालांतरें पण बदलाइने बीजे रूपें न थाय.

द्रव्यने विषे स्वस्वकार्य एटले पोतपोतानुं कार्य करवाने सामर्थ्यरूप पर्याय अनंता छे, ते अविनागरूप जेना एक खंमना बे विनाग न थाय एवाने प

र्याय कहीयें, अने ते पर्यायना समुदायने गुण कहीयें

तथा जिन्न जिन्न एटले जूडुं जूडुं कार्य करवाने सामर्थ्यरूप पर्याय जे छे, तेने पर्याय कहीयें. ते वली जे छता पर्याय अनंता अस्तिरूपें छे, तेथकी पण अनंत गुणा अविजाग रूप सामर्थ्य पर्याय जाणवा.

तथा उत्पाद, व्यय अने ध्रुव, ए त्रिपदीयें करी युक्त होय, ते द्रव्य कहेवाय. तथा द्रव्य ते द्रव्यास्तिक, अने गुण पर्याय, ते पर्यायास्तिक ए बे नय कह्या छे. माटे गुण पर्याय सहित ते द्रव्य कहेवाय.

तथा अर्थक्रियानुं करवुं, अनेक प्रकारें न्यूनाधिक रूपनुं धरवुं, ते पर्यायास्तिकनयनुं लक्षण जाणवुं.

ए पंचास्तिकाय जे द्रव्य, ते सामान्य तथा विशेष एवा बे प्रकारें छे, तेमां सामान्य स्वजाव लक्षण तो द्रव्य, गुण, पर्यायने विषे व्यापक, पारिणामिक लक्षण एक नित्य निरवयव अक्रिय सर्वगत ते सामान्य लक्षण जाणवुं, अने विशेषस्वजाव ते नित्य तथा अनित्य निरवयव, सावयव, सक्रिय, अक्रिय अने देशगत, सर्वगत तथा विशेष पदार्थ गुण प्रवृत्तिकारण ते विशेष लक्षण कहीयें. परंतु ए विशेष विना सामान्य न होय, अने सामान्य विना विशेष न होय. जेम सू

र्यविना किरणतेज न होय अने किरण तेज विना सूर्य न होय. ए दृष्टांतें जाणवुं.

हवे ते मूलसामान्य स्वनाव तो ब नेदें बे, ते कहे बेः-- १ अस्तित्वं, २ वस्तुत्वं, ३ द्रव्यत्वं, ४ प्रमेय त्वं, ५ सत्त्वं, ६ अगुरुलघुत्वं. तेमां १ जे नित्यत्वादि ना नित्यस्वनाव आदि उत्तर सामान्य अनंता तथा पारिणामिक विशेष स्वनाव ते ए सर्वने आधार नूत तेने अस्तित्व कहीयें. २ तथा गुणपर्यायने आधार नूत ते वस्तुत्व कहीयें. ३ जे अर्थक्रियानुं करवुं तथा उत्पाद जे उपजवुं ते पर्यायने आविर्नाव लक्षण कहीयें, अने व्यय नूत एटले जे विणसवुं ते पर्यायने तिरोनाव कहीयें, एवी रीतें ए उत्पाद अने व्यय बे हुने आधार नूत ते द्रव्यत्व कहीयें. तथा ४ स्वपर वस्तुनुं जाणवुं जे ज्ञाननुं प्रमाण तेने प्रमेयत्व कहीयें. तथा ५ उत्पाद, व्यय अने ध्रुव,तेणें करी युक्त ते सत्त्व कहीयें. तथा ६ षटगुण हाणि वृद्धि स्वनाव जे अगुरु लघु पर्याय तेने आधार नूत ते अगुरु लघुत्व कहीयें.

हवे षट्गुण हाणि तथा वृद्धि ए सर्व द्रव्यने विषे थइ रही. बे, ते कहे बे. १ अनंतनाग हाणी, २ असं

ख्यात जाग हाणी, ३ संख्यात जाग हाणी, ४ संख्या त गुणहाणी, ५ असंख्यात गुण हाणी, ६ अनंतगुण हाणी. ए ब प्रकारनी हाणी जाणवी. हवे ब प्रकार वृद्धिना कहे ठेः— १ अनंत जागवृद्धि, २ असंख्यातजागवृद्धि, ३ संख्यातजाग वृद्धि, ४ संख्यातगुणवृद्धि, ५ असंख्यात गुणवृद्धि, ६ अनंत गुण वृद्धि, ए षड्गुणवृद्धि जाणवी. ए मूल सामान्य स्वजाव ब कह्या.

हवे उत्तर सामान्य स्वजाव अनंता ठे, तथापि इहां तेर जेद शास्त्रांतरथी कहुं बुं. १ अस्तिस्वजाव, २ नास्तिस्वजाव, ३ नित्यस्वजाव, ४ अनित्यस्वजाव, ५ एक स्वजाव, ६ अनेक स्वजाव, ७ जेद स्वजाव, ८ अजेदस्वजाव, ए जव्यस्वजाव, १० अजव्यस्वजाव, ११ व्यक्तस्वजाव, १२ अव्यक्तस्वजाव, १३ परमस्वजाव. इत्यादि वस्तु उत्तर सामान्य जेद अनंतमय ठे.

हवे ए तेर स्वजाव विवरीने देखाडे ठेः—१ अस्तिस्वजाव ते स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजाव, ए स्वद्रव्यादि चारमां व्याप्य व्यापक संबंध पोतानाज स्वरूपमां स्थिरीजूत परिणाम पण अंतर नही पोताना स्वरूपमां प्रणमन परिणमे ते अस्तिस्वजाव जाणवो.

२ नास्ति स्वजाव ते स्वद्रव्यादिक चार मध्यें अ

न्य द्रव्यनुं जे स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभाव,ए चारेनो अभाव एटले नास्तिपणुं छे,अर्थात् स्वद्रव्य मध्यें परद्रव्य नथी जेम ज्ञान दर्शनादि उपयोग सहित चैतन्य द्रव्यमां अन्य अचेतनादि जड स्वभावनुं नास्तिपणुं छे, जेम घटने विषे घटनुं अस्ति पणुं छे,अने पटनुं नास्ति पणुं छे, तेमज पटद्रव्यने विषे पटनुं अस्तिपणुं छे अने घटनुं नास्तिपणुं छे, एम सर्व द्रव्य वस्तु स्वपर्यायें अस्तिरूप छे अने परपर्यायें नास्तिरूप जाणवा. ए अस्ति अने नास्ति उभय एक समयें मुखें कहेवाय नही. ते अस्ति नास्तिअवक्तव्य नामें त्रीजो भांगो. ए त्रण भंग सकलादेशी छे. अर्थात् सर्ववस्तुने विषे आदेश एटले कहेवा योग्य छे, एवी रीतें इहां सात भांगा उत्पन्न थाय, तेनां नाम मात्र प्रसंगें लखुं छुं:-१ जीवद्रव्य ज्ञानादि गुणें अस्तिरूपें छे, माटें स्यात् अस्तिनामें प्रथम भंग. तथा २ शेष अचेतनादि परद्रव्यनी जीवने विषे नास्ति छे, ते स्यात् नास्ति नामें बीजो भंग. इहां स्यात्पद जे छे ते द्रव्यनो स्वधर्म तथा परधर्मनुं ग्रहण करवाने अर्थें छे. स्यात् एटले कथंचित् पणे ग्रहण करवो. तथा ३ द्रव्यने विषे परधर्मनुं नास्तिपणुं अने स्वधर्मनुं अस्तिपणुं ते

स्यात् पदें ग्रहण करवा योग्य पण वचननुं जे प्रव र्त्तन छे तेथीं वर्त्तमान एक समयें वचनें अगोचर एटले नथी कहेवा योग्य माटे ते स्यात् अवक्तव्य नामें त्रीजो नंग जाणवो. तथा ४ अवक्तव्यधर्म ते एक समयें वचनथी कहेवाय नही, केम के स्यादस्ति कथनें पण असंख्याता समय लागे, अने स्यात् नास्ति कथनें पण असंख्याता समय लागे, मांटे एक समयें अस्ति नास्ति बेहुनुं ग्रहण ते स्यात् अस्ति नास्ति नामें चोथो नंग जाणवो. तथा ५ स्यात् अस्ति ना स्तिनुं वक्तव्य एटले कहेवुं अने अवक्तव्य एटले न कहेवुं, एवी शंका निवारवाने अर्थें स्यात् अस्ति अ वक्तव्य ए पांचमो नंग, तेमज ६ स्यात् नास्ति अव क्तव्य छठो नंग जाणवो. अने ७ स्यात् पदें ग्रहण जे अस्तिनाव, तेनुं वक्तव्य तथा अवक्तव्य तथा ना स्तिनावनुं वक्तव्य अने अवक्तव्य ते एक वस्तुना गुण तथा पर्यायनुं एक समयमां न कहेवाय, केम के अस्ति कहेते थके नास्तिनो मृषावाद लागे अने नास्ति कहेते थके अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे बे हुनुं अवक्तव्य एक समयमां छे, तेथी स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य ए सातमो नंग जाणवो.

वली ए सप्तभंगी नित्य तथा अनित्यने विषे तथा सामान्य धर्म विशेष धर्मने विषे तथा गुण पर्यायने विषे तथा ज्ञान दर्शन तथा स्वजाति विजातिने विषे एम पंचास्तिकायमां एकेक द्रव्यने विषे नित्य अनित्य एक अनेक सत् असत् वक्तव्य अवक्तव्य, ए आठ पक्ष छे तेनी सप्तभंगीयो करवी एम अनंती सप्तभंगी उत्पन्न थाय, ते सुविहित गीतार्थथी समजी लेवी.

तथा अस्तिभावनो अभाव कह्यो, तो पदार्थमां गुणनो अभाव होय, तेवारें पदार्थनुं शून्य पणुं थइ जाय. कदापि नास्तिभावनो अभाव कह्यो, तो परभावनुं शून्य पणुं थइ जाय, तेवारें सर्व जीव सिद्धस्वरूपी कर्म रहित थवा जोइयें, ए महोटुं दूषण आवे ?

तथा तत्त्वार्थ ग्रंथमां अव्यय, नित्य, एक, अप्रच्युत जे चलायमान न थाय, ए प्रथम नित्य कह्युं छे. अने बीजुं परंपरानित्य कह्युं छे. वली ए द्रव्य ते एक ऊर्ध्व प्रचय अने बीजो तिर्यग् प्रचय ते द्रव्यथी नित्यस्वभाव कहीयें. अने नाना प्रकारें पर्यायनुं उपजवुं तथा विणसवुं ते अनित्य स्वभाव कहीयें.

तेमां नित्यस्वभाव बे प्रकारें छे. कूटस्थ नित्यता अने बीजो प्रदेशादि पारिणामिक ज्ञानादि जे गुण

तेनुं उत्पाद व्यय अनेक प्रकारें तथा विस्रसा अने प्रयोगसा ए बे प्रकारना जे पुजल अने सर्व धर्मास्ति कायादि द्रव्यना जे चलन सहकारादि गुण तथा उत्पाद व्यय पर्याय चलन सहकारादि जे गुण ते ध्रुव छे, ए वात जेने विस्तारें जाणवी होय, तेणे अनेकांत जयपताका ग्रंथथी जाणवी.

तथा सिद्धात्मा केवलज्ञानें करी घटपटादि सर्व पदार्थने यथार्थ जाणे तथा देखें, तेमां प्रथम समयें घट प्रतिनास जाणे देखे, बीजे समयें घट ध्वंसने जाणे देखे, तेवारें घटना प्रतिनासनो व्यय थयो अनें कपालादि जे ठीकरा कटका तेनो उत्पाद थयो अने ज्ञानरूप जे जाणपणुं ते तो ध्रुव छे, ए त्रिपदी सिद्धात्माने विषे जाणवी.

तेमज धर्मास्तिकाय द्रव्य ते एक समयें संख्याता परमाणुने चलन सहाय करे, अने बीजे समयें असंख्याता परमाणुने चलन सहाय करे, तेवारें संख्यातानो व्यय अने असंख्यातानो उत्पाद थयो. अने चलनसहाय गुण ध्रुव पणे छे, ए धर्मास्तिकायमां त्रिपदी जाणवी. एम अधर्मास्तिकायादि सर्व द्रव्यने विषे 'उप्पन्ने वा, विगमेवा, धुवे वा' ए त्रिपदी जा

एवी. तथा वली अगुरु लघु पर्यायनो षड्गुण हानि वृद्धि रूप उत्पाद व्यय तो सर्व द्रव्यने विषे थइ रह्यो छे अने ते सर्व द्रव्य पणे ध्रुव छे.

तथा तत्त्वार्थवृत्तिमां आकाशास्तिकायने अधिकारें अलोकाकाशने विषे जो पण जीव पुद्गलादि अन्य कोइ पण द्रव्य नथी तो पण तेमां अगुरु लघु पर्यायनी हानिवृद्धि रूप उत्पाद व्यय अवश्य छे.

तथा भगवतीजीनी टीकामां कह्युं छे के अस्तिपर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंत गुणा अधिक छे, तेमां पण पूर्व पर्यायनो नाश अने नवा पर्यायनुं उपजवुं ते उत्पाद व्यय जाणवो अने पर्याय पणुं ते ध्रुव छे. एम सर्व पदार्थने विषे उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणुं छे.

तथा भिन्न भिन्न पर्याय प्रवर्त्तन स्वकार्य करवाने सामर्थ्यभूत जे विशेष स्वभाव पर्याय ॥तद्यथा॥ १ पारिणामिकता, २ कर्तृता, ३ ज्ञायकता, ४ ग्राहकता, ५ भोक्तृता, ६ रक्षणता, ७ व्याप्यव्यापकता, ८ आधाराधेयता, ९ जन्यजनकता, १० अगुरुलघुता, ११ विभूतकारणता, १२ कारकता, १३ प्रभुता, १४ भावुकता, १५ अभावुकता, १६ स्वकार्यता, १७ सप्रदेशता, १८ गतिस्वभावता, १९ स्थितिस्वभावता,

२० अवगाहकस्वभावता, २१ अखंमता, २२ अचलता, २३ असंगता, २४ अक्रियता, २५ सक्रियता. इत्यादि नाना प्रकारनां पर्याय लक्षण छे.

तथा सम्मतिग्रंथमां कह्युं छे, के वस्तु सत्ताधर्मने विषे उपाधि नथी उपाधि तो उपचारथी कल्पित मात्र छे. कारण के वस्तु सत्ता धर्म तो परस्पर मांहो मांहे कोइनो कोइना स्वभावमां मलतो नथी.

धर्मास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने गतिसहाय, ए चार गुण छे. तथा अधर्मास्तिकायना अमूर्त्ति, अचेतन, अक्रिय अने स्थितिसहाय, ए चार गुण. तथा आकाशास्तिकायना अमूर्त्ति, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहना, ए चार गुण. तथा पुद्गलास्तिकायना रूपी, अचेतन, सक्रिय अने पूरणगलन, वर्ण, गंध, रस, फरसादि ए चार गुण. तथा जीवास्तिकायना ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अव्याबाध, अमूर्त्ति, अगुरुलघु, अनवगाहादि गुण जाणवा. ए पंचास्तिकायना गुण कह्या. अने छठुं कालद्रव्य तो उपचार मात्र छे, तेना अरूपी, अचेतन, अक्रिय, नवपुराण वर्त्तना लक्षण चार गुण जाणवा ॥ इति ॥

हवे छ द्रव्यना पर्याय कहे छेः—धर्मास्तिकाय, अ

धर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय, ए त्रण द्रव्यना खंध, देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय सरखा जाणवा. तथा पुद्गलास्तिकायना खंध, देश, प्रदेश अने परमाणु, ए चार पर्याय जाणवा. तथा जीवास्तिकायना अव्याबाध, अनवगाह, अमूर्त्ति अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय जाणवा. तथा काल द्रव्यना अतीत, अनागत, वर्त्तमान अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय जाणवा. इत्यादि प्रकारें पर्याय जाणवा.

तथा चेतनादि षड्द्रव्यनो विशेष गुण ते जेम धर्मास्तिकायनो चलनसहाय गुणादि ते सर्व द्रव्यव्यंजनपर्याय कहीयें. तथा गुणपर्याय ते गुण अविभाग पणे तथा गुणव्यंजन पर्याय ते ज्ञायकतादि कार्यरूप तथा मतिज्ञानादि ज्ञानचक्षु, दर्शनादि दर्शन, क्षमा मार्द्दवादि चारित्र, अवर्ण, अगंध, अरस, अस्पर्श. अमूर्त्त्यादि गुणव्यंजन पर्याय जाणवा. तथा अगुरुलघु षट गुण हानि वृद्धिरूप ते स्वभाव पर्याय जाणवा. तथा जीवने नरकादि परिभ्रमण करवुं, ते विभाव पर्याय जाणवा तथा मेरुपर्वतादि शाश्वता पदार्थ ते पुद्गलद्रव्यना अनादि नित्य पर्याय जाणवा तथा अनादि अनंत, अनादिसांत, सादिसांत, अने सादि अनंत

त,ए चार भांगा सर्वे शाश्वती तथा अशाश्वती वस्तु अ
ने भव्य तथा अभव्यने विषे पामीयें, ए सर्वे पर्यायना
भेद छे ते इहां लख्या नथी. एम अनंत भेदें पर्याय छे.

तथा नामादि चार निक्षेपा ते पण सर्वे पदार्थ मा
त्रना सहज वस्तु पर्याय छे. "एवं चत्वारो वस्तु पर्या
याः" इति भाष्य वचनात् ॥ नामयुक्त प्रतिवस्तुनि नि
क्षेप चतुष्टयम् युक्तम् उक्तं चानुयोगद्वारे॥जन्न य जं जा
णिज्जा, निरकेवं निरकेवे निरविसेसं ॥ जब य नो जा
णिज्जा, चउक्कयं निरकेवे तन्न ॥ अर्थः- जो जाणवा
नी शक्ति होय तो निक्षेपा विशेष प्रकारें करवा. परंतु
वधारे निक्षेपा करवानी बुद्धि न होय, तो पण चार
निक्षेपा तो अवश्य करवा जोइयें. कारण के वस्तु
स्थापननिक्षेप पदार्थ विना मात्र नाम निक्षेपें करी
यथार्थ पणे वस्तुनो प्रतिभास न थाय, माटे वस्तु प
दार्थनुं स्मरण ते निराकार होय,त्यारें अनवस्थित प
णुं थयुं,तेथी यथार्थ वस्तुनुं ज्ञानज न होय, माटें चा
र निक्षेपा तो अवश्य करवा तेनां नाम कहे छे.

तिहां प्रथम नाम निक्षेपाना बे भेद छे, तेमां एक
तो सहजथी जीव अथवा अजीवनुं नाम तो होयज
छे, बीजुं पांच मनुष्य भेळां मळीने नाम पाडे, ते सांके

तिक नाम जाणवुं. तथा बीजो थापना निक्षेप पण बे प्रकारें, तेमां एक सहज स्थापना अने बीजी आरोप स्थापना. हवे त्रीजो द्रव्य निक्षेपो बे प्रकारें. तेमां एक आगमथी द्रव्यनिक्षेपो ते यथार्थ ज्ञान, उपयोग रहित. जेम तीर्थंकरना जीव, ते द्रव्य तीर्थंकर कहेवाय छे, ते जाणवो. तथा बीजो नोआगम द्रव्यनिक्षेपो ते ज्ञानीनुं तथा भव्यनुं शरीर तेथकी अलगुं छे, ते जाणवो. चोथो भावनिक्षेपो पण एक आगमथी बीजो नोआगमथी एवा बे प्रकारें छे. तदर्थतद्गुणमय तद्ज्ञानोपयुक्त वस्तु स्वधर्मयुक्त यथार्थ ज्ञानोपयोगसहित भावनिक्षेपः ॥ तत्र निक्षेपा वस्तुनः स्वपर्याय धर्मभेदाः नयास्तु पदार्थज्ञाने ज्ञानांशाः। तत्रानंतधर्मात्मके वस्तुन्येकधर्मोन्नयनं ज्ञानं नयः ॥ अर्थः– तथा निक्षेपा जे छे, ते वस्तुना पर्याय धर्मभेद नय छे, अने नय जे छे, ते वस्तु पदार्थ ज्ञानना अंश छे एटले अनंत धर्ममय एवा जे जीवादि वस्तु पदार्थ, तेना ज्ञाननुं पमाडवुं, तेने नय कहीयें.

रत्नाकरग्रंथें कह्युं छे, के जे श्रुतनो अर्थ प्रथम कीधो तेनो बीजो अंश जे अर्थ करवो तेने औदासीन्य कहीयें. तेनो अभिप्रायांशनयउत्तर तेने वि

शेष नय कहीयें, तथा विशेष नयनो अभिप्रायार्थ, वली तेनो अर्थ, वली अभिप्रायार्थ, एम उपराउपर अभिप्राय तर्कवाद तेने नयाभास कहीयें. ते नयाभास बे प्रकारें. एक व्यास, बीजो समास.

तेमां व्यास जे छे, तेतो अनेक विकल्प कहीयें. अने जिहां अनेक प्रकारें विकल्प वर्त्ते, तिहां देव, गुरु अने धर्म, ए त्रणे तत्त्वनी साची श्रद्धा केम होय? अर्थात् नज होय. जे माटे श्रीआनंदघनजी महाराजें स्वकृत चोवीशीना बीजा श्रीअजितनाथ जीना स्तवनमां कह्युं छे, के " तर्कविचारें रे वादपरंपरा रे, पार न पहोंचे रे कोय ॥ अभिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, ते विरला जग जोय॥ पंथडो निहालुं रे बीजा जिन तणो रे " ॥ ए प्रथम विकल्प भेद कह्यो.

हवे बीजो समास बे प्रकारें छे. एक द्रव्यार्थिक, बीजो पर्यायार्थिक. तेमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय द्रव्यार्थिक छे तथा शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत, ए त्रण नय पर्यायार्थिक छे. विकल्पांतरें तो ऋजुसूत्रने पण पर्यायार्थमां गण्यो छे.

तेमां प्रथम नैगम नयना आरोप, अंश अने संकल्प, ए त्रण प्रकार जाणवा. अने श्रीविशेषावश्यकें

तो उपचारें निन्न ग्रहण चार प्रकारें कह्युं ठे. इहां,
नथी एक गम्य आशय विशेषो जेने तेने नैगम कही
यें. यडुक्तं नयचक्रे ॥ न विद्यते एकगमा आशयविशे
षा यस्य सः नैगमः ॥ तत्र चतुःप्रकार आरोपः ॥ हवे
आरोपना चार प्रकार कहे ठे. इव्यारोप, गुणारोप,
कालारोप अने कारणारोप. ए चारना अर्थ कहे ठे.

तिहां जे गुणने विषे इव्यनो आरोप करे, ते आ
वी रीतें केः—पंचास्तिकायने विषे जे नवा पुराणा वर्त्त
ना लक्षण गुण ठे, ते काल ठे, ते काल पंचास्तिका
यथी जूडुं इव्य ठे, केम के काल अप्रदेशी ठे, अने
प्रदेश विना इव्य न होय. पण इहां काल इव्य उ
च्चारणें बोलवुं, ते गुणने विषे इव्यारोप कहीयें.

तथा इव्यने विषे गुणनो आरोप करे, ते आवी
रीतें,केः— जीवइव्य ठे,ते नरक निगोदादिकने विषे प
रिच्रमण करी रह्युं ठे तथा आठ कर्मना आवरणें क
री आत्माना ज्ञानादि गुण ठे ते अवराया ठे, ढां
क्या ठे, तो पण 'ज्ञानमेवात्मा' एटले आत्मा ज्ञानी
अनंतवीर्य शक्तिनो धणी ठे. ते इव्यने विषे गुणनो
आरोप कर्यो, माटें ए बीजो गुणारोप जाणवो.

तथा वर्त्तमान कालनेविषे अतीत कालनो आरोप

करवो, ते जेम केः—दीवालीनो दिवस आवे थके एवुं बोलीयें जे आज दिवसें श्रीवीर जगवान् मोक्ष गया छे! ते वर्त्तमानने विषे अतीत कालनो आरोप कर्यो. तथा आज दिवसें पद्मनाभ तीर्थंकरनो जन्म अथवा निर्वाण कहेवुं, ते वर्तमानने विषे अनागत कालनो आरोप कर्यो, ए प्रकारें त्रीजो कालारोप जाणवो.

तथा कारणने विषे कार्यनो आरोप एटले स्थापन करवुं, ते कहे छे, बाह्यक्रिया रूप जे धर्म छे ते सर्व धर्म पामवानुं कारण छे, ते कारणने धर्म करी कहेवुं ते कारणने विषे कार्यनो आरोप कर्यो कहेवाय. ए चोथो कारणारोप. ए चार प्रकारें आरोप कह्या.

हवे संकल्प बे प्रकारना कहे छेः—तिहां एक तो पोताना आत्मानो स्वपरिणाम रूप संकल्प अने बीजो कार्यांतर संकल्प ते स्वकार्य विना परकार्य रूप संकल्प जाणवो. एम त्रीजो नैगमनयनो जेद अंश छे ते पण एक स्वअंश अने बीजो पर अंश ए बे प्रकारें छे. ए रीतें आरोप, संकल्प अने अंश, ए त्रण प्रकारें नैगम नय कह्यो. एम जिन्नाजिन्न नैगम नयना सो जेद थाय ॥ इति नैगमनयः ॥

हवे संग्रह नयनुं स्वरूप कहे छेः—" सामान्यव

स्तुसत्तासंग्राहकःसंग्रहः” जे सामान्यें वस्तु सत्तानुं ग्रहण करे,ते संग्रह नय छे, तेबे प्रकारें छे. एक सामान्य संग्रह,बीजो विशेष संग्रह; तिहां सामान्य संग्रहना बे नेद छे, एक मूलनेद, बीजो उत्तरनेद; तेमां मूल नेद ते तो अस्तित्वादि नेदें छ प्रकारें छे, ते प्रथम लखाइ गया छे, माटे फरी नथी लखता अने बीजो उत्तर नेद, ते जाति समुदाय नेद रूप तेमां जाति ते 'गवि गोत्वं, घटे घटत्वं, वनस्पतौ वनस्पतित्वं' तिहां गवि जे गायनी जाति ते एकनुं ग्रहण करवाथी सर्वेनुं ग्रहण थाय, तेमज एक घटनुं तथा एकज वनस्पति जातिनुं ग्रहण करवाथी सर्वेनुं ग्रहण थाय छे, अने समुदाय ते सहकार जे आंबानो समुदाय ते आम्रवनं तथा मनुष्यनो समुदाय ते मनुष्य वृंद कहीयें. इत्यादि समुदायरूप जाणवो.

तथा उघें एटले समुच्चयें जे द्रव्य एवुं नाम ग्रहण तेमां तो कांइ जीव तथा अजीवनो विवेचन नेद न पड्यो,ते सामान्य संग्रह कहीयें. अने एकज जीव द्रव्य एवुं नाम लेवाथी बीजा अजीव द्रव्य सर्व टल्यां मात्र एकनुंज ग्रहण थयुं. ते विशेष संग्रह जाणवो.

अथवा विशेषावश्यकें कह्युं छे, जे सामान्यरूप

द्रव्यनुं ग्रहण करवाथी सर्व वस्तु सत्तामात्रनुं ग्रहण थाय. ते उपर दृष्टांत कहे छे. जेम कोइक राजादि पुरुष, पोताना सेवकने कहे के दातण लाव ? तेवारें ते दास, पाणी रुमाल प्रमुख सर्व दातणनी सामग्री साथें लइ आवे, एम एकमां सर्वनो संग्रह थयो, माटे संग्रह नय सत्ताग्राही कह्यो ॥ इति संग्रहनयः ॥

हवे व्यवहार नय कहे छेः—संग्रहनयें ग्रहण करी जे वस्तु ते वस्तुने भेदांतरें विभंजन करवुं, एटले विवेचन करवुं, वहेंचण करी नाखवी. तथा तेने विषे प्रवर्त्तवुं, तेने व्यवहारनय कहीयें. ते व्यवहार बे प्रकारें छे. एक शुद्ध व्यवहार, बीजो अशुद्ध व्यवहार.

हवें वली शुद्ध व्यवहार बे प्रकारें छेः—एक तो यथार्थ जेम छे, तेमज वस्तुगत व्यवहार जे धर्मास्तिकायादि द्रव्य चलन सहाकारादि स्वभाव तथा जीवस्वभाव लोकालोकादि ज्ञानरूप संपूर्ण परमात्म भाव साधनरूप ते प्रथम भेद जाणवो. अने अरिहंतादिकना जे साधक अवस्था रूप गुण तथा नीचला अशुद्ध गुणस्थाकनुं छांमवुं, अने उपला शुद्ध गुण स्थानकनुं ग्रहण करवुं, एवुं जे गुणश्रेण्यारोहणादि साधनरूप, ते शुद्ध व्यवहार, ए बीजो भेद जाणवो.

हवे अशुद्धव्यवहारना बे नेद कहे ठेः—तेमां एक मतिज्ञानादिक अशुद्धगुणने आत्मा कही बोलावीयें, ते सद्भूत व्यवहार नय कहीयें. तथा बीजो क्रोधी, मानी, मायी, लोनी, एम आत्माने कषायी कहीयें तथा हुं मनुष्य ठौं, संसारी ठौं, देव ठौं, इत्यादि कहे वुं, ते सर्व असद्भूत व्यवहार नयनी अपेक्षा जाणवी.

असद्भूत व्यवहारना वली बे नेद ठे. एक संश्ले षित अशुद्ध व्यवहार, बीजो असंश्लेषित अशुद्ध व्यवहार. तिहां आ शरीर मह्वारुं ठे, हुं डुःखी ठौं,सु खी ठौं, इत्यादि बहिरात्मा थको जड स्वनाव पुजल नावने आत्मा करी माने, ते संश्लेषित अशुद्ध व्यव हार कहीयें. तथा पुत्र कलत्रादि सर्व मह्वारां सखाइ ठे, हुं तेमनो ठौं, ते असंश्लेषित अशुद्ध व्यवहार कहीयें. ते उपचरित अने अनुपचरित एवा बे नेदें ठे. तिहां घर, हाट, क्षेत्र, गाय, नेंष, अश्वादि परिग्रह ए सर्व मह्वारुं ठे, ए व्यवहार, संसारवृद्धिनुं कारण वर्जवा योग्य ठे. ते उपचरितानुपचरित कहीयें.

तथा स्वगुण प्रवृत्तिरूप व्यवहार वस्तुत्वें वर्त्तवा योग्य तेना बे प्रकार ठे. एक विनंजन अने बीजी प्रवृत्ति. ते प्रवृत्ति व्यवहार, वली त्रण प्रकारें ठे.

एक वस्तुप्रवृत्ति, बीजी साधन प्रवृत्ति अने त्रीजी लौकिक प्रवृत्ति, तेमां वली साधन प्रवृत्ति त्रण प्रकारें छे. एक लोकोत्तर, बीजी लौकिक अने त्रीजी कुप्राव चनिक. इत्यादि व्यवहारनयनुं विस्तारें स्वरूप, श्रीविशेषावश्यकथी जाणवुं॥ इति व्यवहार नय स्वरूपम् ॥

हवे चोथो रुजुसूत्र नय कहे छे. रुजु अवक्रं सूत्रमस्यासौ रुजुसूत्रः ॥ रुजु एटले सरल छे सूत्र जेनुं पण वक्र नथी, तेने रुजुसूत्र कहीयें. एनुं वर्तवुं, ते वर्त्तमान काल एक समयनुंज छे. पण अतीत तथा अनागत कालनी अपेक्षा एमां नथी. एना बे नेद छे. एक सूक्ष्म परिणामग्राही ते सूक्ष्म रुजुसूत्र अने बीजो बाह्य महोटा परिणामग्राही ते स्थूल रुजुसूत्र जाणवुं. जेमाटें ए नय, परिणामग्राही छे, जेम कोइ पुरुष, मुनिवेषधारी छे, परंतु तेना परिणाम विषय कषायमां वर्त्ते छे, तो ते वखत ए नयनी अपेक्षायें तेने गृहस्थ कहि बोलावे, अने कोइ गृहस्थने वेषें छतां पण जो तेना परिणाम मुनिराज जेवा वर्त्तता होय, तो तेने साधु कही बोलावे ॥ यतः ॥ रुजुसूत्रं वर्त्तमान ग्राहकं तद्वर्त्तमानं नामादि चतुःप्रकारं ग्राह्यं ॥ इति रुजुसूत्रनयः ॥ ४ ॥

हवे पांचमो शब्दनय कहे छेः—शप् आक्रोशे। शप नमाह्वानमिति शब्दः जे ऋजुसूत्र नय वर्त्तमान वस्तु ग्राहक ते वर्त्तमान वस्तुने नामादि चार प्रकारना निक्षेप सहित ग्रहण करे, ते शब्द नय तथा आक्रोश एटले उच्चस्वरें आह्वान एटले बोलाववुं, ते शब्द नय वाचक अर्थ छे. जे माटे ए शब्द नयथी सर्व व्याकरण शास्त्र, शब्द, वचन, लिंग, विभक्ति प्रगट थइ छे. तथा स्वपर सत्तानुं जे विवेचन एटले वेंचवुं प्रगट पणे शब्द गोचर नाम लइ बोलाववुं, तथा ऋजुसूत्र परिणामग्राही छे, ते ऋजुसूत्रथी वली विशेष वस्तु पदार्थनुं जाणवुं, ते शब्द नय छे. अने ऋजुसूत्र सामान्य परिणामग्राही छे, ते तो सम्यक्त्व विना मिथ्यात्वीने पण होय ॥ इति शब्द नयः ॥ ५ ॥

हवे छठो समभिरूढ नय कहे छेः—यां यां संज्ञां घटादिलक्षणां भाषते वदति तां तामेव यस्मात् संज्ञांतरार्थविमुखः समभिरूढो नयः ॥ तथा ए समभिरूढ नय नाना प्रकारनुं भासन करे, अने एक पर्याय मात्रनी अपेक्षा जाणवाथी सर्व पर्यायने जाणे, देखे, यथार्थ वस्तु पदार्थ घट पटादि रूप तेने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी प्रगट गोचर बोलवुं, तथा

ज्यां सुधी वस्तुमां एक पर्यायनुं न्यून पणुं होय, त्यां सुधी ते वस्तुने पूर्णता न कहे, जेम शब्दनय, घट पटादि रूपनुं विवेचन शब्द वडे नासन करे, परंतु तेनां द्रव्य, क्षेत्र, काल अने नावने न जाणे, अने ए समनिरूढ नय द्रव्यादि चारे नेदें वस्तुने पूर्ण पणे जाणे. ए नय संपूर्ण केवल ज्ञाननी प्राप्तिरूप छे ॥

हवे सातमो एवंनूत नय कहे छेः—जे रीतें समनिरूढ नय कह्यो, ते रीतें ए नय पण सर्व पदार्थने जाणे, देखे, परंतु एटलुं विशेष जे "अयं हि योषिन्मस्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तं घटमानमेव चेष्टमानमेव घटं मन्यते ॥ नतु गृहकोणादि व्यवस्थितं विशेषतः इत्यादि" एटले संपूर्ण जलें नस्यो स्त्रीने मस्तकें चडेलो एवो चेष्टावालो घट देखे, तेनेज घट कही बोलावे, परंतु जल नस्या विना खालो होय तथा घरने खूणे नीचें जमीन उपर पडेलो होय, तेने घट करी माने नही, जेम केवली नगवान् तेरमे गुणठाणे विचरे छे, तेने पण संसारीज कहे परंतु जे सिद्ध क्षेत्रमां जइ बिराजमान थाय, तेनेज सिद्ध कहे. बीजाने न कहे. इत्यादि एवंनूत नय जाणवो ॥ इति ॥ ७॥

ए रीतें अंशग्राही अनेक आशयमां वर्त्ते, ते नैग

मनय, २ सत्तानुं ग्रहण करे, ते संग्रह.नय, ३ गुण प्रवृत्ति लोकप्रवृत्ति ग्राह्य ते व्यवहार नय, ४ कारण परिणामग्राही ते ऋजुसूत्र नय, ५ व्यक्त जे नासन कार्यग्राही ते शब्दनय, ६ पर्यायांतर भिन्नकार्यग्राही ते समभिरूढ नय, ७ ते समभिरूढ नययुक्त संपूर्ण मुख्य कार्यग्राही, ते एवंभूत नय जाणवो.

इत्यादि अनेक रूप नयवाद छे " जावंतिया वय णप्पहा,तावंतिया चेव हुंति नयवाया ॥" ए वचनथी जे जे वचनना पद प्रकाश ते ते सर्व नयगर्भित वचन जाणवा. ए नयाधिकार, विस्तारथी तो श्रीअनु योगद्वार, तत्त्वार्थवृत्ति, विशेषावश्यक, स्याद्वादवादर त्नाकरादिक ग्रंथोथी जाणवो ॥ इति नयाधिकारः ॥

हवे " सकल नयग्राहकं प्रमाणं " ए वचनथी सर्व नयनुं ग्रहण करवुं, ते प्रमाणथी थाय छे. तथा आत्मा पण प्रत्यक्षादि प्रमाणोथी सिद्ध थाय छे. जेम साक्षात् चैतन्य स्वरूप, परिणामी, कर्त्ता, भो क्ता, स्वदेह परिमाण, प्रतिक्षेत्र भिन्नभिन्न, तथा पांच कारण सामग्री मळ्या सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र ना साधनथी सिद्धताने पामे, एवो आत्मा, स्वपर ना व्यवसाय एटले व्यापारनुं ज्ञान एटले जे जाणवुं.

इत्यादि सर्व वातो प्रमाणथी सिद्ध थाय. ते प्रमाण बे प्रकारनां छे. एक प्रत्यक्ष अने बीजुं परोक्ष.

तेमां लोकालोकनुं स्वरूप यथार्थ पणे प्रत्यक्ष जाणवुं, देखवुं, ते तो केवलज्ञान अने केवल दर्शन थी थाय. अने आत्मोपयोगथी इंद्रिय द्वारायें जे जा णवुं, देखवुं थाय, तथा अवधिज्ञान अने मनःपर्य वज्ञानथी जाणवुं देखवुं थाय, ते देशथकी थाय, परंतु सर्वथकी प्रत्यक्ष जाणवुं तो केवलज्ञानथीज थाय.

तथा श्रुतज्ञान ते परोक्षज्ञान छे, ते चार प्रकारें छे. एक अनुमान प्रमाण, बीजुं उपमा प्रमाण, त्री जुं आगम प्रमाण, चोथुं अर्थापत्ति प्रमाण, एवं चार परोक्ष प्रमाण जाणवां.

तेमां प्रथम अनुमान प्रमाण, ते जेवुं लिंग एट ले वेष देखे, तेवुं प्रमाण करे, जेम छ दर्शनना साधु तथा गृहस्थ सर्वनो वेष जोइने अनुमान करे, जे आ अमुक दर्शननो छे, यत्र धूमस्तत्राग्निः अथवा यथा महा नसं॥ अर्थः—पर्वत उपर दावानल लागवाथी आकाशें धूम चाले ते धूम देखीने अग्निनुं अनुमान थाय. अथ वा घरमांथी धूम नीकलतो जोइने रसोडानुं अनुमान थाय. ए न्याय जाणवो. एमज शरीरना पांच अवयव दे

खवाथी अनुमान थाय ते सर्व अनुमानप्रमाण जाणवुं.

हवे बीजुं उपमान प्रमाण कहे छेः—सदृश एटले समान वस्तु देखवाथी पूर्वे अनुभवेली दीठेलीवस्तुनुं ज्ञान थाय "यथागौस्तथा गवयः" ए वचनथी जेवी गाय तेवुंज गवय एटले रोझ होय, तेथी गायनुं ज्ञान थाय एम स्त्री पुरुषादि जे तुल्यरूप देखवाथी पूर्वे वस्तुनुं जाणपणुं थाय, ते उपमान प्रमाण जाणवुं.

हवे त्रीजुं आगम प्रमाण कहे छेः—यथार्थोपदेष्टा पुरुष आप्तः सहि उत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञ एव. आप्तोक्तं वाक्यं आगमः॥ इति वचनात्॥ यथार्थ ते जेम छे तेमज उपदेशनो करनार एवो जे पुरुष ते आप्त कहीयें. सर्वथी उत्कृष्ट अने रागद्वेष रहित श्रीवीतराग सर्वज्ञ लोकालोक स्वरूपना ज्ञायक तेणें पोतें कहेलां वचन, तेने आगम कहियें, ते आगम वचन कहेवां छे? तो के पूर्वापर विरोध, मिथ्यात्व, असंयम, कषाय भ्रांति तेणें करी रहित, स्याद्वादोपेत जे वचन, ते आगम प्रमाण जाणवुं.

हवे चोथुं अर्थापत्ति प्रमाण कहे छेः— 'लिंग ग्रहणात् ज्ञेयज्ञानोपकारकं अर्थापत्ति प्रमाणं यथा पीनो देवदत्तोऽदिवा न भुंक्ते अर्थाद्रात्रौ भुंक्ते एव॥' इत्यादि

प्रमाणं इति वचनात् ॥ लिंग ग्रहण ते जेवुं लिंग ते वुंज ज्ञान थाय माटे ज्ञेय ते ज्ञाननुं उपकारी. जेम देवदत्त शरीरें पुष्ट छे, ते दिवसें नथी जमतो, रात्रें जमे छे. इत्यादि अर्थापत्ति प्रमाण जाणवुं.

इत्यादि नय, निक्षेप, प्रमाण, कारण, हेय, ज्ञेय, उपादेय, जीवाजीवस्वरूप, तत्त्वार्थश्रद्धा, सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र, ए रत्नत्रय रूप मोक्षमार्गे सा धन, साध्यसिद्धि, ए प्रकर्ष आत्मलाभ तथा ज्ञान दर्शन लक्षण आत्माने विषे प्रगटे, तेमां छद्मस्थने तो प्रथम दर्शन उपयोग होय अने पछी ज्ञान उप योग होय तथा केवलीने प्रथम ज्ञान उपयोग अने पछी दर्शन उपयोग होय. माटे जे घातिकर्मक्षय क री केवलज्ञान पामी, पछी योग निरोध करी अयोगी भाव पामी, अघातिकर्म क्षय करी सादि अनंत सु खमय पूर्णात्म शक्ति प्रगटावे, ते जीवने धन्य छे, सर्व भव्य जीवोने ए कार्य श्रेयस्कर छे ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह ग्रंथ अधिकारकों, पामे न सुर नर पार ॥
अल्पमतें रचना करी, गुणिजन लियो सुधार ॥ १ ॥
संवत् उगणी चुमालीशें, ज्येष्ठ शुक्ल तिथि बीज ॥

आदि जिणंद पसायथी, आतम पाम्यो रीज ॥ २ ॥ नरुअच्च बंदर नाग्यथी, मुनि सुव्रत जिनराज ॥ नेटे नव नावठ गइ, संघ सकल सुख साज ॥ ३ ॥ वेज लपुरमां वासता, श्रावकधर्मे धीर ॥ दान मान गुणें करी, जिम गंगाजल नीर ॥ ४ ॥ सौनाग्य विजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ एह ग्रंथ रचना करी, मयाविजय सुख थाय ॥ ५ ॥

इति श्रीमत् पंमित प्रवरगणि श्रीसौनाग्यविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनि श्रीमयाविजयजी विरचितश्रीषड्द्रव्य नय प्रकाश बालावबोध रूप श्चतुर्थो नागः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम नाग प्रारंनः ॥

ए पांचमा नागमां निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रिया नय संवाद, प्रश्नोत्तर रूपें प्रदर्शित करेला छे.

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ सुख करनकुं, नव्यजीव हितकार ॥ निश्चय अरु व्यवहार दो, कहे सिद्धांतें सार ॥ १ ॥ निश्चे आत्म स्वनाव जे, पुजल बाह्य व्यवहार ॥ करता विण किरिया नही, क्रिया विण नहिं किरतार ॥

२ ॥ जीव पुद्गल दो शक्तियें, कहे षड्द्रव्य विचार ॥
पुद्गल विण जीव अक्रियी, सिद्ध क्षेत्रमां धार ॥ ३ ॥

॥अथ क्रियावादिवाक्यं॥जो ज्ञातं नवतां पांमित्यम होपांमित्यं यतोनवंतः कवयः श्रूयंते श्रीमतां तर्कवाद करणाशयोऽ स्माभिःसह वर्त्तते? ॥ जाषाः– हे जाण पुरुषो तमें पंमितोने विषे महापंमित ग्रो.वली अमें त मने कवीश्वर सांजलीयें ग्रैयें तेम सारो तर्कवाद अमा री सार्थे करवाने तमारो आशय वर्त्ते ले? तो घणुं सारुं! कारण के लोकमां पुण्यपाप रूप बंधस्थिति क्षय करीने जन्म मरणादि जय रहित एवुं अजरामर अवि नाशि जे मोक्षपद,तेने पोंचाय ले,माटे अमो प्रश्न करी यें ग्रैयें. अथ क्रियावादि प्रश्नः॥ विवेकज्ञानेन ज्ञानक्रिय योद्व्योर्मध्येवा केवलक्रिययोःकरणं निरंतरं परमानंद कारणं? यत् समीचनं तद्ग्राह्यं?गृहीतपक्षैःसह तर्कवा दःप्रवर्त्तते,ततस्तूर्णं पक्षग्रहणं कार्य्यं॥जाषाः–॥विवेक युक्त ज्ञान तेणें करी अथवा ज्ञान अने क्रिया बेहुने म लवे करी अथवा केवल एक क्रिया करवाथीज किंवा अकरण एटले कांइ पण नहि करवाथी निरंतर सदा पर मानंदमय एवुं जे मोक्ष पद ते पामवा माटे ए पूर्वोक्त क्रियादि पक्ष ले, तेमां जे समीचीन पक्ष होय ते तमें ग्र

हण करो.परंतु जे पक्ष ग्रहण करवाथी. वली बीजो प्रतिपक्ष तर्कवाद न होय, एवो जे पक्ष तमारो ग्रहण करवा योग्य होय, ते तूर्ण एटले जलदी कहो ?

अथ ज्ञानवादेरुत्तरकथनं ॥ नो साधक ! श्रूयतां यद्भवद्भिरुक्तं ज्ञानक्रिययोर्मध्ये यत्समीचीनं तद्ग्राह्यं. तदवगतं श्रीमतां वचोस्माभिः ॥ जगति जनसंदानिभतं सकललोकव्यवस्थिताशेषभावाविःकरणदक्षं प्रकटितं नभसि तरुणरविकिरणमंमलनितांतं संसारजलधिप्राप्तजंतूद्धरणक्षमं निंदितसंसारेतरनरप्रकरालंबनभूतं ज्ञानमस्मदादीनामंगीकर्त्तुं योग्यं तदेवांगीकृतं ॥

नाषाः–हे साधक ! सांभलो. जो तमें कह्यो छो के ज्ञान तथा क्रियामां जे सारो पक्ष होय ते ग्रहण करो, ए तमारुं वचन अमोयें जाण्युं, तो अमो कहीयें ते सांभलो.के ज्ञान जे छे,ते सर्वे जगतना जीवोने निरंतर सुख करनारुं छे तथा समस्त लोक संबंधी विशेष भावनुं जाणवुं विशेषभावनुं म्हाहापण ते पण ज्ञान विना नज होय. जेम आकाशमां तरुण सूर्यना किरणथी अंधकारनो नाश थाय तेम ज्ञानोदय थयाथी मिथ्यात्वादि अज्ञान रूप अंधकारनो नाश थाय, तथा संसार समुद्र

मां पडेला जीवोने उद्धार करवा आधारभूत, वळी सं
सारथकी विरक्त थयेला प्राणीयोने आलंबन भूत एवुं
जे ज्ञान, तेज अमारे अंगीकार करवा योग्य छे, माटे
अमें तेज अंगीकार करेलुं छे.

अथ क्रियावादेरुत्तरकथनंप्रश्नः ॥ अस्मद्वचांसि दत्ता
वधानाः संतः शृणुत यूयं। यद्भवद्भिर्ज्ञानमंगीकृतं तदव
सितमस्माभिःपरं स्वकर्मक्षयोपशमप्रकटितनिपुणधिया
विमृश्य वक्तव्यम् ॥ अत्रानाद्यपर्यवसिते सदैव विद्य
मानेऽस्मिन् जगति कृतनिवासानां जंतूनां कदाचित्सं
भवं ज्ञानं न सदा सर्वदा सहचारी तेनांगीकृतेन युष्म
दादीनां कथमर्थसिद्धिर्भविष्यति क्रियास्मिन् त्रिविष्टपे
जीवानामनादिरेवावतिष्ठते । ततः क्रियैव श्रेष्ठा । कथं
ज्ञानं श्रेष्ठम् ? ॥

भाषाः—हे संत ! अमारुं वचन पण किंचित् सां
भळो, मनमां धारो, विचारो जे माटे तमें तो एकांतें
एक ज्ञान पक्षज अंगीकार कर्यो, तेतो अवश्य अ
मारे पण अंगीकार करवा योग्य छे परंतु आंही क्ष
योपशमथी प्रकट थयेली बुद्धिथी विचार करीने क
हेवा योग्य छे. कारण के आदि अने अंत तेणें रहि
त सदा काळ विद्यमान एवा जगतने विषे रहेला

जीव, सम्यग्ज्ञान पाम्या विना संसारमां परिभ्रमण करे छे, ते कदाचित् कोइ कालें निमित्त पामी क्षयो पशमादि ज्ञान पामे, पण ते क्षयोपशम ज्ञान तो अ संख्यात वार आवीने पाछुं जाय छे, पण निरंतर सहचारी नथी एटले साथें चालतुं नथी, माटे जेम सूर्य वादले ढांक्यो थको तेज रहित थाय, तेमज आत्मा ज्ञानावरणादि कर्में आच्छादित थाय. तेवारें आत्मा अज्ञान दशा प्रत्यें पामे, तो हवे ए आत्मा केवी रीतें सिद्धताने पामे? माटे विचार पूर्वक उपयोग देइ बोलो. केम के अमारे तो जे क्रिया छे, ते आत्मानी साथें निरंतर महोटा आलंबन रूप छे, ते क्रिया विना कार्यनी सिद्धि केम पामी शकाय? जेम पोता नी पासें आहारनुं भाजन पडेलुं होय, पण हाथे उ पाडी मुखमां जो कवलनो प्रक्षेप करीयें तो जक्षुख मटे; तेमज ग्रंथ पण भणते भणते भणाय छे, तथा एक तंतु जोड्या पछी बीजो जोडवो, एवा क्रमें करी वस्त्र पण बने छे, तथा रत्न हीरादिकनां पात्र होय ते प ण शोधन मंजनादिक विना मूल रूपने प्रकाश कर तां नथी, ते माटे क्रिया तेज श्रेष्ठ छे, वली क्रियादिकें

करी स्वर्गने विषे जीवोने सेवादिक प्राप्त थाय छे,वास्ते केम ज्ञानने श्रेष्ठ कहीयें? नज कहीयें.

अथ ज्ञानवादेरुत्तरकथनंः— जो क्रियांगीकरणबुद्धे! तवेदृशं चातुर्यमस्ति ज्ञानेन समं किमपि वस्तु वर्ण्यते सद्भिः। यतोज्ञानं कुमत्यंधकारस्फोटकं जगल्लोचनं विश्वोद्योतकारकं सूर्यातिशायी। येन प्राप्तेनावश्यमपार्द्धपुजलांतरमनवधिसुखोत्पादकमनुपमं परमैश्वर्यगुणोपेतेन सकल सत्त्वसुखकारकेण परमपुरुषेण सुरासुरनृपादिवंदितचरणयुगलेनार्हता प्रोक्तं महत्पदं लभ्यते. येन ज्ञानेन। तेन समा क्रिया कदापि न स्यात्॥

नाषाः—हे क्रियांगीकरणबुद्धे! एटले क्रिया अंगीकार करवामां चतुर बुद्धिमान्! तमारुं आ क्रियांगीकरणरूप चातुर्य, जे माहापण ते सर्व अमें जाण्युं,पण ज्ञान समान श्रेष्ठ बीजी कोइ वस्तु वर्णन करवा योग्य सारा पुरुषोने छे? अर्थात् कोइज नथी. जेमाटे कुमतिरूप अंधकारने फिटाडवाने एक ज्ञानज सामर्थ्यवान छे. वली जगतनुं स्वरूप जाणवा जगतने विषे उद्योतकारक सूर्यथकी पण अधिक उद्योतकारक छे अने जे सम्यक्ज्ञान पामवाथी शेष अर्द्ध पुजल परावर्त्त मात्र

संसारभ्रमण रहे अनें अनंत सुखनुं कर्त्ता, उपमा र हित, एवुं वली जे श्रीतीर्थंकरना गुणें सुशोजित सकल जव्यजीवोने हितकारी, सर्व सुरासुरचक्रव र्त्यादिकने वांदवा पूजवा योग्य एवा जे अरिहंत जग वान, तेणे कहेलुं एवुं अरिहंत पदनुं पामवुं, ते ए नाथीज थाय माटे ए ज्ञान समान ते क्रिया को ६ कालें नज होय.

अथ क्रियावादेरुत्तरकथनं ॥ जो लब्धवर्ण! त्वया केन हेतुना क्रियापक्षं निर्धूय केवल ज्ञानस्यैव पक्षों गीक्रियते? किं त्वया विशिष्ट गुणोपेतायाः क्रियायाः सामर्थ्यं नाजिज्ञायते? यस्याःप्रजावेनालब्धसम्यक्त्कोपि जीवः स्पर्शनरसनघ्राण चक्षुश्रोत्राहीन् मनोवाक्काया ह्लादनकारकान् अविहितपुण्यप्रकारमनुजकुलजान् वि हितसदाचारमानुषसुलजान् गोत्रान् जुंक्ते एवंविधगु णोपेता क्रिया ततस्तस्या अग्रे ज्ञानस्य किमाधिक्यं? ॥

जाषाः— हे पंमित! तमें बे अक्षर जाणीने शा हे तुथी क्रिया पक्षनो निषेध करो गे? केवल एक ज्ञान पक्षज अंगीकार करो गे. केम के तमें विशेष गुणें शो जित जे क्रियासामर्थ्य तेने नथी जाणता, के जेना प्र जावथी घणा जीवो प्रथम सम्यक्त्व पामे तथा वली

एकेंद्रियथी मांमीने यावत् पंचेंद्रिय पणुं पामवुं ते पामवा माटे एक सकाम अने बीजी अकाम ए बे प्रकारनी निर्ज्जरा करे ते जीव अनंत पुण्यनो राशि मेलवी यावत् तीर्थंकर गोत्र उपार्ज्जन करी मोक्ष पद प्रत्यें पामे. तथा वली जे प्राणी विधि सहित क्रिया आराधन करे, ते जीव, देवगति तथा मनुष्य गति प्रत्यें पामे अने अविधियें क्रिया करतो थको नरक अने तिर्यंच गति पण पामे, एवी रीतें अनेक गुणें गोभित जे क्रिया तेनी पासें ज्ञान शुं अधिक छे ?

॥ ज्ञानवादेरुत्तरकथनं:—भोः ! कवे शृणु मदीयं वचः परमानंददायकं दक्षनरप्रकारोचितं सद्यः समाहितशातकारकं दिव्यप्रभावयुक्तं ज्ञानमस्ति तस्य गुणान् किं त्वं जनासि ! झटिति वांछासिद्धिप्रदायकस्य विशिष्टज्ञानप्रदायकस्य विशिष्टज्ञानस्याग्रे का वराकी क्रिया! सादिसपर्यनसितसुखदायिनी यथा प्रकटितभास्करबलं खद्योतवराकस्य ततः समालोचनेन नहि किमपि ज्ञानेन तुल्यं परोपकारवस्तु विद्यते ॥

भाषाः—हे कवि ! तमें अमारुं वचन सांभलो. जे परमानंद दायक तो एक ज्ञान विना बीजो कोइ पदार्थ नथी, माटे विचक्षण पुरुषोने अंगीकार कर

वाने उचित, सत्ता समाधिनुं करनार, दिव्य प्रजाव युक्त वांबित अर्थ जे सिद्धिपद तेनुं देवावालुं एवुं सर्वोत्तम जे ज्ञान बे, तेमना गुणने तमें शुं जाणो? ऊट मनोवांबा सिद्धिनें आपनारुं एवुं जे ज्ञान, तेनी आगल बापडी क्रिया ते शी गणतीमां बे! क्रिया तो आदि अंत सुखनी आपवा वाली बे. एटले जेटलुं पुण्य बांध्युं होय, तेटलुं जोगवीने फरी पाबो ते जीव, जवचक्रमां फेरा फरे, माटे ज्ञानरूप सूर्य प्रकाश थाय, ते आगल क्रियारूप आगियो जीवडो बापडो शुं प्रकाश करे? माटें ज्ञान समान कोइ वस्तु परोपकारी नथी. ते सारी रीतें विचार करो.

॥ क्रियावादेरुत्तरकथनं मोविचक्षण! शृणु क्रियाविशिष्टंसामर्थ्यम्। अस्मिन्ननादिसंसारे स्थितानामलब्धसम्यक्त्वरत्नानामजव्यानां क्रियासामर्थ्येन जवनपतिव्यंतरज्योतिष्कसुरेषूत्पत्तिः स्यात्। कदाचित्सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकलांतक महाशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पेषु विशिष्टगीर्वाणसुखाप्तिः स्यात्। कदाचित्ततोप्यूर्ध्वेजइसुजइसुजातसोमनसप्रियदर्शन सुदर्शनामोघसुप्रबद्धयशोधरेषु अहमिंइत्वं परंपरमं सौख्यं न जवति ईदृक्क्रियासामर्थ्यमस्त्यवगतम्॥

ज्ञाषाः—हे विचक्षण! तमें क्रियानुं सामर्थ्य तो सांज्ञलो के आ संसारमां अनादिकालथी ज्ञटकता एवा अज्ञव्य जीव ते समकेत रत्न पाम्या विना मात्र क्रियाना बलथीज ज्ञवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्मादि बार देवलोकमां जइ देवतानां सुख ज्ञोगवे छे, कदाचित् नवग्रैवेयकमां जइ उपजे छे इत्यादि शुज्ञफलनी आपनारी क्रियाज छे,ते विचारी जूउ.

॥ज्ञानवादेरुत्तरकथनं ज्ञो वाचंयम! त्वया क्रियाधिक सामर्थ्यकथनेन ज्ञानगुणोल्लंघनं क्रियते तदयुक्तं दृश्यते यतोऽस्मिन् मनुष्यलोके क्रियाकारका बहवो विद्यंते। शाक्यादयस्तेषां मध्ये केचित्पंचाग्निसाधकाः संति। केचित्पत्रपुष्पफलाहारेण सदैव तिष्ठंति। तथा केचिद्वै वालज्ञक्षिणः श्रूयंते। केचिदंबुज्ञक्षिणः श्रूयंते। केचिज्जलाशये पतितास्तिष्ठंति। केचिदूर्ध्वपादाधोवक्रास्तिष्ठंति। केचिद्दिगंबरास्तिष्ठंति। एवं विनापि ज्ञानेन तीर्थंकरत्वं ज्ञविष्यति तर्हि ज्ञानस्य माहात्म्यं प्रज्ञूतं ज्ञायते न क्रियायाः ततो ज्ञानपक्ष एवांगीकार्यः॥

ज्ञाषाः—हे वाचाल! ए तमें क्रियाने अधिक सामर्थ्यवाली कहीने ज्ञान गुणनुं उल्लंघन करो छो, ते अयुक्त देखाय छे, केम के अमें तो आ मनुष्य लोक

ने विषे क्रियाना करनार घणा शाक्यादि विद्यमान छे. तेमां केटलाएक पंचाग्नि तापे छे, केटलाएक पत्र, पुष्प, फलाहार करे छे, केटलाएक तो मात्र सेवाल नुंज नक्षण करे छे, केटलाएक मात्र जलपानज करे छे, पण अन्न खाता नथी, केटलाएक सर्वदा जल मांहेज पड्या रहे छे, केटलाएक पग उंचा करी मस्तक नीचुं राखे छे, केटलाएक सदा एकज स्थानकें उना रहे छे, केटलाएक हाथ उंचो राखी तप करे छे, कोइक दिगंबर एटले मात्र दिशाउनांज वस्त्र धारण करता अर्थात् नग्न थका रहे छे, केटलाएक लोचादिक बाह्य कष्ट क्रिया करे छे, इत्यादि क्रिया करतां पण ज्ञान विना तेमने तीर्थंकर पद मलतुं नथी, माटे ज्ञाननुं माहात्म्य महोटुं छे,पण क्रियानुं माहात्म्य नथी. तेथी तमें ज्ञानपक्ष अंगीकार करो.

एम ज्ञानपक्षी क्रियापक्षी बेहुनो मांहोमांहे विवाद थतो देखीने त्रीजो स्याद्वादपक्षी पुरुष, सर्वांग पणे निश्चय व्यवहार कथन करवा लाग्यो ॥

अथस्याद्वादि पक्षः॥नो ज्ञानपक्षग्राहिन्!न केवलेनैकज्ञानेन पूर्ण स्वर्गापवर्ग सुखसाधनं नवेत् द्वाभ्यामेकत्र वर्त्तमानाभ्यां वांछितार्थसिद्धिः संजायते ॥ यथा रूष

नादि तीर्थंकराणां नरतादिचक्रवर्त्तिनां पुंमरीक गौत मादिगणधराणां तथाऽन्येषामपि साधूनां पूर्वोक्तका ले निरंतरसुखावाप्तिर्बनूव ॥ इदानीमपि वर्त्तमानमहा विदेहादवांछितार्थसिद्धिर्नवत्यनविष्यत्काले ज्ञान क्रियाच्यां क्रियानंतक्षेत्रज्ञानां मनुजसुरमहानंदसुखंनवि प्यति ततोज्ञानक्रिययोर्यत्नं विधेयं ॥

नाषाः—हे ज्ञानपक्षग्राही ! केवल एक ज्ञानें करीज संपूर्ण स्वर्ग अने मोक्षना सुख साधन न होय, परंतु ज्ञान अने क्रियाएं बेहुना मेलापथीज वांछितार्थ सिद्धि थाय छे. जेमाटे अतीतकालें श्रीऋषनादि चोवीश तीर्थंकरो नरतादि चक्रवर्त्तीयो तथा पुंमरिक, गौतमादि गणधरो अने बीजा पण साधु प्रमुख अनेक जीवो सर्व निरंतर ज्ञान क्रिया युक्त साधन करतां स्वर्गापवर्गादि सुख पाम्या छे अने वर्त्तमान कालें पण माहा विदेहादिक क्षेत्रने विषे वांछित सिद्धि प्रत्यें पामे छे, अने अनागत कालें पण ए बेहुनुं सेवन करी महानंद सुखने निश्चें पामशे. इहां दृष्टांत कहे छे ॥ दोहो ॥ यथा अंधके खंध पर, चढे पंगु नर कोइ ॥ वाके दृग वाके चरन, होइ पंथ मिल दोइ ॥ १ ॥

नावार्थः—जेम कोइक पांगलो पुरुष, ग्रामांतरें जवा

माटे मार्गमां बेठो छे, तेटलामां कोइ आंधलो पुरुष तेज मार्गमां आव्यो, तेने पांगले पूछ्युं जे तमारे कये गाम जवुं छे ? आंधलायें कह्युं के अमुक गाम जवुं छे, पांगलायें कह्युं म्हारे पण एज गाम जवुं छे तें मार्ग तो नजरें देखुं छुं, पण पगमां शक्ति नथी माटें केवी रीतें जवाय ? ते सांजली आंधलो बोल्यो म्हारा पगमां चालवानी शक्ति तो घणीज छे, पण नेत्र नथी माटे रस्तानी सूज पडे नही तेथी केम जवाइ श काय ? ते सांजली पांगलो बोल्यो के हे जाइ ! जो तुं मने तहारी खांध उपर बेसाडे, तो हुं रस्तो बता वीश अने आपणे बेहु जण वंछित गामे पहोंचशुं ! एम ते बेहु मल्या, तेवारें इछित स्थानकें पहोंच्या, तेम इहां पण उपनय कहे छे,के क्रिया जे छे, ते अंधप्राय छे, जेमाटे ज्ञान विना एकली क्रियानी परंपरा देखा देखीयें करवी, ते अंधरूप छे, तेमज क्रिया विना एकलुं ज्ञान जे छे, ते पांगलुं छे, जेमाटे मोक्षमार्ग तथा यथार्थ पदार्थने जाणे छे, देखे छे, पण क्रिया जे चा लवुं ते विना वांछित स्थानकें पहोंचाय नही, जेमाटें तेरमे गुणठाणे केवलीने पण क्रिया सहित वर्त्तवुं छे, माटे हे जव्यो ! जो तमें स्वर्गापवर्ग सुखना इछक

बो, तो ज्ञान अने क्रिया ए बेहुने अंगीकार करो ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय अरु व्यवहार दो, स्यादवाद समचित्त ॥ जाके घटमें नित वसे, सो टाले नवनीत ॥ १ ॥ तेमाटे नवि प्राणि तुं, तजि हठवाद विरोध ॥ ए अवसर डुर्जन मल्यो, करी ले आतम शोध ॥ २ ॥ सोनाग्य विजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविजयने ए सदा, स्यादवाद सुख थाय ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्प्रवरपंमित श्रीसौनाग्यविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनि मयाविजयविरचितो निश्चयव्यवहारनयचर्चारूपः पंचमनागः समाप्तः ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ नाग रूप लघु पिंगल प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्राह्मी लीपीने नमी, श्रीगुरु प्रणमी पाय ॥ अल्पनेद पिंगल कहुं, बंद करन उपाय ॥ १ ॥ पिंगल बिन बंदही रचे, गुरुबिन पढवुं ज्ञान ॥ ज्युं नोजन ही लूण बिन, जेसो मरकट ध्यान ॥ २ ॥ गुरु लघु अक्षर जानियें, मात्र नेद ए बंद ॥ मगणादि गण आदमे, शुनाशुन फलकंद ॥ ३ ॥ संयोगीकी आदि

में, जो लघु अक्षर होय ॥ ताकूंही गुरु जानकें, मा त्रा गणियें दोय ॥४॥ अनुस्वारादि दीर्घ जे,विसर्ग मि श्रित जान ॥ विकल्प लजना व्यंजनें,पदांतें सुप्रमान ५

॥ अथ आठ गणनां नाम ॥ दोहा ॥ मगण नगण कहियें जगण, सगण नगण यगणेय ॥ रगण तगण पिंगल लणे, ए आठे गण लेय ॥ ६ ॥

॥अथ आठ गणरूप मात्रा प्रमाण ॥ दोहा ॥ माता जी कहियें मगण,जगणें लोजन जाण॥जगण जगातनें कीजियें, सगणें समता नाण ॥ ७ ॥ नगर नगण कीजें सदा, यगण यशोदा जोय ॥ रगण रामजी जा णजो, तगण तातार ते होय ॥ ८ ॥ दग्ध वरन ए आठ हे, हजघनधररवल सोइ ॥ रूपदीपपिंगल कहे, आदि न लीजें कोइ ॥ ए ॥ मढप अक्षर मध्य तज, अंत्य ऊटक मत आन ॥ हजघन धररवल आदि तज, पिंगल कहे प्रमान ॥ १० ॥ आठ गण स्वामी ॥ धर ती शशी सूरज पवन, स्वर्ग नीर लण तास ॥ अग्नि व्योम गण अगणके, स्वामी किये प्रकाश ॥ ११ ॥

॥ हवे ते पूर्वोक्तगणनां अनुक्रमें फल ॥ लक्ष्मी कीरति रोग लय, आयु बुद्धि चितधार ॥ करे विनाश गमण करे, फलजो अफल विचार ॥ १२ ॥ मेरु प

ताका मरकटी, आदी भेद अपार ॥ छंद विविध रच ना कहि, कहेत न आवे पार ॥ १३॥

॥ अथ गीया छंद ॥

॥ धुर सोल कीजें एक यतिमें, फेर दो दश भेलीयें ॥ कर अठावीशू मात्र सबमें, चार एसें मेलियें ॥ नहिं लहु गुरूका भेद इनमें, रगण अंतें राखीयें ॥ में कह्यो पूरव कथनसेंती, छंद गीया भांखियें ॥ १४ ॥

॥ अथ मोतिदाम छंद ॥ पदे पद जगण मिलाय, करो दश दो गण अंक बनाये ॥ बतावत पूरव सोलह मात, कहो इय मोतिय दाम सुजात ॥ २ ॥

॥ अथ छंद भुजंगी ॥ पदें चार येगनकों साथ कीजें,भली वीश मात्रा सबे गेर दीजें ॥ एही भेद में पूर्व याका किया हे,भणो राज छंदा भुयंगप्पया हे ॥३॥

॥ अथ त्रिभंगीछंद ॥ धुरतें धर दशकी, दूजी अठकी, फुनि दो खटकी करतीजें ॥ दस करियें तिगुणा, फिर दो धरणां, एसें करनां पदसंगी ॥ पूरव में गायो, लछन पायो, छंद कहायो त्रिभंगी ॥ ४ ॥

॥ अथ कुंमलीया छंद ॥आदें डुहा छंद कर, रोड क आगें देय ॥ चोथे चरण करे जिको, सो दो बेर कहेय ॥ सो दो बेर कहेय, थाय पण. एक न

रीजें ॥ एक तुकमें चोविश, कलागण गणमें लीजें ॥
नांख्यो लब्रन एह, पूर्वके मत संवादें ॥ ए कुंमलीया
नाम, मिले तुक अंत रु आदें ॥ ५ ॥

॥ अथ नाराच बंद ॥ उकीत मीत गीत ईत, वीस
चारहू कला ॥ मिलायकेज कीजीयेंज, अंक सोल
हू नला ॥ एकेक अंक अंतरें, लहू गुरु प्रमान,ए क
ह्योज पूर्व बीचमें, नाराच बंद जानए ॥ ६ ॥

अथार्या बंद ॥

॥ प्रथम पाये दीजें,दश दो मात्रा तथा तृतीयेपि ॥
अठ दश द्वितीय धरिया, चतुर्थ पाये पंच दश सार्या ॥

॥ अथ शशिवदना बंद ॥ चउ लघु कह्यिें,द्विगुरु
लह्यिें, अंक ठ धरीयें, ए विध करियें ॥ ७ ॥

॥ अथ विद्युन्माला बंद ॥

लीजें सर्वे दीर्घावर्णा, वेदें विश्रा कीजें ग्याता ॥
वेदें वाणी एही नाबा, ते जाणीजें विद्युन्माला ॥ ७ ॥

॥ अथेंद्रवज्रा बंद ॥ ह्रस्वं नवमं षट सप्तमं स्यात्,
तृतीयवर्णा धरियें कवी मात ॥ सह्रस्व वर्णा करियें
कवेंद्रा, सइंद्रवज्रा कथितः मुनिद्रा ॥ ए ॥

॥ अथ त्रोटक बंद ॥ कवि कीयें तृतीय रसंत
रती, नवम गुरु जे धर ते विरती ॥ एम कीरत बंद

सज्ज ब्रुवती, एह त्रोटक छंद कहे सुमती ॥ १० ॥

॥ अथ वसंत तिलका छंद ॥

॥ पूर्वं गुरुर्द्वितीय वर्ण तथा चतुर्थं,अष्टौ पुनर्दश मते गुरु अंत दीजें ॥ वर्ण सवे चतुरदश सुपंक्ति लीजें, जाणो वसंत तिलका कवि एम कीजें ॥ ११ ॥

॥ अथ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

॥ आदी जे गुरु अंक धर तृतिये, षष्ठं तथा चाष्टमं, एकादश्श कहे कवी शुजमती, अष्टादशं पण्डितं, मार्त्तण्डे (१२) मुनि (७) करेत विरती, एकुनविंशत्यक्षरं, धार्य धारण धीर्यवंत पुरुषैः शार्दूल विक्रीडितं ॥ १२ ॥ अल्पमती पिंगल कह्यो, अल्पछंद ए ग्रंथ ॥ मयाकरी मुझ उपरें, कियो सुगम गुरुपंथ ॥ २७ ॥ इति॥ श्रीमत्पर पंण्डित श्री सौजाग्य विजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्री प्रतापविजयजी तच्छिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी तच्छिष्य मुनि मयाविजयविरचितो लघु पिंगलनामा षष्ठोजागः समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ दोहो ॥ एह ग्रंथ रसरूप मय, रमण करे नर जेह ॥ स्याद वाद समजे सुखें, बोधिबीज लहे तेह ॥ २८ ॥ इति मुनिमया विजयकृत आत्मप्रबोधस्याद्यग्रंथः संपूर्णः ॥

आ ग्रंथने आगलथी आश्रय आपनार साहेबोनां मुबारक नाम तथा तेमनां गामनां नाम अने तेमणें राखेली प्रतिना अंक वगेरे नीचें लखीयें छैयें.

प्रत.	नाम तथा गाम.	प्रत.	नाम तथा गाम.
	भरुच.	१	शा. रतनचंद भगनलाल.
५	शा. सोमचंद भीखाभाइ.	१	" नेमचंद पानाचंद.
५	" ताराचंद हीराचंद.	१	" तापीदास प्रेमचंद.
५	" गुलाबचंद हरिभाइ.	१	" वेलाभाइ खुशाल.
४	" झवेरचंद माह्याभाइ.	१	" खुपचंद खुशालचंद.
३	" सवाइचंद तलकचंद.	१	" पानाचंद भीखाभाइ.
५	" विमलचंद तलकचंद.	१	" भगवान विमलचंद.
५	" अमाइदास गुलाबचंद.	१	" दुल्लभदास मोतीचंद.
१	" खीमचंद माणेकचंद.	१	" रायचंद मोतीचंद.
१	" वीरचंद गुलाबचंद.	२	" वहेचरदास नीहालचंद
१	" गुलाबचंद नेमचंद.	१	" कपूरचंद भानचंद.
१	" फतेहचंद हेमचंद.	१	" पीतांबर ताराचंद.
१	" मोनीचंद जीवण.	१	" नगीनलाल बधुभाइ.
१	" पानाचंद जेठा.	२	" पानाचंद लालचंद.
१	" भूखण कपूरचंद.	१	" अमरचंद मलुकचंद.
१	" गुलाबचंद केशवजी.	५७	

प्रत. नाम तथा गाम.

दीहेजबंदर.

१ शा. अमथा गुलाबचंद.
१ " मोतीचंद गुलाबचंद.
१ " देवचंद नगवानदास.
१ " वीरचंद गुलाबचंद.
१ " लखमीचंद खुशाल.

मोजे पाहाज.

१ शा. रूपचंद अमथानाइ.
१ " मूलचंद माणेकचंद.

मोजे करवाडा.

१ शा. खुबचंद रायचंद.

मोजे कोलवणा.

१ शा. मोतीचंद हीराचंद.

मोजे बुवा.

१ शा. पानाचंद झवेरनाइ.

वडनगर.

१ शेठ. बहेचरदास मूलचंद " ठाकोर. वसंतनाइ पानाचंदनी मारफत.

प्रत. नाम तथा गाम.

१ मुनिश्री. धनविजयजी.
१ मुनिश्री. दानविजयजी.
१ शा. वालचंद जोइतानाइ सवाला.
१ ठाकोर. वसंत पानाचंद.

मोजे दीव.

२ शा. पानाचंद नेमचंद.
१ " रूपचंद डुल्लनदास.
१ " गुलाबचंद झवेरनाइ.
२ " लालचंद वनमाली.

राधणपुर.

१० श्री. पांजरापोलनी जैनशाला.
१ घोघारी. शा. मगननाइ लालचंद.
१ शेठ. देवकरण संघजीनी.
१ वीरवाडीया. शेठ मूलचंद दानसिंघ.

प्रत. नाम तथा गाम.

" नवानगर(जामनगर.)
मुनिश्री. लावण्यविजय
जीनी मारफत.

१ झवेरी.रायचंद ताराचंद.
३ वोरा. अजरामर हरजी
हस्ते टोकरसी.
१ शा. वीरचंद कपूरचंद.
१ " उंधवजी वि० देवजी.
१ " देवकरण संघराज.
१ दोशी. नेमचंद वालजी.
१ मेता. हुकचंद जेठाभाइ.

पाटण.

१ शा. उत्तमचंद वीरचंद.

आमोद.

१ शा. छगनलाल रायचंद.
१ " गुलाबचंद कपूरचंद.
१ "जगजीवनकल्याणचंद.
१ " दयालचंद वधुभाइ.
१ " पानाचंद केशवजी.

प्रत. नाम तथा गाम.

१ " फूलचंद पानाचंद.
१ "भगवानदास हरिभाइ.
१ " विमलचंद खुशाल.

भोयणी.

२ गोडी.छबीलदास लाल०
१ शा. मनसुख जेठाभाइ.

वलसाड बंदर.

१ शा.खीमचंद जगजीवन.
४ " मंगाराम देवजी.
४ " पूनमचंद केसुरजी.
१ " कसनाजी भीखाजी.
१ " गोवंद खीमाजी.
१ " रुघनाथजी डुंगरजी.
१ " डाह्याभाइ टेकचंद.
१ " मेघाजी वालाजी.
१ " गोवंदजी नथुजी.
१ " नाहानचंद डुंगरजी.
१ " पना भीमाजी.
१ " रामाजी गलालजी.

प्रत.	नाम तथा गाम.
१	” गोलाजी डुलाजी.
१	” टेकचंद मनाजी.
१	” केसुर रामाजी.
१	” भाणाभाइ नथुभाइ.
१	”मूलचंदभाइभगवानजी
१	कोठारी. जीवणभाइ हीराचंद.
	बारडोली.
१	शा. देवचंद मोतीजी.
१	”अंबाइदासलखमीदास
१	” नथुभाइ हरजी.
१	” फकीरचंद नेमाजी.
१	” रणछोड हरजीभाइ.

प्रत.	नाम तथा गाम.
	दमण.
१	शा.माधाभाइअमरचंद.
१	” नथुमल मोतीचंद.
१	” रूपचंद मलुकचंद.
	अंकलेश्वर.
४	” खुबचंद नानचंद.
२	” रतनचंद हीराचंद.
३	” दयालचंद पानाचंद.
२	” लखमीचंद झवेरचंद.
	वडोदरा.
१	झवेरी.छोटेलाललालचंद
१	” नेमचंद लखमीचंद.
१६७	